रोमियों

लेखकः

पौलुस, जिसे यीशु ने सुसमाचार देने की आज्ञा दी।

समयः

58 ए.डी.

विषयः

यीशु मसीह का सुसंदेश (सुसमाचार) यह हमें 1:16-17 में मिलता है। शेष भाग में वह इसका विस्तार से वर्णन करता है। वह बताता है कि यह है क्या, विश्वास लाने वालों को क्या लाभ मिलता है। यह भी कि इस्राएल देश से इसका क्या सम्बन्ध है। कुछ मुख्य पद हैं अपराध, आज़ादी, धर्मी (दण्ड मुक्ति), धार्मिकता, कृपा और विश्वास।

1 पौलुस की तरफ़ से जो यीशु मसीह की सेवा करने वाला प्रेरित है, परमेश्वर की उस खुशी की खबर (सुसमाचार) के लिए अलग किया गया है, 2जिसका वायदा परमेश्वर ने पवित्र बाइबल में भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा पहले ही से किया था। 3यह वायदा परमेश्वर के बेटे हमारे प्रभु यीशु मसीह के विषय में किया गया था। शारीरिक रूप से देखा जाए तो यीशु दाऊद राजा के वंश में से थे। 4जहाँ तक यीशु के मरे हुओं में से जी उठने की बात है, पवित्र आत्मा की शक्ति के अनुसार यीशु मसीह के परमेश्वर के बेटे होने का ऐलान किया गया। 5उनके द्वारा हम ने बड़ी कृपा (अनुग्रह) और प्रेरिताई हासिल की है, ताकि सारी दुनिया के लोग यीशु के नाम के कारण, विश्वास के आज्ञापालन के द्वारा उसके शिष्य बनें। 6तुम भी उन्हीं में से हो, जो यीशु मसीह के हो जाने के लिए बुलाए भी गये हो।

1:1 "पौलुस"- प्रे.काम 7:38; 8:13; 8:13; 9:1-19; 13:9.

"सेवा"- इस यूनानी शब्द का अर्थ गुलाम भी हो सकता है, जो पूरी तरह से दूसरे का होता है। इस प्रकार से सभी विश्वासी मसीह के सेवक या गुलाम हैं - यीशु ने उन्हें पाप की गुलामी से खरीदकर अपनी सम्पत्ति (अपने लोग) बना लिया है (6:16,18,22; मत्ती 20:28; 1 कुरि. 6:19-20)। जैसा कि सभी विश्वासियों को करना चाहिए, पौलुस ने मसीह के साथ के इस सम्बन्ध को इच्छा से स्वीकार किया है।

"प्रेरित"- 1 कुरि. 1:1; गल. 1:1 इस शब्द का अर्थ है जो किसी दूसरे के द्वारा किसी कार्य या मिशन पर भेजा जाता है। मत्ती 10:2 देखें "अलग किया गया है" मसीह के संदेश का ऐलान करने, समझाने और रक्षा करने के लिए परमेश्वर ने पौलुस को बुलाया था। यह सुसमाचार "परमेश्वर का" - है। सच्चे परमेश्वर ने इसे उत्पन्न किया, योजना बनायी, इसके लिए राह बनायी, पूरा किया और अब दूसरों को देते हैं।

1:2 मसीह का संदेश बिल्कुल नया नहीं था। यीशु के पहले यहूदियों को दिए गए वचन में अच्छे संदेश की प्रतिज्ञाएँ, भविष्यद्वाणियाँ, प्रकार और तस्वीरें थीं। देखें लूका 24:25,27,46,47; मत्ती 5:17; इब्रा. 8:5; 10:1.

1:3 "मसीह एक व्यक्ति थे", लेकिन दो स्वभावों के साथ - परमेश्वरीय और मानवीय। वह दाऊद के वंश के होने के साथ परमेश्वर के पुत्र देहधारी परमेश्वर थे (मत्ती 1:1; 3:17; इब्रा. 2:14,17)।

1:4 मसीह के परमेश्वर होने का अन्तिम प्रमाण उनका जी उठना था। मत्ती 28:6 देखें। बड़े-बड़े दावे करने के बाद मर कर कब्र में नहीं रहे। जो कुछ कहा वह कर के दिखाया। परमेश्वर के पुत्र के और प्रमाण यूहन्ना 5:31-47 में देखें।

1:5 पौलुस यह जानता था कि उसका उद्धार एवं सेवा का अवसर परमेश्वर की ओर से वरदान थे (इफ़ि. 2:3-10; 3:7-8; 1 तीमु. 1:13-17; 2 तीमु. 1:9; तीतुस 3:3-8)। परमेश्वर ने उसे विशेषकर गैर यहूदियों के बीच कार्य करने के लिए चुना था हालाँकि यहूदियों को भी उसने संदेश दिया- प्रे.काम 13:45-47; 22:21; 26:17-18; गल. 1:16; 2:7-8.

"विश्वास के आज्ञापालन के द्वारा"- बाईबल में विश्वास उस सत्य और सिद्धान्त की ओर इशारा करता है जिसे पौलुस और प्रेरितों ने सिखाया था (देखें 1 तीमु. 4:1; यहूदा 3) विश्वास और आज्ञाकारिता के बीच पास का सम्बन्ध बाईबल में कई बार दिखता है। देखें 6:16-23; 8:14; मत्ती 7:21,24; प्रे. काम 5:32; 22:10; 2 थिस्स. 1:8; इब्रा. 5:9; 1 पतर. 1:2; 4:7; 1 यूहन्ना 2:4-6 और वहाँ दिए गए नोट्स। मुक्ति परमेश्वर की दया से और विश्वास द्वारा मिलती है। परमेश्वर के द्वारा ऐसा बदलाव हमारे जीवन में आता है, कि हम मसीह के सामने झुकते हैं और स्वामी स्वीकार करते हैं। मसीह पर भरोसा करना और अपने आपको सुपुर्द करना साथ-साथ जाते हैं।

1:6 "बुलाए भी गये"- 8:28-30 भी देखें। यह निमंत्रण से बढ़कर है। सभी विश्वासी यीशु के लिए पुरस्कार हैं और इन्हीं के हैं। यूहन्ना 6:37; 17:6. उनके विश्वास से पहले वह जानते हैं, कि विश्वास करने से पहले वे कौन हैं, कि वे विश्वास कर के यीशु को अपना मालिक और क्षमा करने वाला स्वीकार करें।

7रोम में रहने वाले उन सभी को जिनसे
परमेश्वर प्यार करते हैं और जो पवित्र
होने के लिए बुलाए गए हैं, हमारे पिता
परमेश्वर और स्वामी यीशु मसीह की तरफ़
से लगातार कृपा और शान्ति मिलती रहे।
8सारी दुनिया में तुम्हारे विश्वास की
चर्चा हो रही है। इसलिए सब से पहले
मैं तुम सभी के लिए यीशु मसीह के द्वारा
अपने परमेश्वर को धन्यवाद देता हूँ।
9परमेश्वर, जिनकी सेवा मैं अपनी आत्मा
से उनके बेटे यीशु के आनन्द के समाचार
के विषय करता हूँ, इस बात के गवाह हैं,
कि अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें याद करता
रहता हूँ। 10यह भी बिनती करता हूँ कि
मुझे परमेश्वर की इच्छा से तुम्हारे पास
आने कामयाबी मिल सके। 11मैं इस बात
की चाह रखता हूँ कि वहाँ आकर तुम्हें
कुछ आत्मिक वरदान दे सकूँ ताकि तुम
आत्मा में मज़बूत हो सको, 12वह यह कि
हम आपसी विश्वास से शान्ति पा सकें।
13मैं यह नहीं चाहता कि तुम इस सच्चाई
से अनजान रहो, कि मैंने अक्सर तुम्हारे
यहाँ आना चाहा था, लेकिन अब तक
रूकावट आती रही। मेरे आने की वजह
यह थी कि जिस तरह से मुझे गैर यहूदियों
में मेरी सेवकाई का फल मिल रहा है, उसी
तरह तुम्हारे बीच भी कुछ मिले।
14मैं यूनानी और अन्यभाषियों, ज्ञानियों

1:7 एक विशेष प्यार से सभी विश्वासियों को परमेश्वर प्यार करते हैं। यूहन्ना 13:1; 14:21,23; 1 यूहन्ना 3:1; यिर्म. 31:3.

"पवित्र होने के लिए"- इसका अर्थ है पवित्र जन। मसीह में सभी विश्वासी पवित्र हैं। यूहन्ना 17:17-19 देखें। बाईबल के अनुसार "सन्त" - कुछ विशेष लोग नहीं हैं जो बहुत अधिक समर्पित या सफ़ल हैं, किन्तु सभी। क्योंकि वे पवित्र हैं, उन्हें पवित्र जीवन बिताना चाहिए।

"कृपा" और "शान्ति"- ये दोनों मसीह के संदेश के विशेष शब्द हैं। पवित्रता, उपयोगिता और भले जीवन के लिए जो कुछ आवश्यक है वह दया से मिलता है। यूहन्ना 1:14 के नोट्स देखें। हम परमेश्वर की दया के योग्य कभी नहीं है। यह वह दया है जिसे कमाया नहीं जा सकता, हम इसके योग्य भी नहीं है। यहाँ शान्ति का अर्थ है मन का विश्राम, जो मसीह देते हैं (मत्ती 11:28-30; यूहन्ना 14:27; 16:33)। यह परमेश्वर दया और शान्ति देने वाले हैं, मसीह भी वह देते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि दोनों के स्वभाव एक हैं। फ़िलि. 2:6.

1:8-9 विश्वासियों के लिए प्रायः पौलुस परमेश्वर को धन्यवाद दिया करता था - 1 कुरि. 1:4; फ़िलि. 1:3; कुल. 1:3; 1 थिस्स. 2:13; 2 तीमु. 1:3. हर एक स्थान पर रहने वाले विश्वासियों के लिए वह आभारी था - इफ़ि. 1:16; 3:16; फ़िलि. 1:4,9; कुल. 1:3,9; 2:1; 1 थिस्स. 1:2; 3:10; 5:23; 2 तीमु. 1:3. वह सभी कलीसियाओं का बोझ महसूस करता था (2 कुरि. 11:28-29)। वह प्रार्थना के महत्व और उसकी सामर्थ को भी जानता था (तुलना करें लूका 18:1; याकूब 5:16)।

1:9 "अपनी आत्मा से"- यूहन्ना 4:24 से तुलना करें। अपने मन और शरीर से भी।

1:10 "तुम्हारे पास आने"- 15:23-24; प्रे.काम 19:21.

1:11 "आत्मिक वरदान"- 12:6-8; 1 कुरि. 12:4-11.

1:12 वह एक महान् प्रेरित था, किन्तु उसने घमण्ड से यह कल्पना नहीं की, कि दूसरे विश्वासी उसकी आत्मिक उन्नति में सहायक नहीं हो सकते।

1:13 "गैर यहूदियों"- यहूदियों को छोड़कर अन्य लोग।

"फल"- मत्ती 9:37-38; यूहन्ना 4:35-38. दूसरे अन्य स्थानों पर पौलुस के कार्य के अच्छे परिणामों के लिए देखें प्रे.काम 13:43; 14:21-23; 16:40; 17:4,12,34; 18:8; 19:17-20.

1:14 वह हर प्रकार के लोगों के प्रति अपने आपको कर्ज़दार समझता था - वह जानता था कि दूसरों को खुशी की खबर सुनाने के सम्बन्ध में वह उनका कर्ज़दार था। देखें प्रे.काम 20:26-27; वह जिम्मेदारी मसीह ने उसको दी थी। (प्रे.काम 26:16-18; 1 कुरि. 9:16-17) सब विश्वासियों को और सम्पूर्ण कलीसिया को यह कार्य दिया गया है। मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15.

और अज्ञानियों का कर्ज़दार हूँ। 15तुम जो
रोम में हो, मैं तुम्हें आनन्द के समाचार
को देने के लिए बेसब्री से इन्तज़ार कर
रहा हूँ। 16क्योंकि मैं मसीह के सुसंदेश से
शर्माता नहीं हूँ, इसलिए कि आनन्द का
समाचार हर एक की मुक्ति के लिए जो
विश्वास करता है, परमेश्वर की ताकत है,
चाहे वह यहूदी हो या गैरयहूदी। 17क्योंकि
इस में परमेश्वर की धार्मिकता (खराई)
विश्वास से विश्वास तक प्रगट होता है।
जैसा कि लिखा है, "मुक्त हुआ (धर्मी)
इन्सान विश्वास से जीवित रहेगा।"

18स्वर्ग से परमेश्वर का दण्ड उन लोगों
की सारी दुष्टता और अन्याय पर प्रगट होता

"यूनानी और अन्यभाषियों"- यूनानी लोग अपने आप को और अपनी संस्कृति को सब से अच्छा समझा करते थे। यूनानी भाषा न बोलने वालों को वे बारबेरियन कहते थे। इसलिए यहाँ अन्य भाषियों का अर्थ यूनानी भाषा में वे लोग हैं जो यूनानी भाषा नहीं बोलते थे।

1:15 वह दूसरों के लिए अपनी ज़िम्मेदारी को गंभीरता से लेने के साथ, पूरा करने में सरगर्म था। दुख, समस्या और मृत्यु की धमकी उसे रोक न सकी। (प्रे.काम 20:24; 21:13)

1:16 सुसमाचार की घोषणा देने की लालसा का कारण यहाँ हमें दिखता है। वह इसे कमज़ोर और बेकार की बात नहीं समझता था। वह जानता था कि यह मुक्ति का ऐसा मार्ग है जो लोगों को माफ़ कर के, बदलकर स्वर्ग ला सकता था। किसी और पत्र से अधिक इस पत्र में वह मुक्ति का मार्ग दिखाता है। इस में सिद्ध ठहराया जाना (3:24), परमेश्वर के साथ मेल (5:1), एक नया आत्मिक जीवन (6-8), महिमा पाना (अन्त में मसीह के समान बनाया जाना - 8:29-30)। इन सब बातों के लिए मसीह का सुसमाचार काफ़ी है (प्रे.काम 4:12 देखें) यहाँ भी पौलुस दूसरे स्थानों की तरह ज़ोर डालता है (जैसा दूसरे प्रेरित और मसीह सदा करते थे), विश्वास से उद्धार है - 3:22,25,28; 4:5; 5:1; 10:9-10; गल. 2:16; इफ़ि. 2:8-9; यूहन्ना 1:12; 3:16,36 आदि।

"यहूदी हो या गैरयहूदी"- मत्ती 10:5-6; 15:24; लूका 24:47; प्रे.काम 1:8; 3:26; 13:46.

1:17 "धार्मिकता"- शब्द रोमियों में 39 बार उपयोग किया गया है। यहाँ पौलुस सिखाता है कि लोग याहवे की आँखों में किस प्रकार निर्दोष ठहराए जा सकते हैं। वह किस प्रकार से उन्हें शुद्ध ठहराते हैं और अपने साथ सही रिश्ता कायम करते हैं। यह मात्र विश्वास से होती है। 3:28; 4:3-5 आदि।

उद्धार विश्वास से है, इसका अर्थ यह नहीं, कि मन परिवर्तन की जरूरत नहीं है। मसीह पर सच्चे विश्वास की यह एक मात्र आवश्यकता नहीं है। मसीह पर सच्चे विश्वास का यह एक भाग है (2:4-5; मत्ती 3:2; मरकुस 1:15; लूका 13:3-5; प्रे.काम 17:30) बिना मन बदलाव के सच्चा विश्वास संभव नहीं है। परमेश्वर का भला होना मनुष्य को मन परिवर्तन और विश्वास के लिए प्रोत्साहित करता है। मन बदलाव विश्वास से पहले होता है, लेकिन ये इतना एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, कि इसे विश्वास का पहला कदम कहा जा सकता है। यह विश्वास की आज्ञाकारिता का एक भाग है (1:5)। बिना पश्चात्ताप क्या विश्वास को विश्वास कहा जा सकता है?

"प्रगट होता है"- इस धार्मिकता के विषय में, बिना परमेश्वर द्वारा दिए गए ज्ञान, मनुष्य इस सच्चाई को नहीं जान सकता।

"जैसे लिखा है"- पौलुस दिखा रहा है कि धार्मिकता और विश्वास के बारे में उसकी शिक्षा बाईबल की शिक्षा के अनुसार है। वह हबक्कूक 2:4 की ओर संकेत करता है। वह नए नियम में - गल. 3:11 और इब्रा. 10:38 में तीन बार आया है।

1:18 "स्वर्ग से"- मनुष्य ने इस शिक्षा का आरम्भ नहीं किया था। प्रेम के समान ही यह शिक्षा भी थी (5:8)। परमेश्वर को प्रेम के कारण क्रोध आता है। वह मनुष्यों से प्रेम करते हैं। इसलिए क्योंकि बुराई के कारण लोगों की हानि होती है, उन्हें गुस्सा आता है। वह खरे चालचलन से प्रेम करते हैं इसलिए जो कुछ खरे चालचलन का विरोध करता है उस पर उन्हें क्रोध आता है।

"दण्ड"- यहाँ परमेश्वर का एक और प्रकाशन है। परमेश्वर के क्रोध के बारे में गिनती 25:3; व्यव. 4:25; भजन 90:7-11; मत्ती 3:7; यूहन्ना 3:36 और इफ़ि. 5:6 में देखिए।

है, जो अपने अन्याय और दुष्टता से सच्चाई
को दबा देते हैं। 19परमेश्वर के बारे में जो
कुछ जाना जा सकता है वह उन के बीच
में साफ़-साफ़ दिखता है, क्योंकि परमेश्वर
ने उन्हें यह बातें दिखायी हैं। 20क्योंकि इस
सृष्टि की शुरूआत से उनके अनदेखे गुण
साफ़-साफ़ दिखते हैं: उनकी सदा काल
की शक्ति और उनका परमेश्वरीय स्वभाव
प्रकृति में देखा जा सकता है। इसलिए लोग
किसी तरह का बहाना बना नहीं सकते।
21क्योंकि पिता परमेश्वर को जानने के
बावजूद, उन्हों ने सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर जानकर
उनको आदर-सम्मान या धन्यवाद नहीं
दिया। इसके विपरीत वे बेकार की बातें
सोचने लगे और उनका मूर्खतापूर्ण मन
अन्धेरे से भर गया। 22हालाँकि उन्हों ने
बुद्धिमान होने का दावा तो किया, किन्तु
वे बेवकूफ़ बन गए। 23उन्हों ने परमेश्वर
को नाशमान मनुष्य, चिड़ियों, चौपायों
और रेंगने वाले पशुओं की समानता में

"दबा देते"- "रोके रहते", "बाधा डालते" - क्योंकि लोग परमेश्वर को नहीं जानते हैं, बुरे लोग यही करते हैं। वे परमेश्वर के या अपने विषय में किसी भी सच्चाई को दबाना चाहते हैं जो उन्हें परमेश्वर या पश्चात्ताप की ओर ले जाती है। वे अपने परमेश्वर और उसके सत्य के बारे में गलत धारणा रखते हैं और ज्योति के बजाए अँधेरे को चाहते हैं। यह उनकी बड़ी बुराई और बड़ा अन्धकार है (यूहन्ना 3:18-21; 2 थिस्स. 2:10-12 से तुलना करें)। इस पद से 3:20 तक पौलुस एक मुख्य विषय पर ज़ोर डालता है। वह है सभी लोगों की बुरी अवस्था और मसीह के संदेश की बड़ी ज़रूरत। सभी अधर्मी हैं। उनके गुनाह के सम्बन्ध में जो सच्चाई है उसे सभी ने दबाने का प्रयत्न किया है। सभी लोगों को परमेश्वर की सज़ा का साम्हना करना है -3:9,19,23. इफ़ि. 2:3 से तुलना करें।

1:19-20 लोग केवल अनजाने में बुरा नहीं करते हैं। यह प्रगट है, कि एक अद्‌भुत सृजनहार ने सृष्टि को बनाया है। तुलना करें भजन 19:1-4; यशा. 40:21-26; प्रे.काम 14:15-17. किन्तु लोग इस सच्चाई के बारे में अपनी आँखें बन्द कर लेते हैं। (इन्कार भी करते हैं - भजन 14:1), जानबूझकर गुनाह करते हैं। इसलिए उनका यह बहाना नहीं चलेगा। यदि परमेश्वर ने कोई ज्ञान न दिया होता, बाईबल न होती, मसीह न आए होते, तब भी अपनी बुराई के सम्बन्ध में उन्हें अबोध गिना नहीं जा सकता था। सृष्टि के द्वारा ही परमेश्वर की सच्चाई, उनकी सामर्थ स्पष्ट दिखाई देती है। लोगों को परमेश्वर का विचार करना चाहिए, उनकी उपासना करनी चाहिए। (प्रे.काम 17:26-27)। क्योंकि वे ऐसा नहीं करना चाहते, इसलिए नहीं करते। उन्हें अपने बुरे जीवन से लगाव है, इसलिए उस परमेश्वर के बारे में सोचना नहीं चाहते जो उन्हें अच्छा, ऊँचा और पवित्र मार्ग दिखाना चाहते हैं।

1:21-23 यहाँ पौलुस मानवजाति के इतिहास और चीजों की आराधना की शुरूआत के विषय बताता है। आरम्भ में लोग संसार के एक सच्चे सृष्टिकर्ता को जानते थे। किन्तु वे इस बड़ी आशीष के लिए धन्यवादी नहीं थे (पद 28)। उन्हों ने अपने बनाए जाने के उद्देश्य को जो कि परमेश्वर को आदर सम्मान देना था, पूरा नहीं किया (यशा. 43:7; 1 कुरि. 10:31; प्रका. 4:11)। धन्यवाद के सम्बन्ध में लैव्य. 7:12-13; भजन 7:17; 50:14-15; 56:12; 1 थिस्स. 5:18 आदि।

परमेश्वर के ज्ञान के सम्बन्ध में धन्यवादी होने के बजाए, वे कल्पना कर के नए मत और धर्मों को बनाने लगे। इन सभी बातों से उनका मन अन्धेरे (इफ़ि. 4:18), गर्व और मूर्तिपूजा से भर गया। पद 23 और 25 दिखाते हैं कि मूर्तिपूजा क्या है। निर्ग. 20:4-6; भजन 115:2-8; यशा. 40:18-26; 44:12-20. परमेश्वर के राष्ट्र (जो सभी राष्ट्रों से महान था) इस्राएल के पास परमेश्वर का स्पष्ट ज्ञान था। इस्राएल भी दूसरे देशों के समान दोषी था - देखें यिर्म. 2:11-12.

1:22 परमेश्वर की निगाह में मनुष्य का ज्ञान खाली और बेकार है। देखें 1 कुरि. 1:18-25; 2:7-8. जिस ज्ञान मार्ग की बात लोग करते हैं जो मुक्ति दिलाता है, सृष्टिकर्ता की दृष्टि में बेवकूफ़ी है।

1:23 यिर्म. 2:11-13; होशे 4:7-8 से तुलना करें।

बदल दिया।

24इसलिए परमेश्वर ने उनको मन की
अभिलाषाओं के कारण होने वाली अशुद्धता
के सुपुर्द कर दिया, ताकि वे आपस में एक
दूसरे की देह का अपमान करें। 25उन्हों ने
परमेश्वर की सच्चाई के स्थान पर झूठ को
चुना और परमेश्वर को जो सदा सम्मानीय
हैं छोड़कर, सृष्टि की उपासना की।

26इसलिए परमेश्वर ने उन्हें शर्मनाक
इच्छाओं के हवाले कर दिया, क्योंकि
स्त्रियाँ पुरुषों के साथ शारीरिक सम्बंध
को छोड़कर स्त्रियों के साथ शारीरिक
सम्बंध रखने लगीं। 27इसी प्रकार से पुरुषों
ने स्त्रियों के साथ स्वभाविक व्यवहार
को छोड़कर पुरुषों के साथ यौन सम्बन्ध
की कामना की। पुरुषों ने पुरुषों के साथ
अभद्र व्यवहार किया और उस दण्ड से
दुःख पाया जो उन्हें मिलना चाहिए था।

28क्योंकि जब उन्हों ने अपने जीवन
में परमेश्वर को स्थान न देना चाहा,
परमेश्वर ने भी उन्हें अनुचित काम करने
के लिए, उनके गन्दे मन के हवाले कर
दिया। 29वे सब प्रकार की दुष्टता, लालच
और कड़वाहट से भरपूर हो गए। वे ईर्ष्या,
हत्या, झगड़े, धोखे और दुश्मनी से भी भर
गए। 30वे बुरा कहने वाले, चुगलखोर,

1:24 पद 26,28 पद परमेश्वर के पास गुनाहगारों को दण्ड देने का एक तरीका था, उन्हें छोड़ देना उस इन्साफ़ के लिए जो गुनाह के कारण उन पर आने वाला था। जो दुष्टता लोग ढिठाई के कारण करते हैं, उसमें उन्हें छोड़ देना सब से बड़ा और इन्साफ़ का दण्ड है तुलना करें व्यव. 32:19-22; न्यायियों 2:10-15.

1:25 उनके बुराई में बने रहने के खिलाफ़ में सच्चे परमेश्वर का ज्ञान एक रूकावट बन सकती थी। इसलिए उन्हों ने इसका इन्कार किया और झूठे विचारों एवं गलत शिक्षा को अपने मार्गदर्शन के लिए अपना लिया। कुछ सब से बुरे विचार यह थे कि परमेश्वर अपनी सृष्टि के ही समान हैं। यह कि मनुष्यों द्वारा बनायी मूर्तियों के समान हैं। यह झूठ कि सूर्य, चन्द्रमा, तारे, पशु या देवी देवताओं की मूर्तियों की उपासना परमेश्वर की उपासना है। सच्चे परमेश्वर ऐसी आराधना कभी स्वीकार नहीं करते - निर्ग. 20:3-6; 1 राजा 18:21; 2 राजा 17:14-18; भजन 78:56-59; नीति. 1:29-31; यिर्म. 2:11-13; मत्ती 4:10; प्रका. 9:20-21; 21:8.

1:26-27 समलिंगी सम्बन्ध को परमेश्वर अपने वचन में अनुचित ठहराते हैं। देखें उत्पत्ति 19:4-5; लैव्य. 18:22; 20:13; 1 कुरि. 6:9; 1 तीमु. 1:10; यहूदा 7. यह मनुष्य के शरीर या बुरे स्वभाव का परिणाम है, जिससे लोगों को आज़ादी की आवश्यकता है। (रोमियों के 6 एवं 8 अध्याय का अध्ययन करें)। पौलुस कहता है कि मनुष्य की अभिलाषा में उसे छोड़ देने के रूप में दिए गए दण्ड के कारण ऐसा हुआ था। पुरुष का पुरुष के साथ यौन सम्बन्ध की इच्छा, गंदी और अस्वभाविक है और स्त्री का स्त्री के साथ यौन सम्बन्ध भी। आजकल कुछ लोग इसे जीने का मान्य तरीका मान रहे हैं। बाईबल के अनुसार यह दुष्टता है और इसके फलस्वरूप दण्ड आता है (प्रका. 21:8) - यदि इन्सान अपनी गलती या बुराई को मानकर पूरे मन से पुराने जीवन को छोड़ना चाहे और विश्वास करे, परमेश्वर उसे प्रेम और दया से स्वीकार करेंगे, जैसे वह हर व्यक्ति के साथ करते हैं।

1:28 इन भयानक एवं सच्चे शब्दों पर ध्यान दें। मनुष्यों को दिया हुआ सब से बड़ा धन परमेश्वर का ज्ञान है। यह सारे संसार के ज्ञान की तुलना में बड़ा और अधिक है (भजन 19:10; 119:72; नीति. 2:1-5; यिर्म. 9:23-24 से तुलना करें। मानव जाति ने इस दौलत की कीमत नहीं जानी। उन्हों ने इसका दण्ड भी प्राप्त किया। परमेश्वर ने उन्हें उसे गंदगी और दुष्टता के आधीन जाने दिया, जिन्होंने उसे चुना और प्यार किया।

1:29-32 पौलुस मनुष्य जाति की वर्तमान अवस्था का वर्णन करता है। यह बढ़ा-चढ़ा कर की गयी बात नहीं है। हालांकि प्रत्येक व्यक्ति इस सूची में दिए गए हर पाप का दोषी नहीं है, किन्तु प्रत्येक पाप के बीज हम सब में हैं। इन शब्दों के अनुसार ही लोगों का जीवन है। देखें 3:9-19; उत्पत्ति 8:21; भजन 51:5; यिर्म. 17:9; मत्ती 7:11; 15:19-20; इफ़ि. 2:1-3; 4:17-19.

परमेश्वर से नफ़रत करने वाले, घमण्डी, डींगमार, बुरी-बुरी बातों को बनाने वाले और माता-पिता की आज्ञा न मानने वाले हैं। 31बिना समझ के, शपथ तोड़ने वाले, स्वाभाविक प्रेम रहित, क्षमा रहित और निर्दयी भी हैं। 32यह जानने के बावजूद कि परमेश्वर न्यायी हैं और ऐसे काम करने वाले मौत के दण्ड के लायक हैं, वे न ही ये सब करते हैं, लेकिन ऐसा करने वालों से खुश भी होते हैं।

2 इसलिए हे लोगो, तुम जो दूसरों पर टीका-टिप्पणी करते हो, तुम कोई बहाना नहीं बना सकते। क्योंकि जिस मुद्दे पर तुम लोगों की बुराई करते हो, तुम खुद वही करते हो। 2लेकिन हम यह जानते हैं जो लोग ऐसा करते हैं, उनके ख़िलाफ़ में परमेश्वर का इन्साफ़ सच्चाई के अनुसार है। 3हे मनुष्यो, तुम उन सभी की बुराई करते हो, जो ऐसे काम करते हैं, लेकिन वही काम खुद करते हो तो क्या सोचते हो कि परमेश्वर की सज़ा से बच जाओगे? 4क्या तुम उनकी कृपा, सहनशीलता और धीरज के धन को बेकार समझते हो और यह नहीं जानते कि परमेश्वर का भला होना तुम्हें मन बदलाव सिखाता है।

5परन्तु अपने कठोर और ज़िद्दी मन के कारण तुम परमेश्वरीय क्रोध के उण्डेले जाने वाले दिन और सच्चे इन्साफ़ वाले दिन के प्रगट होने के लिए सज़ा को इकट्ठा

1:30 "परमेश्वर से नफ़रत करने वाले"- यह सही बात है। देखें 8:7; यूहन्ना 7:7; 15:18,24.

1:32 लोगों की दुष्टता का यह सब से बड़ा प्रमाण है। हालांकि जब उन्हें बुरे भले का ज्ञान है और यह जानते हैं कि पाप की उचित सज़ा मौत है। (5:12; उत्पत्ति 2:17; निर्ग. 21:36; इब्रा. 2:15) इसके बावजूद वे गुनाहों से बच नहीं सकते। वे न ही अपनी दुष्टता में बने रहे, किन्तु दूसरों की दुष्टता में आनन्द भी उठाते रहे। जो ऐसा करते हैं, स्वभाव में उन से हम क्या बेहतर हैं? नहीं, देखें 3:9; इफ़ि. 2:3. क्या सुसमाचार ऐसे लोगों के लिए कुछ कर सकता है? जी हाँ, अद्‌भुत बातें। देखें पद 16.

2:1 दूसरे लोगों को मापना यह दिखाता है कि उन्हें गलत और सही का ज्ञान है। यह कौन नहीं करता है? किन्तु दूसरों में यदि कुछ बुरा है, तो हमारे में भी है। दूसरों पर दोष लगाने से हम स्वयं पर भी दोष लगाते हैं।

2:2 यहाँ से 16 पद तक पौलुस परमेश्वर के दण्ड के सात सिद्धान्त दिखाता है - यह वास्तविक स्थिति पर निर्भर हैं, न कि इस पर कि लोग क्या सोचते हैं (पद 2)।

यह सही न्याय होगा - पूर्णतया ईमानदारी का न्याय (पद 5)। यह इस आधार पर होगा कि लोगों ने क्या किया है (पद 6)।

यह बिना पक्षपात के होगा - चाहे कोई यहूदी हो या गैरयहूदी, काला या गोरा, धनी या निर्धन (पद 11)।

पौलुस द्वारा दिए गए वचन के अनुसार होगा (पद 16)।

यह मनुष्यों के गुप्त गुनाहों का भी होगा (पद 16)।

यह मसीह यीशु के द्वारा होगा (पद 16)।

2:3 दूसरों की माप तौल करने वाले लोग सोच सकते हैं कि वे जिनमें गलती ढूँढते हैं, उन से अच्छे हैं। वे दूसरों को परखने के योग्य हैं। यह विचार झूठा और खतरनाक है। संसार के न्यायी के सामने सभी लोगों को खड़ा होना है- प्रे.काम 17:31; 2 कुरि.5:10; प्रका. 20:11-12.

2:4 सृष्टि के स्वामी की दया के प्रति लोग कड़ा रूख क्यों अपनाते हैं। अनाज्ञाकारिता और गुनाह में बने रहने और उनके संदेश एवं पुत्र को अनदेखा करने में। मत्ती 22:1-6; लूका 14:16-24; इब्रा. 2:3 से तुलना करें। परमेश्वर की दया का उद्देश्य देखें। निर्ग. 34:6-7 में परमेश्वर के चरित्र पर नोट्स देखें।

"मन बदलाव"- मत्ती 3:2,8; लूका 13:1-5.

2:5 "क्रोध"- 1:18 सुसमाचार का इन्कार करने वाले, क्या करते हैं, यह देखिए। प्रत्येक बुराई जो वे करते हैं, वह उनके विरोध में स्वर्गिक पिता का क्रोध उत्पन्न करती है। स्वर्गिक पिता के ठहराए हुए दिन में वह क्रोध उन पर उण्डेला जाएगा।

कर रहे हो। 6परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति को उसके कामों के आधार पर बदला देंगे। 7जो लोग धीरज से भलाई करते हुए सम्मान, महिमा और अमरता की कामना करते हैं, उन्हें परमेश्वर सदा की जिंदगी देंगे। 8जो लोग स्वार्थ के खोजी हैं, और सच्चाई को नहीं अपनाते, लेकिन बुरा जीवन जीने के आदी हैं, परमेश्वर से सजा़ पाएँगे। 9प्रत्येक के ऊपर जो दुष्टता करता है, क्लेश और संकट आ पड़ेगा-पहले यहूदी व्यक्ति पर, फिर गैरयहूदी व्यक्ति पर। 10किन्तु प्रशंसा, आदर और शान्ति हर उस व्यक्ति के लिए है जो भला करता हैः पहले यहूदी और बाद में गैरयहूदी को। 11क्योंकि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं लेते हैं।

12वे सब जो नियमशास्त्र की समझ के बगैर चूक गए हैं, उनका न्याय बिना नियमशास्त्र (व्यवस्था) के होगा। लेकिन जिन्होंने नियम शास्त्र पाने के बाद उसे तोड़ा है, उनका न्याय उसी को सामने रखकर किया जाएगा। 13इसलिए कि नियमशास्त्र सुनने वाले धर्मी (सिद्ध) नहीं ठहराए जाएँगे, लेकिन वे जो नियमों के अनुसार जीवन जीते हैं, सिद्ध ठहराए जाएँगे। 14क्योंकि जब कभी गैरयहूदी जिनके पास नियमशास्त्र नहीं है, किन्तु स्वभाव से ही

2:6 भजन 62:12; नीति. 24:12; गल. 6:7-8; प्रका. 22:12 ।

2:7 पौलुस कार्य पर आधारित मुक्ति नहीं सिखा रहा है। वह कभी ऐसा नहीं करता है। देखें 3:28; 4:5; 2:16; इफ़ि. 2:8-9; तीतुस 3:5. वह यहाँ मुक्ति के मार्ग को सामने नहीं रख रहा है, किन्तु परमेश्वर के न्याय के एक सिद्धान्त को। लोगों ने क्या किया और क्या नहीं किया है, उस आधार पर परमेश्वर पिता न्याय करेंगे। मत्ती 25:31-46 (पद 35,36 के नोट्स)। जिन लोगों को परमेश्वर अनुग्रह से बचाते हैं अपनी सामर्थ से बदलते हैं, वे परमेश्वर पिता की नयी सृष्टि, परमेश्वर पिता के बेटे-बेटी बन जाते हैं, (2 कुरि. 5:17; यूहन्ना 3:3-8)। क्योंकि ऐसा है, वे भला करते हैं और परमेश्वर पिता द्वारा मिलने वाली महिमा, आदर और अमरता की चाहत रखते हैं।

परमेश्वर ऐसे लोगों को अपने और अनन्त जीवन के पूरे अनुभव में लाएँगे - एक ऐसा जीवन जो उनके भरोसा रखने से आरम्भ हुआ था। (यूहन्ना 3:36; 5:24)। यह परमेश्वर को चाहने और भला कार्य करने पर निर्भर नहीं था। यह उस काम का नतीजा है। जो स्वर्गिक पिता ने उन में किया है। जो लोग कहते हैं कि मसीह पर विश्वास करते हैं किन्तु जो इस पद में लिखा है, नहीं करते है, वे अपने आप को धोखा देते हैं। उन्हों ने उद्धार का अनुभव नहीं किया है। मत्ती 5:1; 7:24-27; याकूब 2:14-19,26 देखें।

2:8 "स्वार्थ के खोजी"- केवल दो तरह के लोग पाए जाते हैं। एक वे, जो सत्य को अपनाते हैं और केवल सच्चे परमेश्वर पिता को अपनाते है (मत्ती 6:33)। दूसरी ओर वे जो सत्य का इन्कार करते हैं और स्वार्थी हैं-परिवार, नाम, धन अधिकार, आदि को चाहते हैं। दूसरे प्रकार के लोग परमेश्वर पिता के क्रोध का सामना करेंगे - पद 18; यूहन्ना 3:36; इफ़ि. 5:6; 2 थिस्स. 1:5-10.

2:9-10 यह बात पहले यहूदियों के विषय में सत्य है, क्योंकि सब से पहले यह समाचार उन्हीं को मिला था - 1:16.

2:11परमेश्वर किसी व्यक्ति को यों ही इसलिए नहीं छोड़ देंगे क्योंकि वह यहूदी या मसीही होने का दावा करता है और अपने को परमेश्वर का कहता है। ऐसे व्यक्ति को सत्य जानने के लिए अधिक अवसर है। इसलिए यदि वह आज्ञा नहीं मानता तो अधिक दण्ड के योग्य होगा।

2:12 "नियमशास्त्र"- वह वचन है जो मूसा के द्वारा परमेश्वर ने दिया था। निर्ग. 20 देखें। यदि उन पुस्तकों में परमेश्वर का ज्ञान नहीं था, तो उन्हें दण्ड क्यों मिलेगा। इसलिए कि वे ऐसे गुनाहगार थे, जिन्होंने प्रकृति में परमेश्वर के ज्ञान को देखा किन्तु उस से इन्कार किया 1:18-20,28.

2:13 परमेश्वर पिता के वचन को सुनना काफ़ी नहीं था - कर्मों से धर्मी ठहराए जाने के लिए उन्हें उनके अनुसार जीना था। यीशु को छोड़कर और कोई ऐसा करने में समर्थ नहीं था -3:9,19,23; याकूब 2:10; निर्ग. 19:21-25.

2:14-15 जिन्होंने मूसा द्वारा दिए गए वचन को नहीं सुना था, वे भी उचित अनुचित में भेद करना जानते थे। यह कुछ ऐसा है जिसे प्रत्येक व्यक्ति के भीतर परमेश्वर ने रखा है। विवेक - प्रे.काम 23:1 पर टिप्पणी।

नियमशास्त्र के अनुसार चलते हैं, तो वे अपने मन में ही नियमों का पालन करते हैं, हालांकि उनके हाथों में नियमशास्त्र नहीं है। 15नियमशास्त्र की बातों को वे अपने दिल में दिखाते हैं और उनके विवेक इस बात की गवाही देते हैं। और कभी-कभी उनके विचार दोष लगाते या उन्हें निर्दोष ठहराते हैं। 16यह सब उस दिन होने वाला है जब परमेश्वर मेरे संदेश के आधार पर लोगों की गुप्त बातों का न्याय, यीशु मसीह के द्वारा करेंगे।

17तुम यदि अपने आप को यहूदी कहते हो, तुम नियमशास्त्र पर भरोसा करते हो और परमेश्वर के साथ सम्बंध के बारे में घमण्ड करते हो। 18और तुम उनकी इच्छा जानते हो और उत्तम बातों को सही ठहराते हो, क्योंकि तुम्हें वे बातें नियमशास्त्र से सिखायी गयी हैं। 19तुम्हें यह भरोसा है कि तुम खुद अन्धों को रास्ता दिखाने वाले और जो अन्धेरे में हैं उनके लिए रोशनी हो। 20तुम मूर्खों को सिखाने वाले, छोटे बच्चों को शिक्षा देने वाले हो, क्योंकि तुम्हारे पास नियमशास्त्र में ज्ञान और सत्य के ज़रूरी तत्व हैं। 21इसलिए तुम, जो दूसरों को सिखाते हो, क्या अपने आप को नहीं सिखाते? तुम सिखाते तो हो कि चोरी नहीं करनी चाहिए, लेकिन खुद चोरी करते हो? 22तुम कहते हो, कि व्यभिचार नहीं करना चाहिए लेकिन खुद ही ऐसा करते हो? तुम जो मूर्तियों से नफ़रत करते हो, क्या खुद मन्दिर को नहीं लूटते हो? 23तुम तो नियमशास्त्र पर घमण्ड तो करते हो, लेकिन नियमशास्त्र का पालन नहीं करने के द्वारा क्या परमेश्वर की बेईज़्ज़ती नहीं करते हो? 24जैसा कि लिखा है, कि "गैरयहूदियों के बीच परमेश्वर के नाम की बदनामी तुम्हारी वजह से होती है"।

25यदि तुम नियमशास्त्र का पालन कर पाते हो, तो खतने से कुछ फ़ायदा है। लेकिन अगर तुम नियमशास्त्र के तोड़ने वाले हो तो खतना वाले होने के बावजूद भी बेखतना वाले हो जाते हो। 26इसीलिए अगर कोई खतना न कराने वाला नियमशास्त्र की धार्मिकता को मानता है, तो उसका खतना-रहित होने के बावजूद वह खतने वाला क्यों न कहलाएगा? 27अगर एक

2:16 प्रे.काम 17:31.

2:17 धार्मिक और स्वधर्मी यहूदी ऐसे लोगों के नमूने थे, जो दूसरों को मापते रहते थे - पद 1; लूका 18:9-12. वे सोचते थे कि मूसा द्वारा दिए गए निर्देशों, नियमों का पालन करने से पाप क्षमा मिल सकती है (यूहन्ना 5:39,45), सोचकर घमण्ड करते थे कि वे परमेश्वर के लोग हैं - यूहन्ना 8:41.

2:18-23 इसलिए कि उनके पास मूसा द्वारा दिया गया वचन था, वे सोचते थे कि वे ही दूसरों को सिखा सकते थे। जो कुछ सिखाते थे, वे खुद नहीं करते थे। ऐसा आज बहुत से मसीह के मानने वालों के बारे में कहा जाता सकता है, जो वे दूसरों को सिखाते है, स्वयं नहीं करते। उस समय मूसा की पुस्तक के अनुसार नहीं करने से परमेश्वर का अपमान होता था। भजन 51:4 से तुलना करें।

2:24 पुरानी वाचा जो यहूदियों की असफ़लता को दिखाती है उसकी ओर इशारा करते हुए, पौलुस अपने दोष की पुष्टि करता है जो यहूदियों की असफ़लता दिखाती है - यशा. 52:5; यहेज. 36:22. बजाए इसके कि परमेश्वर के लोग होने का दावा करें, और बुरे जीवन के कारण उनका अनादर हो, अच्छा है कि वैसा दावा ही न करें।

2:25-29 खतना यहूदियों के साथ परमेश्वर के सम्बन्ध और वाचा का चिन्ह था। उत्पत्ति 17:9-14 में नोट्स देखें। बहुत से यहूदी यह सोचते थे कि इस शारीरिक चिन्ह की वजह से, वे याहवे के लोग हैं चाहे वे याहवे की बात न भी मानें। पौलुस कह रहा है कि यहूदी धार्मिक नैतिक नियमों का पालन और मनुष्य की भीतरी अवस्था शरीर के किसी भी निशान से अधिक महत्वपूर्ण है। मत्ती 3:9; 23:25-28; यूहन्ना 8:33-41. खतना के विषय पौलुस के शब्द बप्तिस्मा या ऐसी कोई भी विधि जो दूसरों पर की जाती है, को भी समान रूप से लागू किया जा सकता है।

आदमी का शारीरिक खतना नहीं हुआ है,
और वह नियमशास्त्र के अनुसार जीवन
बिताता है तो तुम ही बताओ, तुम ने
लिखित नियमशास्त्र को पाया और खतना
भी कराया है लेकिन तुम नियमशास्त्र का
पालन नहीं करते हो। ऐसे में क्या वह तुम्हें
आरोपी नहीं ठहराएगा?

28वह व्यक्ति यहूदी नहीं जो सिर्फ़ यहूदी
माँ बाप से पैदा हुआ है, न ही वह खतना
कुछ मायने रखता है जो सिर्फ़ दिखाने के
लिये होता है। 29जो भीतर से यहूदी है वह
सच्चा यहूदी है और मन का खतना वही है
जो परमेश्वर के आत्मा से है, न कि लिखे
हुए नियमों के पालन से। ऐसे आदमी की
तारीफ़ लोगों से नहीं लेकिन परमेश्वर की
तरफ़ से होती है।

3 एक यहूदी होने से क्या लाभ या खतना
कराने से क्या फ़ायदा है? 2इसके बहुत
फ़ायदे हैं, क्योंकि परमेश्वर के वचन उन्हें
सौंपे गए थे।

3अगर कुछ लोगों ने विश्वास नहीं किया
तो क्या हुआ? क्या उनका अविश्वास
परमेश्वर की सच्चाई को असरहीन बना
सकता है? 4बिल्कुल नहीं। परमेश्वर सच
ठहरे और हर एक व्यक्ति झूठा। जैसा कि
लिखा है, "तुम अपनी कही हुयी बातों में
खरे ठहराए जा सको और जब तुम्हारा
इन्साफ़ हो, तब जीत पा सको"

5अगर हमारी अधार्मिकता (बुरी
और गलत जीवन शैली) परमेश्वर की
विश्वासयोग्यता को दिखाती है, तो हम
क्या कहें? क्या मनुष्य पर दण्ड लाने के
कारण परमेश्वर अन्यायी हैं (मैं मनुष्य होने
के नाते ऐसा कह रहा हूँ)? 6बिल्कुल नहीं,
क्योंकि तब परमेश्वर लोगों का इन्साफ़
कैसे करेंगे? 7इसलिए कि यदि मेरे झूठ
बोलने से परमेश्वर की सच्चाई उनकी इज़्ज़त
बढ़ाती है, तो मैं परमेश्वर की दृष्टि में दोषी
क्यों ठहरूँ? 8इसके बजाए हम यह क्यों न
कहें (जैसा कि हम पर यह आरोप लगाया
जाता है कि हम ऐसा मानते हैं) - "आओ
हम बुराई करें ताकि उससे भलाई उत्पन्न
हो"? उन्हें दोषी ठहराया जाना उचित है।

2:29 खतना वही है जो मन का है - यिर्म. 4:4 एक व्यक्ति सच्चा विश्वासी दिल से होता है। भीतर के कार्य को बपतिस्मा दिखाता है मत्ती 16:16; प्रे.काम 2:38. बिना इस बदलाव के इसका कोई मूल्य नहीं है। जो लोग भीतर से परमेश्वर के लोग हैं, वे परमेश्वर से शाबाशी चाहेंगे, मनुष्य से नहीं। यूहन्ना 5:44; 12:43 से तुलना करें।

3:1 पौलुस ने कहा था कि यहूदी दूसरों से बेहतर नहीं है। उसको पाप क्षमा, धर्म या धार्मिक कार्यों से नहीं मिलती है। जिस तरह से गैरयहूदियों को प्रभु दोषी ठहराते हैं, उसी प्रकार से यहूदियों को भी। इसलिए प्रश्न यह उठता है कि यहूदियों को अन्य लोगों से अलग करने का मतलब क्या? उन्हें नियम, रीति, विधि आदि देने का क्या अर्थ था?

3:2 9:4-5 भी देखें। उन दिनों दूसरे अन्य लोगों से अधिक यहूदियों को याहवे का वचन सुनने, विश्वास करने और सच्चे परमेश्वर पिता की सेवा करने का अवसर मिला था। यहूदी होने का यह सब से बड़ा लाभ था।

3:3 यहूदियों के अनाज्ञाकारी और अविश्वासी बने रहने और अवसर का लाभ न उठाने में परमेश्वर का क्या दोष था? वह विश्वासयोग्य बने रहे (2 तीमु. 2:13)। इस्राएल राष्ट्र के लिए जो प्रतिज्ञाएँ हैं, उन्हें वह पूरा करेंगे (अध्याय 11)।

3:4 भजन 51:4 ।

3:5-7 उन में से कुछ लोगों ने यह कहने का साहस किया, कि उनके अविश्वास और दुष्ट मार्ग से परमेश्वर की सच्चाई और विश्वासयोग्यता और अधिक महिमामय प्रगट हुयी। इसलिए ऐसा लगता है कि उनका सोचना था वे परमेश्वर पर एहसान कर रहे थे इसलिए परमेश्वर को उन्हें दोषी नहीं ठहराना चाहिए।

3:8 कुछ लोगों ने यह कह कर पौलुस की निन्दा की, कि ये ऊपर लिखी बात पौलुस की शिक्षा का एक भाग हैं। ऐसा कहकर वे अपने दोषी विवेक को दबाकर दण्ड के बारे में पौलुस के शब्दों से बचना चाहते थे। पौलुस कहता है कि ऐसे लोगों को नरक भेजने में परमेश्वर बिल्कुल सही है।

9तब क्या कहा जाए? क्या हम उन से
अच्छे हैं? नहीं, बिल्कुल नहीं, इसलिए
कि हम पहले ही से यह दोष लगा चुके हैं
कि दोनों, यहूदी और गैरयहूदी परमेश्वर
की दृष्टि में अपराधी हैं। 10जैसा लिखा
है, "कोई भी व्यक्ति धर्मी (निर्दोष)
और खरा नहीं है, यहाँ तक कि एक भी
नहीं, 11ऐसा कोई व्यक्ति नहीं, जिसको
समझ हो या जो परमेश्वर के लिए भूखा
हो। 12वे सभी गुमराह हो चुके हैं वे
सब किसी काम के नहीं रहे। ऐसा कोई
नहीं, जो कोमलता दिखाता हो, एक भी
नहीं।" 13"उनका गला खुली कब्र के
समान है। वे अपनी जीभ से झूठ बोलते
हैं, उनके ओठों के नीचे साँप का ज़हर
है।" 14"उनका मुँह शाप और कड़वाहट
से भरा है।" 15"उनके पैर खून बहाने के
लिए फुर्तीले हैं। 16उनकी राहों में बर्बादी
और तकलीफ़ें है। 17वे चैन के रास्ते को
नहीं जानते हैं।" 18"उनकी आँखों में
परमेश्वर का डर नहीं है।"

19अब हम यह जानते हैं कि जो कुछ
नियमशास्त्र कहता है, वह उन्हीं से कहता
है, जो उसको मानने वाले हैं, ताकि हर
एक मुँह को बन्द किया जा सके और सारी
दुनिया परमेश्वर के सामने ज़िम्मेदार ठहरे।

3:9 पौलुस का अर्थ यह है: यहूदी जिन्हें परमेश्वर द्वारा दिए गए नियमों और रीति विधियों और अवसरों का लाभ था, गैरयहूदियों से बेहतर नहीं थे? मसीही भी यही प्रश्न कर सकते हैं, कि क्या वे दूसरे धर्मों के लोगों से अच्छे हैं? उत्तर है - नहीं। सभी दोषी हैं चाहे वे यहूदी हों या गैरयहूदी। चाहे कोई धर्म, राष्ट्र या जाति हो। धनी, निर्धन, शिक्षित, अशिक्षित, मूर्ख, बुद्धिमान, जो अपने धर्म का पालन करते हैं और जो नहीं करते हैं। सभी अधर्मी हैं। कुछ लोग अपने आप को दूसरों से अच्छा समझते हैं (देखें यशा. 65:5; लूका 18:9. वे पौलुस के प्रश्न का उत्तर हाँ में देगें। उनकी आवश्यकता और वे क्या हैं, इस सम्बन्ध में उन्हों ने परमेश्वर से कुछ ज्ञान प्राप्त नहीं किया है।

3:10-18 पौलुस कहता है कि उसकी शिक्षा बाईबल के प्रथम भाग (नए नियम) की शिक्षा के अनुरूप ही है। यह देखें कि वह आरम्भ कैसे करता है- "लिखा है" किसी और बात से बढ़कर हमें इसी तरह सोचना चाहिए। परमेश्वर बाईबल में क्या कहते हैं 4:3.

3:10-12 देखें भजन 14:1-3; 53:1-3; सभो. 7:20.

3:13 भजन 5:9; 140:3 ।

3:14 भजन 10:7 ।

3:15-17 यशा. 59:7-8.

3:18 भजन 36:1.

"परमेश्वर का डर"- उत्पत्ति 20:11; अय्यूब 28:28; भजन 34:11-14; 86:11; 111:10; नीति. 1:7; 1 पतर. 1:17; 2:17; प्रका. 15:4; 19:5. दूसरे अन्य बुरे व्यवहार का यह मूल कारण है। बिना परमेश्वर के भय के मनुष्य बुराई से दूर नहीं जाएगा। पौलुस यह नहीं कहता कि प्रत्येक व्यक्ति उपरोक्त प्रत्येक पाप करता है। उसका अर्थ यहाँ मानवजाति से है। प्रत्येक व्यक्ति के पास बुरा स्वभाव है और उसके पास खरापन या निर्दोषता नहीं है।

3:19 "नियमशास्त्र"- इसका अर्थ है बाईबल का प्रथम भाग जिसे सीनै पर्वत पर याहवे ने मूसा को दिया था। इसको मानने वाले यहूदी थे। पौलुस का जो लक्ष्य था वह 1:18 से दिख जाता है-उसने यह बात सामने रखी थी कि दुनिया में प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर के सामने अपराधी है। उसे मसीह के संदेश की आवश्यकता है। सृष्टि (1:18-20), मनुष्य का इतिहास (1:21-28), मनुष्य की वर्तमान अवस्था (1:29-32), विवेक (2:15) और प्रथम भाग में प्रगट किए गए सत्य (3:10-18) इस बात की घोषणा करते हैं कि इस पृथ्वी पर सभी अधर्मी है। सभी दोषी हैं। वे अपने अपराधों के लिए ज़िम्मेदार हैं। वे स्वर्ग के मालिक द्वारा दण्ड के लायक हैं। परमेश्वर के साम्हने किसी को बहाना नहीं बनाना चाहिए और न ही अपने को दूसरों से बेहतर समझना चाहिए।

वे आशीषित लोग हैं जो अपने मुँह बन्द कर के बिना कुछ छिपाए, अपनी हालत को मान लेते हैं - ऐसे लोग ही मुक्ति के पास होते हैं। ऐसे लोगों के लिए परमेश्वर पिता के पास कुछ अच्छी बातें हैं। यहाँ रखे सत्य के विषय लूका 18:9-14 एक छोटी टिप्पणी है। जो लोग खुद को दूसरों से भला समझते हैं, वे समझ जाते हैं कि याहवे की निगाह में क्या हैं। मुक्ति के अद्‌भुत सत्य को वे लोग समझ पाते हैं जो अपनी सही दशा को जानते हैं।

20इसलिए सिर्फ़ नियमशास्त्र के पालन करने
से कोई व्यक्ति परमेश्वर की निगाह में
धर्मी (सिद्ध) ठहराया नहीं जाएगा, क्योंकि
नियमशास्त्र ही के द्वारा मालूम पड़ता है,
क्या बुरा है और क्या नहीं।
21लेकिन परमेश्वर ने एक रास्ता
(तरीका) हमें दिखा दिया है, कि बिना
उन नियमों के पालन जिनका वायदा
मूसा और नबियों की किताब में है,
किस तरह परमेश्वर के साथ रिश्ता
कायम किया जाए। 22परमेश्वर से मिलने
वाली धार्मिकता (पवित्रता और सिद्धता)
जो यीशु मसीह पर विश्वास करने से
हासिल होती है, सभी विश्वास करने
वालों के लिए है, चाहे वे कोई भी क्यों
न हों। 23सभी ने (परमेश्वर के खिलाफ)

3:20 मूसा के माध्यम से जिन विधियों और आज्ञाओं को परमेश्वर ने इस्राएल को दिया था, वही "नियमशास्त्र" है। इसलिए कि इन बातों को करने में कोई खतरा नहीं हो सकता, इन के द्वारा मुक्ति भी नहीं पा सकता। दुष्ट स्वभाव के कारण पवित्र सिद्धान्तों का पालन असंभव है। एक नियम को तोड़ने का अर्थ है, सभी नियमों को तोड़ना (याकूब 2:10)।

"धर्मी (बेगुनाह) ठहराया"- इसका अर्थ है अबोध या धर्मी ठहराया जाना। रोमियों के पत्र की यह प्रमुख शिक्षा है। यह खुशी की खबर का केन्द्र भी है। अगले कुछ पदों में पौलुस बतलाता है कि इसका अर्थ क्या है।

3:21 "लेकिन"- इफ़ि. 2:4; तीतुस 3:4 से तुलना करें। यह शब्द एक सम्पूर्ण घुमाव को दिखाता है। सभी लोगों के पाप और असफ़लता को दिखाने के बाद, पौलुस योग्य दण्ड से छूटने का तरीका बताता है। मनुष्य को माफ़ी की जरूरत है, इसे प्राप्त करने का तरीका यहाँ है। यहाँ धार्मिकता से अर्थ वह सब कुछ है जो मनुष्य के संसार के धर्मी परमेश्वर के साम्हने खड़े होने के लिए ज़रूरी है। यह ऐसी स्थिति है, जो किसी व्यक्ति के पास स्वभाव से नहीं है (पद 23)।

यह परमेश्वर की ओर से मिलती है (पद 21) - इसलिए यह बिना किसी खोट और बिना अधूरेपन की है। इसका सम्बन्ध नियम से नहीं है (पद 21) - परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने से यह नहीं मिलती है। बहुत से लोग इस तरह प्राप्त करना चाहते हैं (10:1-5 देखें)। यह मात्र कठिन ही नहीं, असंभव है। इसके विषय में भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तक और मूसा की पुस्तकों में लिखा है (पद 21) - यह कुछ नयी अजीब बात नहीं है (उत्पत्ति 15:6; हबक्कूक 2:4)। यह नालायक दुष्टों के लिए सृजनहार की दया का इनाम है-जो कोई इसे स्वीकार करे, उसे वह मुफ़्त में देते हैं (पद 22,24)। इसे विश्वास से हासिल किया जाता है (पद 22,25; 1:16-17)। इसलिए इसे प्राप्त करने के लिए अपने कामों पर भरोसा न रखकर यीशु पर भरोसा रखें। सच पूछें तो यह सच्चाई, पूर्ण धर्मी मसीह ही खुद हैं। इस सच्चाई की तुलना एक साफ़ वस्त्र से की गयी हैं। देखें (यशा. 61:10; जकर्याह 3:3-5; मत्ती 22:11-12. यशा. 64:6 दिखाता है, कि हमें इसकी कितनी आवश्यकता है। हम जब मसीह पर भरोसा रखते हैं, परमेश्वर हमें मसीह की निष्कलंक सच्चाई से ढाँक देते हैं।

लोगों को निर्दोष ठहराना यीशु मसीह की मौत पर आधारित है (पद 24,25)। जब तक लोगों के अधर्म हटाए न जाएँ न्यायी परमेश्वर उन्हें पवित्र नहीं ठहरा सकते। याहवे की व्यवस्था (नियम और आज्ञाएँ हमें दोषी ठहराती हैं और दण्ड के लायक भी। परमेश्वर अपने नियम के विपरीत नहीं जा सकते। हम दण्ड से कैसे बच सकते हैं। वह हमें कैसे क्षमा कर सकते हैं? हमें धर्मी कैसे ठहरा सकते हैं। ऐसा संभव है, क्योंकि यीशु ने हमारा स्थान लिया है। हमारे दण्ड को अपने ऊपर उठाया है। संपूर्ण संसार के लिए वह बलिदान ठहरे हैं। पद 25; यूहन्ना 1:29; मत्ती 26:27-28; 1 यूहन्ना 2:2; यशा. 53:5-6,10)। जिन्होंने उन पर भरोसा रखा, उनके अपराध हटाने के द्वारा, यीशु ने परमेश्वर के क्रोध (सजा़) को हटा दिया (पद 25)। स्वर्ग पहुँचने के लिए और आनन्द शान्ति के साथ स्वर्गिक पिता के साथ सदा रहने के लिए, विश्वास के द्वारा मसीह की धार्मिकता मिलती है।

3:23 इसलिए कि सभी को इसकी ज़रूरत हे, इसे देने के लिए परमेश्वर ने अद्‌भुत और महँगा कार्य किया है। कुछ लोग दूसरे लोगों की तुलना में अधिक दुष्ट हो सकते है, किन्तु सभी विद्रोही या बलवई हैं और परमेश्वर की माँग पर खरे नहीं उतरते हैं। इसलिए सृष्टि के पिता कहते है, "कोई भिन्नता नहीं है" (पद 9:22)। एक व्यक्ति एक गड्ढे में हो सकता है और दूसरा पहाड़ी की चोटी पर, किन्तु दोनों ही ऊपर जाकर सितारों को नहीं छू सकते।

बलवा किया है और परमेश्वर के सामने
खरे नहीं हैं। 24लेकिन जो छुड़ाया जाना
मसीह यीशु में उनकी महान कृपा से है
उसके द्वारा वे मुफ़्त में सज़ा मुक्त किए
गये हैं। 25जिस अनुग्रह (दया) के स्थान
पर विश्वास से पहुँचते हैं वहाँ पर उनकी
कुर्बानी (प्रायश्चित) के समय परमेश्वर
ने उन्हें (यीशु को) सब के सामने रखा।
26यह उन्हों ने इसलिए किया, ताकि इस
समय उनकी विश्वासयोग्यता दिखायी दे,
और वह (परमेश्वर) यीशु पर विश्वास
करने वाले को बिना किसी दोष का
एलान करें।

27फिर घमण्ड करना कहाँ रहा? इसकी
तो कोई जगह ही नहीं है, अगर है तो
किस सिद्धान्त से? कामों के सिद्धान्त
से नहीं? लेकिन विश्वास के के ज़रिये।
28इस से हम यह निचोड़ निकालते हैं, कि
नियमशास्त्र के कामों से अलग विश्वास
ही से एक व्यक्ति धर्मी (निर्दोष) घोषित
किया जाता है। 29क्या वह केवल यहूदियों
के परमेश्वर हैं? क्या वह गैरयहूदियों के
भी नहीं? हाँ यहूदियों और गैरयहूदियों के
भी हैं। 30इसलिए जब खतना वाले और
खतनाहीन को एक ही परमेश्वर विश्वास
से क्षमा देते हैं। 31तब क्या विश्वास की
अहमियत की वजह से हम नियमशास्त्र को
अलविदा कह दें। बिल्कुल नहीं! इसके
विपरीत हम नियमशास्त्र को उसका उचित
आदर सम्मान देते हैं।

3:24 "छुड़ाया जाना"- मत्ती 20:28; इफ़ि. 1:7; 1 पतर. 1:18-19; भजन 78:35 आदि।

"सज़ा मुक्त किए गये"- इसका अर्थ यह है कि जितने लोगों ने अपराध किया है उनके लिए "माफ़ी संभव" है। यह नहीं कि जितनों ने पाप किया है, वे सभी धर्मी ठहराए जाएँगे।

3:25-26 बाईबल और रोमियों में कुछ मुख्य पद हैं। यीशु के यहाँ आकर पापों के लिए बलिदान दिए जाने से पहले, परमेश्वर ने उन्हें क्षमा किया, जिन्होंने अपना मन बदला और विश्वास किया। परमेश्वर ने उन्हें नरक का दण्ड नहीं दिया, क्योंकि जग के स्वामी को यह मालूम था कि मसीह के द्वारा वह क्या करेंगे। किन्तु उस समय ऐसा नहीं लगा कि संसार के धर्मी जज सजा देने के बजाए लोगों को माफ़ी देने के लिए इन्साफ़ से काम करेंगे। हालाँकि नियम ने उन्हें दोषी ठहराया, फिर भी परमेश्वर ने उन्हें बच जाने दिया। पाप के लिए कुर्बान होने के लिए अपने बेटे को भेजकर परमेश्वर ने अपने न्यायी होने का सबूत दिया।

क्या दण्ड पाने वालों के स्थान पर यीशु का बलिदान होना, परमेश्वर पिता के न्याय को दिखाता है? हाँ क्योंकि मसीह परमेश्वर हैं (1:4; 9:5; यूहन्ना 1:1,14; फ़िलि. 2:6) वह स्वयं दूसरों के लिए मरे (यूहन्ना 10:17-18)। मसीह में होकर परमेश्वर ने उनके पाप लेकर दुख उठाया। इब्रा. 10:4 के नोट्स देखें।

"कुर्बानी (प्रायश्चित)"- (पद 25) यहाँ उस बलिदान की ओर इशारा है, जो गुनाह हटाकर परमेश्वर के क्रोध को हटाता है। गुनाह या बलवईपन के कारण परमेश्वर का क्रोध उतरता है (1:18)। मसीह के बलिदान के द्वारा जब, पाप हटा दिया जाता है, परमेश्वर का क्रोध शान्त होता है, मुड़ जाता है। प्रत्येक अपराधी जो विश्वास से उनकी ओर मुड़ता है, उसे वह बिना पक्षपात क्षमा करते हैं।

3:27 इफ़ि. 2:8-10 । यदि मनुष्य अपने कर्मो से मुक्ति पा सकता, तो स्वर्ग ऐसे घमण्डियों से भरा होता जो बड़ी-बड़ी डीगें मारते। तुलना करें 2:17; लूका 18:11-12.

3:28 1:16-17; 5:1; 10:10; गल. 2:16; 3:24; 5:4.

3:29-30 एक ही सच्चे परमेश्वर हैं इसलिए यहूदियों को यह नहीं सोचना चाहिए कि उनके और गैर यहूदियों के मुक्ति के तरीके अलग-अलग हैं। विश्वास के माध्यम से यीशु मसीह के द्वारा ही मुक्ति संभव है।

3:31 मत्ती 5:17-18 से तुलना करें। धार्मिक नियमों से मुक्ति नहीं ऐसा कह कर हम उन नियमों को फ़ेंक नहीं देते हैं। यह उन नियमों को उचित स्थान देता है। वह यह कि व पाप को प्रगट कर के उसे गलत ठहराते हैं।

4सो हम क्या कहें? अब्राहम, जो शरीर
के अनुसार हमारा पूर्वज है, विश्वास
से मुक्ति के प्रश्न पर क्या अनुभव रखता
था? 2क्योंकि यदि अब्राहम कर्मों द्वारा
सिद्ध ठहराया गया होता, तो उसका
घमण्ड करना ठीक था, लेकिन परमेश्वर
के सामने नहीं। 3इसके बारे में बाइबल में
क्या लिखा है? अब्राहम ने परमेश्वर पर
विश्वास किया और यह विश्वास करना
उसके लिए विश्वासयोग्यता गिना गया।
4जो मेहनत करता है, उसकी मज़दूरी
ईनाम नहीं है, लेकिन वह उसका हक बनता
है। 5परन्तु जो मेहनत नहीं करता, (लेकिन
परमेश्वर जो दुष्ट को पवित्र ठहराते हैं),
उन पर भरोसा करता है, उसका विश्वास
उस व्यक्ति के लिए विश्वासयोग्यता
(धार्मिकता) गिना जाता है। 6जैसा राजा
दाऊद भी उस व्यक्ति को आशीषित
कहता है, जिसे परमेश्वर द्वारा कामों के
आधार पर नहीं लेकिन विश्वास के आधार
पर धर्मी ठहराया जाता है। 7"आशीषित
वे हैं जिनके गुनाह माफ़ किए गए और

4:1 "हम"- जैसा सभी यहूदी दावा करते थे, अब्राहम की नस्ल से आने वाला प्रत्येक व्यक्ति जन्म से यहूदी था (उत्पत्ति 12-25) यहूदी इस सम्बन्ध पर घमण्ड किया करते थे। उन में से अधिकांश यह समझते थे कि शारीरिक रीति से अब्राहम की सन्तान होने के कारण वे परमेश्वर की सन्तान थे (मत्ती 3:9; यूहन्ना 8:33,39)। बहुत से यह भी सोचते थे कि मूसा द्वारा दी गयी पुस्तक में आज्ञाओं, और रीति विधियों पर उनकी पाप क्षमा निर्भर थी। इसलिए उन्हों ने उसका विरोध किया (प्रे.काम 9:23; 13:45; 14:5,19; 15:1; 17:5; 21:11; 2 कुरि. 11:24; 1 थिस्स. 2:14-16. यहाँ पौलुस अब्राहम के विषय को क्यों लाता है? इसलिए कि यह बताए कि राष्ट्र के पिता अब्राहम के विषय में जो कुछ बाईबल कहती है वह विश्वास से खरा ठहराए जाने के बारे में है।

4:2 3:27 देखें.

4:3 उत्पत्ति 15:6 और नोट्स भी। इस पद द्वारा वह स्पष्ट करता है कि जब हम सत्य को चाहते हैं, तो बाईबल के आधार पर विशेष प्रश्न क्या है?

4:4 यदि मनुष्यों के धार्मिक कार्यों के कारण परमेश्वर मनुष्यों को बचाते तो वे अपनी मुक्ति पर और घमण्ड भी कर सकते थे।

4:5 "मेहनत नहीं करता"- इसका अर्थ है, मुक्ति कमाता नहीं। याहवे द्वारा मिलने वाले उद्धार और सिद्धता को इनाम के रूप में विश्वास से लेना है (3:21-28; 6:23; 11:6)। यह मनुष्य के स्वभाविक सोचने के विरोध में है। लोग इस सोच को मानते हैं, कि उनके कार्य से वे मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं। परमेश्वर इस बात से सहमत नहीं है।

देखें कि कौन है जिसे याहवे परमेश्वर निर्दोष (धर्मी) ठहराते हैं - "दुष्ट"। परमेश्वर की दृष्टि में ऐसा कोई नहीं हैं जो दुष्ट न हो। (3:9-19; मत्ती 7:11)। लेकिन कोई भी व्यक्ति इतना बुरा नहीं जिसका मन बदलाव होने पर परमेश्वर उसे न बचाएँ और निर्दोष न ठहराएँ। पौलुस के बारे में सोचें (प्रे.काम 8:3; 9:1-5) क्रूस पर चोर के बारे में (लूका 23:39-43)। यशा. 55:7 एवं 1 कुरि. 6:9-11 भी देखें।

4:6-8 अब्राहम के बारे में जो कुछ कहा गया था, उससे, इस्राएल का सर्वश्रेष्ठ राजा दाऊद सहमत था। भजन 32:1-2. परमेश्वर पिता लोगों को इसलिए माफ़ करते हैं, क्योंकि वह दयालु हैं। वह उन्हें यह वरदान इसलिए नहीं देना चाहते है, क्योंकि लोग अच्छे हैं और वे इसे पाने के लायक हैं (भजन 86:5; मीका 7:18-19; मत्ती 9:5-7; 12:31; प्रे.काम 13:38; इफ़ि. 1:7 धर्मी ठहराए जाने का अर्थ क्या है, यहाँ देखें कि ठहराए जाने का अर्थ है - उनके विरोध में परमेश्वर उनके पापों को गिनेंगे नहीं (8:33-34)। ऐसा इसलिए है क्योंकि क्रूस पर यीशु के बलिदान के फलस्वरूप उनके भविष्य के पाप भी हटा दिए गए हैं। वे उनके साथ सदा के लिए एक भी हो गए हैं। उनको मसीह की पूरी निर्दोषता (धार्मिकता) मिल चुकी है। इसलिए उनकी और मसीह की सच्चाई एक सी है। यीशु की निर्दोषता पर कोई दाग और धब्बा न तो है न हो सकता है। उनकी सच्चाई पर भी कोई आँच नहीं आ सकती। जब तक प्रधान (इफ़ि. 1:22-23) धर्मी है तब तक सच्चे विश्वासियों से बनी देह भी निर्दोष रहेगी।

जिनकी दुष्टता ढाँक दी गयी। 8आशीषित व्यक्ति वह है, जिसे मुजरिम (अपराधी) न ठहराया गया हो।

9क्या इस वचन से सिर्फ़ खतना वाले ही आशीष पाते हैं, या बिना खतना वाले भी? क्योंकि हमारा कहना है, कि अब्राहम विश्वास से धर्मी ठहराया गया था। 10अब्राहम कब धर्मी ठहराया गया, खतने के पहले या खतने के बाद में? खतने के बाद नहीं, लेकिन इसके पहले। 11जब वह खतना रहित था, उसने खतने का निशान पाया, जो विश्वास से अपनाए जाने की मोहर थी। साथ ही यह कि विश्वास के द्वारा अब्राहम उन लोगों का भी पिता हो सके जो खतना रहित दशा में विश्वास करते हैं, ताकि वे भी धर्मी ठहराए जाएँ। 12अब्राहम खतना वालों का ही पिता नहीं हैं, लेकिन उनका भी है, जो अब्राहम के विश्वास के पदचिन्हों पर चलते हैं, जिसके पास खतना रहित स्थिति में विश्वास था।

13अब्राहम या उसके वंश तक दुनिया को विरासत में पाने की प्रतिज्ञा मूसा के नियमशास्त्र से नहीं पहुँची, लेकिन विश्वास से मिलने वाली धार्मिकता (सिद्धता) से। 14इसलिए कि अगर लोग नियमशास्त्र की वजह से वारिस हैं, तो विश्वास बेकार

4:8 "मुजरिम"- यूनानी शब्द "न" का अर्थ कभी नहीं भी हो सकता है। सृजनहार की दृष्टि में यह अद्‌भुत स्थान विश्वासियों का है। उनके लिए अनन्त विनाश या नरक का कोई सवाल ही नहीं उठता। इस में सन्देह नहीं कि वे जब गलती करेंगे, वह उन्हें अनुशासित करेंगे, सुधारेंगे - इब्रा. 12:5-11) किन्तु यदि परमेश्वर विश्वासियों के पापों पर ध्यान न दें, तो क्या उन्हें उन बुराईयों में बने रहने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा? नहीं, इसके विपरीत, परमेश्वर से प्रेम करने और उनके लिए जीवित रहने के लिए विश्वासियों को हिम्मत मिलेगी।

अध्याय 6 में देखें कि पौलुस इस विषय को लेकर विश्वास करने वालों पर, आने वाली दया के परिणामों को दिखाता है।

4:9 "खतना वाले"- यह यहूदियों या अब्राहम के वंश की ओर इशारा है। "बिना खतना वाले भी" - गैरयहूदी।

4:10-12 यहाँ यहूदियों के घमण्ड पर अच्छी चोट है। खतना किए जाने से पहले अब्राहम को धर्मी ठहराया गया - जब वह गैरयहूदी था। 15 वें अध्याय में याहवे ने अब्राहम को धर्मी ठहराया। अब्राहम ने 17 वें अध्याय में खतना प्राप्त किया जो कि अपनाए जाने के बाद का समय था। इन सभी बातों के द्वारा परमेश्वर यह दिखा रहे थे कि खतने की विधि का अब्राहम के उद्धार से कोई लेना देना नहीं है। मात्र विश्वास से अब्राहम अपनाया गया। वे सभी जो अब्राहम के समान करते हैं, चाहे यहूदी हों या गैरयहूदी, उसी प्रकार से धर्मी ठहराए जाते है। जो लोग याहवे पर भरोसा रखते हैं, वह उन सभी के पिता हैं। इसका अर्थ हुआ कि परमेश्वर ने यह दिखाया कि लोग किस प्रकार धार्मिकता हासिल करते हैं। अब्राहम के पास जो था, खतना उसका चिन्ह और मोहर की। आज यही बात बपतिस्मे के लिए कही जा सकती है। यह मात्र चिन्ह है और उन सभी के लिए बेकार है जिसके पास सृष्टिकर्ता द्वारा विश्वास मिलने वाली धार्मिकता न हो।

4:13-15 पौलुस आगे यह दिखाता है कि अब्राहम को परमेश्वर ने बिना नियम के खरा ठहराया। यहूदी यह सिखाते थे कि नियमों के पालन से मुक्ति मिलेगी। अब्राहम को धर्मी ठहराने के सैकड़ों वर्ष बाद नियम दिए गए। गल. 3:16-18.

4:13 परमेश्वर ने कनान की भूमि के बारे में अब्राहम से प्रतिज्ञा की थी (उत्पत्ति 15:7,18)। ऐसा इसलिए था क्योंकि अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया था। व्यवस्था दिए जाने से बहुत पहले यह प्रतिज्ञा परमेश्वर ने अब्राहम से की थी। उसने यह भी कहा था कि संसार उसके द्वारा आशीष पाएगा। उत्पत्ति 12:1-3. यह आशीष अब्राहम के एक वंशज मसीह से आने वाली थी (भजन 2; 72:5-11; मत्ती 1:1 देखें)। मसीह और उसके साथ सभी विश्वास करने वाले) इस संसार के उत्तराधिकारी (वारिस) हैं 8:17; इब्रा. 1:2.

4:14 यदि लोग नियम के पालन करने से वारिस बन सकते, तो परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर भरोसा और प्रतिज्ञाएँ बेकार ठहरतीं। इसलिए कार्यों के आधार पर मुक्ति की बात व्यर्थ है।

ठहरा और प्रतिज्ञा भी बेअसर हुयी,
15क्योंकि नियमशास्त्र के पालन नहीं किये
जाने से प्रकोप पैदा होता है, लेकिन जहाँ
नियमशास्त्र है ही नहीं उसके तोड़े जाने
का सवाल ही नहीं उठता।

16इसलिए वायदा विश्वास का नतीजा
है और विश्वास पर निर्भर भी है, ताकि
अब्राहम के वंश के लिए वायदा निश्चित
रूप से काम करे, सिर्फ़ उनके लिए नहीं
जो नियमशास्त्र के मानने वाले हैं, लेकिन
उनके लिए भी जो अब्राहम का सा विश्वास
रखने वाले हैं, जो कि हम सब का पिता है
17जैसा कि लिखा है, "मैंने तुम्हें बहुत से
राष्ट्रों का पिता बनाया है जिन (परमेश्वर)
पर उस (अब्राहम) ने विश्वास किया, उन
(परमेश्वर) की मौजूदगी में अब्राहम हमारा
पिता है - वह परमेश्वर मरे हुओं को ज़िन्दा
करते हैं, जो बातें हैं नहीं उन्हें इस तरह
कहते हैं, जैसे कि वास्तव में वे हैं।

18कोई आशा न होने पर भी अब्राहम
ने भरोसा किया, कि जो कुछ उससे
कहा गया था, "कि तुम्हारा वंश ऐसा
होगा" या "तुम्हारी सन्तान तारों के
समान असंख्य होगी", उसी कथन के
अनुसार वह बहुत से देशों का पिता
बना। 19अब्राहम विश्वास में डगमगाया
नहीं था। सौ साल का होने के बावजूद
भी उसने न अपनी देह को और न सारा
की कोख़ को मरा हुआ समझा। 20शक
के कारण वह परमेश्वर के वायदों पर
लड़खड़ाया नहीं, लेकिन परमेश्वर की
बड़ाई करता हुआ विश्वास में मज़बूत
बना रहा और परमेश्वर की प्रशंसा की।
21वह पूरी तरह से निश्चिन्त था कि जैसा
वायदा उसे मिला है, परमेश्वर वैसा
करने के योग्य हैं। 22इसलिए उसका यह

4:15 जो लोग परमेश्वर के नियमों के पालन से मुक्ति पाना चाहते हैं वे अपने ऊपर और अधिक परमेश्वर का क्रोध लाते हैं। क्योंकि नियम के अनुसार करने के बजाए वे उसे तोड़ते हैं। नियम के अनुसार न करने से वे और अधिक अपराधी ठहरते हैं, तुलना करें 5:20; 7:7-11; गल. 3:10) यदि मुक्ति पाने के लिए मूसा के नियम का पालन आवश्यक होता, तो कोई भी न बच पाता। यहूदी उसके अनुसार कर न सके और गैरयहूदियों के पास वह थी ही नहीं।

4:16 इसलिए कि उद्धार की प्रतिज्ञा (और जो मीरास इसके साथ मिलती है) और सृष्टि के मालिक के नियम के पालन का कोई सम्बन्ध नहीं है और मात्र विश्वास चाहिए, इसलिए यह यहूदी और गैरयहूदी सभी के लिए है। विश्वास ही मुक्ति के लिए आधार क्यों है यह देखें - कामों के आधार पर नहीं किन्तु एक ईनाम के रूप में परमेश्वर ने देने का निश्चय किया।

4:17 उत्पत्ति 17:5 । प्रत्येक विश्वास करने वाले के लिए, अब्राहम आत्मिक पिता है (पद 11)। इस पद के अन्तिम भाग में पौलुस अब्राहम के विश्वास की प्रकृति को दिखाता है। उसका विश्वास इस संसार के सर्वसामर्थी और सर्वज्ञानी सृष्टिकर्ता पर था। वह परमपिता जो कुछ भी कर सकने के साथ पहले से बता सकते हैं कि वह क्या करेंगे?

"मरे हुओं को ज़िन्दा करते हैं"- इब्रा. 11:19,35.

4:18-21 अब्राहम का विश्वास किस तरह का था? उसने परमेश्वर पर तब विश्वास किया, जब मानवीय रीति से प्रतिज्ञा का पूरा होना संभव नहीं था (पद 18; उत्पत्ति 15:4-5)। जिस असंभव बात की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की थी, उस पर उसने भरोसा किया (पद 19)। अब्राहम लगभग 100 वर्ष का और सारा 90 वर्ष की थी, जब याहवे ने बेटे की प्रतिज्ञा की - उत्पत्ति 17:1,15,16. उसने परमेश्वर पर विश्वास किया न कि अपनी योग्यता पर। उसने इसलिए याहवे पर विश्वास किया क्योंकि याहवे ने प्रतिज्ञा की थी। उसे निश्चय था कि याहवे करने में सक्षम हैं, और करेंगे भी। परमेश्वर पिता ने मात्र प्रतिज्ञा दी थी कोई चिन्ह नहीं। अब्राहम ने विश्वास किया (पद 20,21) इसलिए कि वह सत्य के परमेश्वर थे। यह अब्राहम के विश्वास और सभी सच्चे विश्वास का स्वभाव है।

4:22 पद 3.

भरोसा उसके नाम पर विश्वासयोग्यता गिना गया। 23यह केवल अब्राहम के लिए नहीं लिखा गया था लेकिन हमारे लिये भी लिखा गया था, 24कि हम उन परमेश्वर पर विश्वास करें जिन्होंने यीशु मसीह को मरे हुओं में से जिलाया था। 25और यह कि हमारे अपराधों के कारण यीशु मारे गए और हमें खरा (सिद्ध) ठहराने के लिए वह जिलाए गए।

5 इसलिए जब हम विश्वास से धर्मी (दोषमुक्त, क्षमा किए हुए और सिद्ध) ठहराए गए, प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ हमारा रिश्ता सुधर गया है। 2विश्वास के द्वारा हमारी पहुँच उस शर्तहीन कृपा (अनुग्रह) तक होती है, जिसमें आज तक हम बने हुए हैं और परमेश्वर की महिमा की आशा में खुश होते हैं। 3इतना ही नहीं, हम अपने सताव में भी खुश हों यह

4:23-24 गुनाह की माफ़ी पाने के लिए और संसार के उत्तराधिकारी बनने के लिए (पद 13) हमारा विश्वास अब्राहम के विश्वास के समान बनना चाहिए। लोग जिस परमेश्वर या जिन ईश्वरों पर भरोसा रखते हैं हमें उस परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिये जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिंदा किया (पद 24; 10:9), क्योंकि वही एक मात्र परमेश्वर हैं। केवल विश्वास करने से ही वे एक मात्र और सामर्थी परमेश्वर हैं। उन पर विश्वास करने से काम नहीं चलेगा (याकूब 2:19 देखें) हमें उनके वायदों पर भरोसा करना चाहिए। (इब्रा. 11:6. कुछ एक प्रतिज्ञाओं पर जो पुत्र के द्वारा दी गयी हैं,-यूहन्ना 3:16; 4:14; 5:24; 6:37; 7:38; 11:25-26; प्रका. 3:20; मत्ती 11:28 देखें)। हम जब उन पर विश्वास करते हैं, वह हमें सिद्ध ठहराते हैं, जैसे अब्राहम को सिद्ध ठहराया गया था।

4:25 विश्वासियों का उद्धार एक नींव पर है - वह है मसीह की मौत और उनका जी उठना (1 कुरि. 15:1-4)। गुनाहों के कारण लोग जिस मौत के लायक थे, उस मौत को यीशु ने सहा। यीशु का जी उठना इस बात का सबूत है कि मसीह के बलिदान को परमेश्वर ने ग्रहण किया, हमारे पाप समाप्त हो गए और सदा के लिए मिटा दिए गए। हम विश्वासियों को यह देखना चाहिए कि हमारा सम्बन्ध परमेश्वर के साथ ठीक किया गया है। हमें धर्मी ठहराने के साथ पाप से मुक्त किया गया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि मसीह मृतकों में से जी उठे हैं। स्वर्गिक पिता के साम्हने वह हमारी सच्चाई है 1 कुरि. 1:30-31.

5:1-21 पौलुस ने यह दिखाया है कि सभी दुष्ट हैं और मुक्ति की राह यीशु पर विश्वास करने से है। यह अध्याय में उनके विषय में है, जिन्हें परमेश्वर ने निर्दोष ठहराया है। विश्वासियों के लिए मुक्ति उसका विषय है। वे सभी एक नए दायरे में प्रवेश कर चुके हैं। उनके विषय में वह भिन्न बातें कहता है।

परमेश्वर से उनकी दोस्ती हो चुकी है (पद 1)

परमेश्वर की मौजूदगी में उन्हें निरन्तर प्रवेश है (पद 2)

उनके पास आशा है (पद 2)

दुखों में खुश रहने की योग्यता उन में है (पद 2)

वे जान सकते हैं कि क्लेश, आशा को बढ़ाते हैं (पद 4)

उनके पास पवित्र आत्मा का दान है (पद 5)

उनके पास पूरी सुरक्षा है (पद 9,10)

उनके पास परमेश्वर में आनन्द है (पद 11)

परमेश्वर के साथ नए सम्बन्ध में उनके पास अनन्त जीवन है। अनन्त जीवन है (पद 12-21), क्योंकि वे न जीते जाने वाले अनुग्रह के दायरे में प्रवेश कर चुके हैं।

5:1 इसलिए कि संसार के स्वामी विश्वासियों को सज़ा मुक्त ठहराते हैं, परमेश्वर के साथ उनकी दोस्ती है। कुल. 1:20; इफ़ि. 2:14,17; 2 कुरि. 5:18-21; यशा. 32:17; 53:5. यहाँ मेल का अर्थ है यीशु पर विश्वास रखने वालों और परमेश्वर के बीच मेल-मिलाप।

5:2 "पहुँच"- किसी भी समय विश्वासी याहवे की उपस्थिति में आ सकते हैं (इफ़ि. 2:18; 3:12; इब्रा. 10:19-22)। पिता की मौजूदगी में हम मसीह यीशु के द्वारा पहुँच चुके हैं (1 तीमु. 2:5; यूहन्ना 14:6,13,14)।

"कृपा"- 1:7; 4:16; यूहन्ना 1:14,16; 2 कुरि. 8:9; इब्रा. 4:16; मत्ती 7:9-11.

"महिमा"- विश्वासियों की मुक्ति का आखिरी पड़ाव है (8:17-22,30)। आशा के विषय में 8:24-25 के नोट्स देखें।

"आशा"- इसलिए कि विश्वास के द्वारा विश्वासी धर्मी ठहराए जाते हैं, वे इस बात से आनन्दित हो सकते हैं कि परमेश्वर के साथ वे

जानते हुए कि सताव सहते रहने से धीरज पैदा होता है। 4धीरज वाली सहनशीलता से चरित्र बनता है और ग्रहणयोग्य चरित्र से आशा। 5आशा किसी भी तरह से निराश नहीं करती है, क्योंकि जो पवित्र आत्मा हमें दिया गया है, उसके द्वारा परमेश्वर पिता का प्यार उन्हों ने हमारे दिलों में डाला है। 6जब हम अपनी असहाय अवस्था में थे, तब ही यीशु परमेश्वर-रहित लोगों के लिए मरे। 7शायद ही कोई किसी भले व्यक्ति के लिए जान देने के लिए तैयार हो। 8किन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम को इस तरह दिखाते हैः कि जब हम दोषी ही थे, यीशु मसीह हमारे लिए मर गए।

सदा तक रहेंगे (यूहन्ना 17:24; 1 थिस्स. 2:12; प्रका. 21:2-4; 22:3-5.

5:3-4 एक प्रश्न हैः क्या यीशु के शिष्यों के क्लेश उनके लोगों को उन से अलग कर सकते हैं? क्या वे उनकी स्वर्ग की आशा को समाप्त कर सकते हैं? ज़ोर डालते हुए पौलुस कहता है - "नहीं"। कष्ट विश्वासियों की आशा को बढ़ाते हैं। इसलिए वे आनन्दित हो सकते हैं, कि उनकी समस्याएँ उनकी भलाई उत्पन्न कर रही हैं। दुःखों को आशा में बदलना एक अनुभव की बात है। विश्वास के जीवन में धीरे - धीरे इसे सीखा जाता है।

क्लेश से धीरज के साथ सहना उत्पन्न होता है। विश्वासी सीखते हैं कि परमेश्वर उन्हें कठिनाईयाँ और समस्याएँ सहने के योग्य बनाते हैं। यह भी कि वे समस्याओं का साम्हना करते हैं और वापस अविश्वास में नहीं लौटते (इब्रा. 10:35-39)। वे यह सीखते हैं कि चाहे कुछ हो परमेश्वर उनके साथ रहेंगे और विश्वास में बनाकर रखेंगे। (8:35-37; यूहन्ना 10:27-28; 1 पतर. 1:5-7) धीरज से सहते रहने से चरित्र बनता है। क्लेशों को सहने से विश्वासी मजबूत होकर भविष्य में और अधिक सहने के लिए तैयार हो जाते हैं। इस प्रक्रिया के द्वारा उनकी आशा पहले से अधिक शक्तिशाली होती जाती है और बढ़ती भी जाती है।

5:5-11 ये पद दिखाते हैं कि विश्वासियों की आशा परमेश्वर के प्रेम पर निर्भर है। यह एक दृढ़ नींव भी है। यहाँ अन्तिम मुक्ति विषय है। पौलुस का तर्क यह हैः जब हम उनके शत्रु थे तब परमेश्वर ने अपना प्रेम हमें दिखाया। अब जब कि हम उनके दोस्त हैं, क्या वह प्रेम से हमें अन्त तक नहीं संभालेंगे? 8:35-39 से तुलना करें।

5:5 परमेश्वर ने शिष्यों को अन्तिम उद्धार का निश्चय इसलिए नहीं दिया है कि अन्त में उन्हें निराश कर दें। विश्वासी यह जान सकते हैं, कि जिसकी आशा परमेश्वर ने उन्हें दी है, वह परमेश्वर उन्हें देंगे। यह विश्वास याहवे के उस प्रेम के फलस्वरूप है जो पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे भीतर डाला गया है।

"डाला है"- बहुतायत दिखाता है परमेश्वर पिता के इस प्रेम के ज्ञान के कारण शिष्य उन से प्यार करते हैं। (1 यूहन्ना 4:9-10,19)।

पवित्र आत्मा परमेश्वर के प्रेम को विश्वासियों को देता है और उन्हें एवं एक दूसरे को प्रेम करने की योग्यता भी। जिन्हें स्वर्गिक पिता धर्मी ठहराते हैं, उन्हें पवित्र आत्मा सब कुछ देते हैं (गल. 3:1-3,14)।

5:6-8 हमारे विश्वासी बनने से पहले हम क्या थे, यह वर्णन करने के लिए पौलुस द्वारा उपयोग में लाए गए शब्दों को देखें - कमज़ोर, भक्तिहीन और दोषी। पद 10 में वह एक और शब्द "दुश्मन" जोड़ देता है - दूसरे शब्दों में, स्वभाव से हम बुरे थे (3:23; उत्पत्ति 8:21; यिर्म. 17:9; मत्ती 7:11)। हमारे पास एक सच्चे स्वर्गिक पिता नहीं थे। हम उन्हें चाहते भी नहीं थे क्योंकि हमें बुराई ही पसंद थी। इस कारणवश हम उनके शत्रु थे (याकूब से तुलना करें)। अपने आप को भला बनाने, दुष्टता रोकने और परमेश्वर पिता के दोस्त बनने में हम असहाय थे। ये बातें हमारे लिए मात्र कठिन ही नहीं, पूरी तरह से असंभव थीं। वर्तमान समय में ज्ञान, भक्ति और कर्म मार्ग के द्वारा भी जो मुक्ति के मार्ग दिखाए गए हैं, उनका खोखलापन देखते हैं। जो हम नहीं कर पाए थे, उसे परमेश्वर ने कर दिखाया। मसीह हमारे लिए आकर हमारे पाप को उठा ले गए। जब हम ने विश्वास किया तो मसीह के खून के कारण हमें सज़ा मुक्त ठहराया गया (पद 9)। उन्हों ने हमें मित्र बना लिया (पद 10)। उन्हों ने हमारे अनुभव और देखने के तरीके को बदल डाला (पद 1-4)। हमारे भीतर अपने आत्मा को डालकर उन्हों ने नया बना दिया (पद 5)।

9इस से अधिक यह कि जब उनके खून से हम आरोप मुक्त घोषित किए गये हैं, तो हम यीशु के द्वारा परमेश्वर की सज़ा से क्यों नहीं बचेंगे। 10इसलिए कि जब हम परमेश्वर के दुश्मन थे, उनके बेटे की मौत से हमारा उनके साथ मेल हो गया है, तो उनके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों नहीं पाएँगे। 11इतना ही नहीं हम मसीह यीशु में होकर, परमेश्वर पिता में भी खुश होते हैं, जिनसे हम ने इस रिश्ते को पाया है।

12इसलिए, जिस तरह एक इन्सान के द्वारा "पाप" दुनिया में आया और "पाप के द्वारा मौत', इसलिए सभी के पाप करने की वजह से मौत सब लोगों में फैल गयी। 13नियमशास्त्र के दिए जाने तक पाप दुनिया में था लेकिन जहाँ नियमशास्त्र नहीं है, वहाँ

5:9-10 मसीह के क्रूस पर प्रगट होने वाले परमेश्वर के प्रेम ये शब्द यह सिखाते हैं - जब लोग अविश्वास में थे, मसीह उनके लिए मर गए। जब लोगों ने मसीह पर विश्वास किया तब मसीह ने उन्हें धर्मी ठहराया और अपना दोस्त बना लिया। यह बिल्कुल निश्चित है। इस से अधिक यह कि जिस कार्य को मसीह ने लोगों में आरम्भ किया है उसे पूरा करने के साथ, अन्त तक उनकी रक्षा करेंगे। जो लोग अपने पापों में बने रहते हैं, उन पर परमेश्वर का पवित्र क्रोध प्रगट होगा। (2:5,8; इफ़ि. 5:5-6; कुल. 3:6; प्रका. 6:16-17)। प्रभु यीशु विश्वासियों को इस से बचा लेंगे। (1 थिस्स. 1:10; 5:9)। वे लोग यीशु के जीवन से जुड़ चुके हैं (यूहन्ना 17:21,23; कुल. 3:3-4) वह उन लोगों के लिए बिनती करने के लिए जीवित भी हैं (8:34; इब्रा. 7:25)। यदि वे गुनाह करते हैं, वह उन्हें बचाने के लिए वहाँ हैं 1 यूहन्ना 2:1)। अन्त तक वे सुरक्षित रहेंगे।

सवाल उठता है, "यदि वे विश्वास में बने नहीं रहते तो क्या होगा? मसीह के किए हुए और अभी भी किए जाने वाले कार्य के बावजूद क्या वे नाश नहीं होंगे? उत्तर यह है कि जिस परमेश्वर ने उन्हें विश्वास दिया है, वह विश्वास में बने रहने के लिए बल देंगे।" लूका 22:31-32; फ़िलि. 1:6,29; इब्रा. 10:39. क्या यह बाईबल के अनुसार है कि जो परमेश्वर विश्वासियों की रक्षा करते हैं, वह सब से महत्वपूर्ण क्षेत्र में पराजित होंगे?

5:11 जो लोग इसे समझ सकते हैं, वे आनन्दित हो सकते हैं। यहाँ से पद 2 देखेंगे।

"रिश्ते"- 2 कुरि. 5:18 देखें।

5:12-21 यहाँ आदम जो मानवजाति का प्रतिनिधि था, उसमें और यीशु जो सिद्ध ठहराए हुए लोगों के प्रतिनिधि हैं, एक तुलना है। आदम के कारण दुनिया में गुनाह और मौत आयी। मसीह के द्वारा निर्दोषता आयी और जीवन आया। पौलुस यह बतलाता है कि आदम द्वारा आने वाली मौत से अधिक मसीह द्वारा आने वाला जीवन है। यह भी कि आदम की गलती के परिणाम को जीतने के लिए परमेश्वर ने जो मसीह में किया, वह कितनी बड़ी बात है।

5:12 आदम के अपराध के कारण संसार के सभी लोग अपराधी हैं-उत्पत्ति 2:17; 3:1-19. अपने समान उसने सन्तान उत्पन्न की (उत्पत्ति 4:1) उसके द्वारा दूसरे लोगों में भी यह एक भयानक बीमारी के रूप में फैल गयी। यह हर एक पीढ़ी में व्याप्त है। (उत्पत्ति 8:21; भजन 51:5; 58:3; यिर्म. 17:9)। यह गुनाह की बीमारी मौत लाती है - 6:23. आदम के कारण सभी लोग पापी हो गए हैं। इसलिए, क्योंकि सभी लोग उस समय आदम में थे (इब्रा. 7:9-10 से तुलना करें)। जो उसने किया, वह सब उन लोगों ने किया। पृथ्वी पर वह मात्र एक व्यक्ति था जो सारी मानवजाति का प्रतिनिधि था।

5:13-14 "नियमशास्त्र"- वे आज्ञाएँ जो मूसा द्वारा परमेश्वर ने दी थीं। पौलुस का मतलब यह रहा होगाः नियम दिए जाने से पहले लोगों ने गुनाह किया था। किन्तु जैसे आदम ने दी गयी आज्ञा को तोड़ा था, उन लोगों ने ऐसा नहीं किया (उत्पत्ति 2:17)। वे मरे ज़रूर लेकिन अपने गुनाहों के कारण नहीं। शिशु जो अबोध थे, वे भी मरे। मौत ने आदम से मूसा तक लोगों पर राज्य क्यों किया? आदम के गुनाह के कारण। आने वाले उद्धारकर्ता को भी आदम कहा गया, लेकिन यह आदम यीशु हैं (यीशु को 1 कुरि. 15:45 में "अन्तिम आदम" कहा गया है।) आदम मसीह का एक नमूना या प्रकार कैसे है? गुनाह के सन्दर्भ में नहीं, क्योंकि मसीह निर्दोष थे (2 कुरि. 5:21; इब्रा. 4:15; 7:26; 1 पतर. 2:22)। यहाँ केवल एक बात में यीशु आदम का एक "प्रकार" "नमूना" या "तस्वीर" हैं - जिस तरह से एक व्यक्ति के आज्ञा न मानने से बहुत

पाप के होने की बात ही नहीं। 14इसके बावजूद मौत ने आदम से लेकर मूसा तक शासन किया। उन लोगों पर भी, जिन्होंने 'आदम की आज्ञा न मानने के समान' अपराध नहीं किया था। आदम दूसरे "आने वाले" का ही एक नमूना है।

15लेकिन मुफ़्त ईनाम की तुलना अपराध से नहीं की जा सकती। क्योंकि जिस तरह एक व्यक्ति के अपराध के कारण बहुत से मर गए, उसी तरह एक ही इन्सान (यीशु मसीह) की कृपा द्वारा परमेश्वर की कृपा से ईनाम बहुत लोगों तक है। 16इस ईनाम की तुलना पाप के उस परिणाम से नहीं की जा सकती है, जो प्रथम मनुष्य आदम के आज्ञा न मानने से हुआ था। क्योंकि न्याय एक व्यक्ति के द्वारा आया और उससे लोग दोषी ठहरे, लेकिन जो मुफ़्त धार्मिकता (निर्दोषता) तमाम अपराधों के बाद आयी, वह हमारे धर्मी (निरपराध) ठहराए जाने के लिए थी। 17इसलिए कि जब एक इन्सान के अपराध के कारण मौत ने राज्य किया तो और कितना अधिक जो लोग कृपा की भरपूरी और धार्मिकता (निर्दोषता) के ईनाम को पाते हैं, जीवन में उस ही यीशु मसीह के द्वारा राज्य करेंगे।

18इसलिए जिस तरह से एक व्यक्ति के अपराध के कारण सज़ा सभी लोगों के ऊपर आयी और सभी दोषी ठहरे, उसी तरह से एक मनुष्य के सही कदम से सारी मानवजाति का मुफ़्त ईनाम निर्दोषता है। 19इसलिए कि जिस तरह एक व्यक्ति के आज्ञा न मानने से बहुत लोग अपराधी ठहरे, उसी तरह से एक व्यक्ति के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहराए जाएँगे।

से लोगों पर प्रभाव पड़ा, उसी तरह मसीह के आज्ञा मानने से असंख्य लोगों पर असर पड़ा। आदम में होने (सन्तान होने के) की वजह से सभी मरते हैं (पद 15)। जो मसीह पर विश्वास करते हैं, मसीह के कारण सदा जीवित रहेंगे (पद 18,19)।

5:15 "ईनाम"- पद 17; 6:23; इफ़ि. 2:8-9.

"बहुत"- इसका अर्थ है आदम की सन्तान। बगीचे में आदम के अपराध के कारण सभी मरते हैं। यह निश्चित है। मसीह के कार्य के कारण सारी मानवजाति में परमेश्वर की दया बहती है। इसका अर्थ यह नहीं, कि सभी गुनाहगार क्षमा पा जाते हैं। जो मसीह पर विश्वास करते हैं; उन्हें यह क्षमा वाली दया मिलती है।

5:16 "न्याय", परमेश्वर का न्याय था कि "तुम अवश्य मरोगे" (उत्पत्ति 2:17), परमेश्वर की ओर से दण्ड था। आदि पिता आदम के एक अपराध के फलस्वरूप यह दण्ड सभी मनुष्यों पर आ पड़ा। दूसरी ओर परमेश्वर का वरदान केवल आदम के एक गुनाह से नहीं बचाता है, किन्तु इतिहास में किए गए अनगिनित गुनाहों से। आदम के आज्ञा न मानने से लोग अपराधी ठहरे, किन्तु परमेश्वर की दया से सज़ा हट जाती है और उनके विश्वास करने से उन्हें निर्दोष ठहराया जाता है (3:22-24)।

5:17 "मौत ने राज्य किया"- पद 14,21. सभी मनुष्यों को मरना था। निर्दयी शासक ने सब को निगल लिया था। इस मौत से बचाव के लिए परमेश्वर ने मसीह के द्वारा एक रास्ता निकाला। वे सभी जो इस राह पर हैं, जीवन में शासन करते हैं। मौत नामक राजा के आधीन रहने के बजाए वे अनन्त जीवन हासिल करते हैं और मसीह में राजा भी बन जाते हैं। (यूहन्ना 5:24; 11:25-26; इफ़ि. 2:6; प्रका. 3:21; 22:5)। मसीह में होने के कारण हम जो हारे हुए थे, अब जीतने वाले हैं (8:37) से तुलना करें।

5:18 "सज़ा"- पद 16

"सही कदम"- शायद मसीह की धार्मिकता का समर्पण जो अधर्मियों के लिए बलि था।

"सारी मानवजाति"- परमेश्वर ने सभी लोगों के लिए सदा के जीवन का प्रबन्ध किया है। केवल विश्वास करने वालों को यह मिलता है।

(1 यूहन्ना 5:11-12; यूहन्ना 3:36; 7:37-38)। निर्दोष ठहराए जाने और सदा के जीवन में निकट का सम्बन्ध है। दोनों साथ-साथ चलते हैं।

5:19 "आज्ञा न मानने से"- उत्पत्ति 3:6.

"आज्ञा मानने से"- फ़िलि. 2:8. 12-19 में एक दूसरे का विरोधी होना साफ़ दिखता है। आदम और मसीह दो अलग-अलग स्त्रोत हैं, जिनसे लोग प्राप्त करते हैं। आदम पाप, मृत्यु और दण्ड का स्त्रोत है। मसीह धार्मिकता, जीवन और दया के, जो दोष हटाकर परमेश्वर के साम्हने लोगों का स्वीकार योग्य बनाते हैं।

20इसके अलावा नियमशास्त्र इसलिए
आया ताकि बुराई का खुलासा हो सके।
किन्तु जहाँ पाप का खुलासा हुआ, कृपा
और अधिक बढ़ गयी। 21ताकि जिस
प्रकार से पाप ने मौत में शासन किया,
वैसे ही कृपा भी (अनुग्रह, फ़ज़ल) प्रभु
यीशु मसीह के द्वारा सदाकाल के जीवन
में प्रगट हो (राज्य करे)।

6 तो हम क्या कहें? क्या हम दुष्टता
(पाप, गुनाह) में इसलिए बने रहें,
ताकि बहुत अधिक मात्रा में शर्तहीन कृपा
हासिल कर सकें 2बिल्कुल नहीं। यह
कैसे संभव है कि जब हम एक बार दुष्टता
(पाप) के लिए मर चुके (या यीशु मसीह
ने सज़ा को अपना लिया), फिर से दुष्टता
वाला जीवन जीएँ? 3क्या तुम्हें यह नहीं

5:20 "नियमशास्त्र"-पद 13,14 इसलिए कि आज्ञाएँ तोड़ी जाती हैं, अपराध बढ़ता है। जब आज्ञाएँ नहीं हैं, तो तोड़ने का सवाल ही नहीं (4:15) 7:7-12 में पौलुस दिखाता है कि परमेश्वर की आज्ञाएँ गुनाह को बढ़ाती हैं। नियमों को देने में उद्देश्य यह नहीं था कि वह गुनाह को बढ़ने देना चाह रहे थे (बिना आज्ञा और नियम के वह बढ़ रहा था - उत्पत्ति 6:5,11; 8:21), लेकिन इसलिए कि लोग दया की आवश्यकता को जानें और उनकी दया सारी महिमा और सामर्थ में प्रगट हो।

5:21 "पाप ने मौत में शासन किया"- पद 14,17 गुनाह के कारण मौत ने शासन किया। गुनाह बहुत ही क्रूर है, जो अपनी सेवा करने वालों को मौत रूपी मेहनताना देता है (6:23; यूहन्ना 8:34)। परमेश्वर की दया, मृत्यु और गुनाह से अधिक सामर्थी है। यह पाप को नाश करती है। लोगों को धर्मी बनाकर सदा के जीवन में प्रवेश कराती है (6:23; तीतुस 3:3-7)।

मसीह के द्वारा दया शासन करती है (इब्रा. 4:16)। जो लोग विश्वास करते हैं, उनके गुनाह माफ़ कर देती है। उन्हें गुनाह के क्रूर शासन, मृत्यु से छुड़ाकर उनके दोष को पूरी तरह से दूर करती है (6:14; 8:1)। यहाँ दो मालिक हैं - वह गुनाह जो आदम से आया (पद 12) और वह कृपा जो मसीह से आयी (पद 17; यूहन्ना 1:16-17)। हमें चुनाव करना है कि किस मालिक की सेवा करेंगे।

6:1 पौलुस ने कहा था कि जहाँ गुनाह बढ़े, वहाँ दया भी बढ़ी (5:20) कुछ दुष्ट लोग पौलुस की शिक्षा को न जानने के कारण सवाल कर सकते हैं, ऐसा लगता है कि दुष्टता में बने रहने से अच्छा प्रतिफल मिलता है - परमेश्वर से अधिक कृपा मिल जाती हैं। इसलिए खूब अधर्म करें और माफ़ी के लिए भरपूर कृपा प्राप्त करें।

जो व्यक्ति मसीह के संदेश पर भरोसा कर चुका है, उसके लिए ऐसा प्रश्न या सलाह कितनी नासमझी और मूर्खता होगी। दो बार वह पूछता है, "क्या तुम्हें नहीं मालूम? (पद 3,16)। दो और बार (पद 6,9) वह "जानते" शब्द का उपयोग करता है। पौलुस अच्छी तरह से जानता था कि परमेश्वर शिष्यों को सिद्ध स्वीकार करते हैं, ताकि वे पवित्र जीवन जीएँ या "नए जीवन की सी चाल चलें" (4)। इस विषय पर वह अध्याय आठ के अन्त तक चर्चा करता है। यूहन्ना 17:17-19 में पवित्र किए जाने पर देखें।

6:2 "बिल्कुल नहीं"- 3:30 पद 1 में पूछे गए प्रश्न का यह संभावित प्रश्न है क्यों? इसलिए कि विश्वासी "पाप के लिए मर चुके"। यह मृत्यु कैसे आयी? 6 और 8 पद उत्तर देते हैं" - "क्रूस पर चढ़ाए गये" "मसीह के साथ मर गए"। अपनी मृत्यु और जी उठने में मसीह सम्पूर्ण विश्वासियों की देह के प्रतिनिधि और प्रधान हैं। परमेश्वर इस प्रकार से देखते हैं कि जो कुछ मसीह को हुआ वह उनके विश्वासियों हुआ। वह उनके स्थान पर खड़े होने के साथ-साथ उनके प्रतिनिधि भी हैं। परमेश्वर की निगाह में विश्वासी जो कुछ अपने पापमय स्वभाव में पहले थे (या जो पुराना जीवन था), वह सब क्रूस पर चढ़ाया गया है समाप्त हो गया।

6:3-4 यहाँ पौलुस किस "बपतिस्मे" की बात कर रहा है? यह यूनानी भाषा का है। यदि इस शब्द का अनुवाद करें, तो कुछ इस तरह पढ़ा जाएगा - हम सभी जो मसीह में डुबाए गए, उनकी मृत्यु में डुबोए गए थे। इसलिए इस मृत्यु में डुबोए जाने से, हम उनके साथ दफ़नाए गए थे। इसलिए डुबोए जाने का अर्थ पानी में डुबोना नहीं मसीह में डुबोना होगा। यह उनके साथ एक खास सम्बन्ध में शामिल होना, पवित्र आत्मा के द्वारा उनकी देह का अंग बनना, मसीह के साथ एक होने को दिखाता है। (1 कुरि. 12:12-13; यूहन्ना 17:21,23)।

मालूम कि हम जितनों को यीशु मसीह में बपतिस्मा दिया गया, वह यीशु की मौत में बपतिस्मा था। 4इसलिए हम बपतिस्मे में यीशु के साथ मौत में गाड़े गए, ताकि जिस तरह से परमेश्वर की शक्ति से यीशु मसीह जिलाए गए, हम उसी तरह जीवन के नयेपन में जी सकें।

5क्योंकि यदि हम यीशु की मौत की समानता में जोड़ दिए गए हैं, तो हम उनके जी उठने की समानता में भी जोड़ दिए जाएँगे। 6हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व (पुराना जीवन) यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया था, ताकि गुनाह (पाप) का शरीर बेकार हो जाए और अब से हम पाप की सेवा न करें। 7क्योंकि जो मसीह के साथ मर चुका है, वह गुनाह से मुक्त किया जा चुका है और धर्मी है।

8अब यदि हम मसीह के साथ मर चुके हैं, हमें विश्वास है कि हम मसीह के साथ जीवित भी रहेंगे। 9यह जानते हुए कि मसीह जो मरे हुओं में से जिलाए गए, फिर से मरेंगे नहीं। अब उनके ऊपर मौत का अधिकार

बाईबल में बपतिस्मा देना या बपतिस्मे का अर्थ कई स्थानों पर एक अलंकारिक भाषा में है। देखें लूका 12:50; 1 कुरि. 10:2. जिन आत्मिक सच्चाइयों के विषय पौलुस यहाँ सिखाता है, पानी का बपतिस्मा उनकी ओर इशारा करता है। पानी में उतरना मसीह के साथ मरने और गाड़े जाने को दिखाता है। पानी से बाहर आना मसीह के साथ जी उठने को दिखाता है। पानी के बपतिस्मे पर नोट्स मत्ती 3:6; 28:19; मरकुस 16:16; प्रे. काम 2:38 में देखें। आत्मा के बपतिस्मे पर प्रे. काम 1:5 में। मसीह में जो कुछ परमेश्वर ने हमारे लिए किया, उसका अभिप्राय यह था, "कि हम नया जीवन जीएँ", एक जी उठा हुआ जीवन, पाप की गुलामी और आत्मिक मौत से आज़ादी का जीवन। देखें 2 कुरि. 5:17; तीतुस 2:11-14.

6:5 "जोड़ दिए गए हैं"- यह मुख्य शब्द हैं। विश्वासी मसीह में हैं। 8:1; यूहन्ना 15:4; इफ़ि. 1:3-4; फ़िलि. 1:1; कुल. 1:2) और मसीह के साथ एक हैं (12:5; 1 कुरि. 6:15,17; 12:13. यूहन्ना 17:21-23 के नोट्स देखें)। जैसे मृत्यु उनकी मृत्यु है उनका जी उठना भी उनका है (इफ़ि. 2:6; कुल. 2:12; 3:1)।

6:6 "हमारा पुराना मनुष्यत्व (पुराना जीवन)"- जो कुछ भी मसीह में नए लोग या विश्वासी बनने से पहले थे।

"क्रूस पर चढ़ाया गया"- यह ऐसा कुछ नहीं, जिसे हम स्वयं करते हैं। जब मसीह 30 ए. डी. में क्रूस पर चढ़ाए गए विश्वासी उनके साथ क्रूस पर चढ़ाए गए थे। (पद 2; गल. 2:20)।

"गुनाह (पाप) का शरीर"- का अर्थ है विश्वासियों की देह में रहने वाला बुरा स्वभाव। जिस प्रकार हमारी देह नाश नहीं की गयी जब मसीह हमारे स्थान पर मरे, उसी प्रकार यह स्वभाव भी नाश नहीं किया गया। किन्तु मसीह की मौत यह संभव करती है, कि वह हमें इस गुनाह के स्वभाव की ताकत से छुड़ाए (पद 14,22; 5:21)। परमेश्वर की दया के कारण अब ज़रूरी नहीं कि हम इसकी गुलामी में रहें (8:4; गल. 5:16-25; इफ़ि. 4:22-24; कुल. 3:5-10)।

6:7 परमेश्वर की निगाह में हम ने आदम में होकर गुनाह किया और मसीह में मरे भी (2 कुरि. 5:14; कुल. 3:3)। आदम के अपराध के कारण हम पर सज़ा आयी (5:16,18)। मसीह की मौत के कारण इस से आज़ादी मिली। मसीह के साथ मरने के कारण हम पाप से आज़ाद (सज़ा मुक्त) किए गए। गुनाह के साथ सम्बन्ध तोड़ दिया गया। हमारे नाम पर अब कोई अपराध लिखा नहीं हुआ है (4:7-8)। मसीह के दुखों और मौत के कारण हमारे गुनाहों के लिए कीमत चुका दी गयी है। ऊपर लिखी सभी बातें प्रत्येक विश्वासी के जीवन की सच्चाई हैं न कि कुछ सुपर विश्वासियों की।

6:8 पद 4 मसीह के साथ विश्वासी अब उस नए आत्मिक जीवन को जीते हैं, जिसे सृजनहार ने उन्हें दिया है (यूहन्ना 5:24; 14:23) उसके साथ वे सदा जीएँगे (1 थिस्स. 4:17)।

6:9-10 मृत्यु पाप का परिणाम है (5:12; 6:23)। विश्वासियों के गुनाहों की सज़ा रूप में मसीह मरे (3:25; यूहन्ना 1:29; 1 कुरि. 15:3)। अब वह सदा के लिए जीवित हैं (प्रका. 1:18)। वे परमेश्वर के लिए जीवित हैं, ताकि जग के मालिक को प्रसन्न करें, उनकी इच्छा पूरी करें (यूहन्ना 8:29) न स्वयं और पाप के लिए।

नहीं रह गया। 10क्योंकि जब वे एक बार मर गए, तो यह मौत पाप के लिए सदा काल की मौत थी, किन्तु जो जीवन वह जीते हैं वह परमेश्वर के लिए जीते हैं।

11इसी प्रकार तुम भी अपने आप को पाप के लिए मरा (कि यीशु ने हमारी सजा़ को ले लिया), लेकिन हमारे स्वामी यीशु मसीह के द्वारा, परमेश्वर के लिए जीवित समझो। 12इसलिए मरनहार देह के ऊपर पाप को अधिकार मत दो, कि तुम इसकी लालसाओं की मानो। 13अपनी देह के अंगों को अधार्मिकता के हथियार होने के लिए पाप को मत सुपुर्द करो, लेकिन मरे हुओं में से जी उठे हुओं के समान खुद को और देह के अंगों को सही चाल-चलन के हथियार होने के लिए परमेश्वर को सौंप दो। 14पाप तुम्हारे ऊपर शासन न कर सके, क्योंकि तुम नियमशास्त्र के आधीन नहीं, शर्तहीन असीमित कृपा (अनुग्रह) के आधीन हो।

15तो फिर क्या? इसलिए कि हम नियमशास्त्र के आधीन नहीं असीमित कृपा के आधीन हैं, क्या हम पाप में बने रहें? बिल्कुल नहीं। 16क्या तुम यह नहीं जानते हो, कि तुम गुलाम के रूप में जिसकी आज्ञा

6:11 इन ऊपरी बातों में विश्वासियों को मसीह के समान बनना है और जिस तरह यीशु का जीवन था, वैसा जीवन जीना है। नसीह की तरह विश्वासियों के ऊपर भी मौत का अधिकार नहीं हैं (यूहन्ना 11:25-26)। जैसे परमेश्वर समझते हैं, उन्हें भी समझना चाहिए - वह यह कि जब मसीह मरे, वे भी मर गए और उन में नए जीवन के लिए जी उठे हैं।

6:12 पौलुस यह नहीं कहता है, कि विश्वासियों की इस सांसारिक देह में गुनाह या पापी स्वभाव का अंश नहीं है (वह जानता था कि ऐसा ह - 7:18,25; गल. 5:17; इफ़ि. 4:22; 1 यूहन्ना 1:8. वह कहता है, कि उन्हें गुनाहों को अवसर नहीं देना चाहिए कि वह "शासन" करे (5:21)। विश्वासियों के जीवन का स्वामी, गुनाह नहीं होना चाहिए (पद 14; यूहन्ना 8:31-36)।

6:13 परमेश्वर विश्वासियों को "मौत से जीवन" में ला चुके हैं (यूहन्ना 5:24)। अब उन्हों ने अपने पैर, हाथ, आँखें, कान और मुँह अपने पुराने स्वामी गुनाह को नहीं देना चाहिए। अब उनके पास एक नए मालिक सच्चे और जीवित पिता हैं। अब जो कुछ वे हैं उनके पास है, वह सब उस परमेश्वर को देना चाहिए। (12:1)। न ही बुराई और न ही उन्हों ने स्वयं को मालिक बनना चाहिए, किन्तु मात्र परमेश्वर को। यदि यहाँ विश्वासी असफल होते हैं, तो गुनाह तैयार बैठा रहता है ताकि झपटकर फिर से उन्हें गुलाम बना ले।

6:14 जो परेशान हैं और गुनाह से सताए जाते हैं, यहाँ पर संभव सब से मीठा सत्य है। हम यह न सोचें कि परमेश्वर के कानून को पालन करने या "अच्छा" बनने से हम गुनाह पर जीत हासिल कर सकते हैं। केवल परमेश्वर की सहायता गुनाह के शिकंजे को फेंकने में सहायक हो सकती है - वह अनुग्रह जिससे हमें गुनाह की माफ़ी, सदाकाल का जीवन, पवित्र आत्मा एवं पाप से लड़ाई के लिए बल मिलता है।

"नियमशास्त्र के आधीन नहीं"- 7:1-4 से तुलना करें।

"कृपा के आधीन"- 5:21 - एक मधुर एवं सामर्थी मालिक।

6:15 1 पद। यह प्रश्न इसलिए उठता है क्योंकि सामान्य लोग सोचते हैं कि नियमों को ज़बरदस्ती लागू करने से अपराध को रोका जा सकता है। यदि ऐसे लोग पौलुस की असीम दया के बारे में विचारों को नहीं समझेंगे, तो कहेंगे कि वह तो अपराध करने की पूरी छूट दे रहा है। किन्तु यह नासमझी है। सच पूछें तो वह गुनाह से बचने का तरीका बता रहा है। खुश की खबर सृष्टिकर्ता की ऐसी शक्ति है जो मुक्ति देती है (1:16) यह लोगों को सृष्टिकर्ता का सच्चा सेवक बनाती है।

6:16 लोग यह सोच सकते हैं, कि वे पाप करने के लिए "आज़ाद" हैं। उनका पाप में बना रहना प्रगट करता है, (बर्बादी) कि उनके पास कोई आज़ादी नहीं है और वे गुनाह के गुलाम हैं (यूहन्ना 8:34; 2 पतर. 2:19) जब वे गुनाह करते हैं, गुनाह को उनके ऊपर अधिकार मिलता है और वह उन्हें अपने वश में रखता और बारम्बार वही करने को प्रेरित करता है। अन्त में मौत को उत्पन्न करता है। हमारे लिए एक और बात संभव है। यह परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता है, जिसका अर्थ है, गुनाह का इन्कार करना और अपने आपको उसके लिए मृतक जानना। यह सही जीवन का पथ है। इन दोनों के बीच का कोई मार्ग नहीं है। मत्ती 7:13-14 से तुलना करें।

मानने के लिए अपने आप को दे देते हो, उसी के तुम गुलाम हो। या तो गुनाह के गुलाम, जो मौत तक ले जाता है या आज्ञाकारिता के गुलाम, जो धार्मिकता (खरे-जीवन) की ओर ले चलती है। 17परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि हालाँकि तुम गुनाह के गुलाम थे तुम ने मन से उस शिक्षा को माना है, जो तुम्हें दी गयी है। 18इसलिए अनुग्रह से आज़ाद किए जाने के बाद तुम सच्चाई के गुलाम बन गए।

19गुलामों और उनके रखने वालों का उदाहरण देकर मैं कहता हूँ, क्योंकि इस तरह से समझना आसान है। पहले तुम अशुद्धता और कानूनहीनता (बलवईपन) के गुलाम थे। अब खरे जीवन के गुलाम होने का चुनाव तुम्हें करना ही चाहिए, ताकि तुम (व्यवहार में) पवित्र हो जाओ। 20क्योंकि जब तुम गुनाह के गुलाम थे, तब तुम्हें इस बात की फ़िक्र नहीं थी कि जो कुछ उचित है वही किया जाए। 21जिन बातों में अभी तुम शर्म महसूस करते हो, पुराने समय में तुम्हें उन बातों से क्या फ़ायदा होता था? क्योंकि उन सभी बातों का अन्त मौत है। 22लेकिन अब पाप (पाप की सज़ा) से मुक्त होकर, परमेश्वर के

"गुलाम" या "नौकर"-यह यूनानी शब्द का सही अर्थ लगता है, जिसका मतलब नौकर या दास है। यहाँ दास या गुलाम यूनानी भाषा के अधिक निकट है।

6:17-18 यह देखें कि विश्वासियों को आज़ादी कैसे मिलती है। यह खुशी की खबर और मसीह की शिक्षाओं का मानना है। "मन से उस शिक्षा" मानने पर ध्यान दें। अपने अपराधों को छोड़ने और याहवे के सेवक बनने के लिए उन पर ज़ोर नहीं डाला गया था। वे अपने मत से ऐसा करना चाहते थे।

6:18 "सच्चाई के गुलाम"- यह दयालु मालिक परमेश्वर के प्रति खुशी से उनकी इच्छा पूरी करने के लिए समर्पण था, यह बन्धुआ गुलामी नहीं थी।

6:19 पद 13 "गुलाम" विश्वासी इस नए मालिक से बन्धे हुए हैं (पद 18)। किन्तु उन्हों ने इस सत्य के आधार पर इच्छा से जीना चाहिए। अपने विचारों में, रवैयों और कार्यों में, उनको धार्मिकता से बचकर भागना नहीं चाहिए। यह "गुलामी" उन्हें इस पृथ्वी पर प्रसन्नता, परमेश्वर की सेवा में आज़ादी और उस परमेश्वर का आनन्द उठाने में सहायता करती है (तुलना करें मत्ती 5:6,10; 6:33)। भला करने के लिए ऐसे लोगों पर दबाव डालने की आवश्यकता नहीं। वे पूरे मन से अच्छा करना चाहते हैं। मसीह में सच्चा विश्वास यही उत्पन्न करता है। इसका अर्थ यह नहीं कि विश्वासियों के साम्हने गलत करने की संभावना नहीं होती, और वे गलत करते नहीं। 7:18 से तुलना करें। इसका अर्थ है, कि वे अपना जीवन खराई से बिताना चाहते हैं।

"चुनाव तुम्हें करना" या "समर्पित करना"- पद 13; 12:1-2 इसका परिणाम जीवन की पवित्रता ही है।

6:20 एक व्यक्ति के पास एक ही समय में गुनाह और यीशु दोनों ही उसके मालिक नहीं हो सकते (मत्ती 6:24 से तुलना करें) पौलुस यह नहीं कहता कि पाप के गुलाम मनुष्य की दृष्टि में धर्मी कहलाने वाले कार्यो को नहीं कर सकते या वे धर्मी नहीं दिख सकते (वे बहुत धार्मिक हो भी सकते हैं) जीवन में स्वामी कौन है वह इसकी ओर इशारा कर रहा है। परमेश्वर की दृष्टि में गुनाहगारों के अच्छे काम भी गुनाहों से कलंकित हैं (यशा. 64:6)।

सच पूछें तो वे पाप की सेवा में किए जाते हैं।

6:21 रोम के विश्वासियों ने पूरी तरह से मन बदला था और स्वयं को परमेश्वर के प्रति सौंप दिया। वे अपने पुराने जीवन से शर्माते थे। यदि कोई व्यक्ति विश्वासी होने का दावा करता है और अपने पुराने जीवन के गुनाहों से लजाता नहीं, तो सचमुच उसके जीवन में कुछ गड़बड़ी है। वह कभी भी वापस पुराने गुनाहों में जा सकता है (2 पतर. 2:22)। किसी के लिए भी गुनाह के जीवन का अन्त मौत ही है, चाहे वह कुछ भी क्यों न कहे।

6:22 पवित्रता और सदा के जीवन को प्राप्त करने का अर्थ है, परमेश्वर का "गुलाम" बनना। परमेश्वर की छुड़ाई हुयी सम्पत्ति बनना और परमेश्वर की वाणी सुनने के लिए राज़ी होना। आत्मिक आज़ादी का यही तक तरीका है (गल. 5:1,13; यूहन्ना 8:36)। तभी हमें अपनी इच्छा से खुशी के साथ परमेश्वर की सेवा करने की आज़ादी मिलती है।

गुलाम बन गए हो। अब तुम वह सब करते हो जिससे पवित्रता मिलती है और जिसका परिणाम है-हमेशा (सदाकाल) का जीवन (या परमेश्वरीय जीवन)

23इसलिए कि पाप (गुनाह) की मज़दूरी मौत है, लेकिन हमारे स्वामी यीशु मसीह में परमेश्वर का ईनाम अनन्त जीवन (कभी खतम न होने वाला परमेश्वरीय जीवन) है।

7 हे भाइयो-बहनो क्या तुम्हें यह नहीं मालूम-कि मैं उन लोगों को लिख रहा हूँ जिन्हें परमेश्वर के दिये गये नियमों का ज्ञान है, वह यह कि इस पृथ्वी के जीवन भर, एक व्यक्ति उन नियमों का पाबन्द है? 2उदाहरण के लिए जब तक पति जीवित है, तब तक कानून के हिसाब से एक शादी-शुदा स्त्री अपने पति से बन्धी है, किन्तु जब उसका पति मर जाता है, तब वह विवाह के कानून से मुक्त हो जाती है। 3इसलिये यदि उसके पति के जीते जी वह किसी दूसरे व्यक्ति से शादी करती है, वह वेश्या कहलाएगी। किन्तु यदि उसका पति मर जाता है, तो उसके पति के साथ उसका वैवाहिक बन्धन टूट जाता है। ऐसे में किसी पुरुष से विवाह करने पर वह वेश्या नहीं हुई।

4इसलिए मेरे भाइयो-बहनो, तुम मसीह की देह से नियमशास्त्र (मूसा द्वारा परमेश्वर के दिए हुए नियमों) के लिए मर गए, ताकि तुम मरे हुओं में से जिलाए जाकर मसीह के हो जाओ और परमेश्वर के लिए फल (पवित्रता) लाओ। 5जब हम बुरे स्वभाव

6:23 16-22 में दुष्टता की गुलामी और परमेश्वर की गुलामी में तुलना है। गुनाह अपने गुलामों को मौत के रूप में मज़दूरी देता है। यह मौत सदा के लिए परमेश्वर से अलग का जीवन है (प्रका. 21:8; 2 थिस्स. 1:8-9; मत्ती 25:41)। गुनाह के गुलामों को वही मिलता है जिसके वे लायक हैं और जो कुछ वे कमाते हैं। परमेश्वर अपने गुलामों को मज़दूरी नहीं, इनाम देते हैं। इसके वे लायक नहीं होते हैं और इसे कमा भी नहीं सकते है (देखें 4:4-5; 5:17; लूका 17:10; इफ़ि. 2:8-9; यूहन्ना 3:16; 4:14. कोई व्यक्ति परमेश्वर का "गुलाम" कैसे बनता है? अपने मन परिवर्तन के साथ मसीह पर विश्वास करने के द्वारा। सभी विश्वासी परमेश्वर की खरीदी हुयी दौलत हैं और सेवा का मन रखते हैं। वे इसलिए उसकी सेवा नहीं करते कि अनन्त जीवन हासिल करें, लेकिन इसलिए क्योंकि उनके पास अनन्त जीवन है।

7:1 जिन नियमों को परमेश्वर द्वारा मूसा को दिया गया, उसे मर जाने वाले लोगों पर अधिकार नहीं था। पौलुस ने कहा है कि विश्वासी मसीह में मर चुके हैं (6:6-8)। इसी कारणवश वे उन नियमों की आधीनता में नहीं हैं (6:14)। वे नियम उन्हें दोषी नहीं ठहरा सकते हैं और वे सुरक्षित हैं।

7:2 उत्पत्ति 2:24; मत्ती 19:3-9 । मूसा के नियम किसी पत्नी को यह अनुमति नहीं देते हैं कि वह अपने पति को तलाक दे।

7:3-4 स्त्री के पहले पति की मौत से उसे आज़ादी मिली है, कि वह किसी और पुरुष से विवाह करे। आत्मिक रीति से पहला पति कौन है? कुछ कहते हैं कि वह मौत से पहले नियमशास्त्र के आधीन यीशु मसीह हैं (गल. 4:4)। अधिक लोगों का मत है कि मूसा द्वारा दिया गया नियमशास्त्र है। विश्वासी के सम्बन्ध में यह नियमशास्त्र तब मर गया जब यीशु मसीह मर गये। चाहे पहला पति नियमशास्त्र है या नियमशास्त्र के आधीन यीशु मसीह। मुख्य बात जो पौलुस कहना चाहता है, वही है कि जब मसीह मरे, विश्वासी मर गए (6:6,8)। मरे होने के कारण वे नियमशास्त्र के अधिकार से छूट गए। वे आत्मिक "पति" रखने के लिए आज़ाद हैं। परमेश्वर के साथ नया सम्बन्ध रखने के लिए आज़ाद। मसीह को अपना स्वामी और मुक्तिदाता स्वीकार करने से वे उसकी "दुल्हन" बन जाते हैं। मत्ती 22:2; यूहन्ना 3:29; 2 कुरि. 11:2; इफ़ि. 5:25-33; प्रका. 19:7. मसीह और विश्वासियों के इस एक होने के उद्देश्य को देखें - परमेश्वर के लिए आत्मिक फल लाने के लिए। यूहन्ना 15:1-8 देखें।

7:5 नियमों-आज्ञाओं ने बुरी इच्छाओं को उत्पन्न किया। देखें पद 7-9; 3:20; 4:15; 5:20. जिस कार्य को करने पर दोष लगता है, उसे करने की इच्छा मनुष्य में होती है। मना किया हुआ फल मीठा लगता है। किन्तु इस सब का परिणाम मौत है (6:16,21,23)।

(पुराने स्वभाव) के वश में थे, तब नियमों
की आधीनता की वजह से उठी बुरी
अभिलाषाएँ हमारे देह में कार्य कर रही थीं,
जिससे हम मौत (शारीरिक और अनन्त)
के लिए परिणाम उत्पन्न कर रहे थे। 6जिस
बात ने हमें (यहूदियों को) अपने वश में
रखा था अब उसके लिए मर जाने से हम
नियमों की आधीनता से छुड़ाए गए हैं
ताकि पवित्र आत्मा के नए तरीके से सेवा
करें, न कि रीति-विधियों और बलिदानों
के चढ़ाने से।

7तो हम क्या कहें? क्या नियमशास्त्र बुरा
है? नहीं, बिना नियमशास्त्र के द्वारा बुरा क्या
है, यह मैं जान नहीं पाता, उदाहरण के लिए,
यदि परमेश्वर ने यह दोहराया न होता कि
"तुम लालच मत करो", तो लालच क्या है,
यह नहीं जाना जाता। 8आज्ञा दिए जाने के
कारण मेरे भीतर गुनाह (पाप) ने अवसर
पाकर तमाम प्रकार की लालसा को उत्पन्न
कर डाला। 9एक समय था जब मैं नियमों-
आज्ञाओं से हटकर जीवन बिता रहा था,
किन्तु जब नियम-आज्ञाएँ दी गयी, पाप फिर

"शरीर"- इस यूनानी शब्द 'सार्क्स' से 'सार्की' बना है। यह उस स्वभाव की ओर इशारा है जो लोग स्वभाव से हैं - वे पापमय हैं और अपनी अभिलाषाओं के गुलाम हैं। यह उन सब की ओर संकेत है जो मनुष्य मन, प्राण और शरीर में हैं। 1:18-32; 3:9-19; उत्पत्ति 8:21; यिर्म. 17:9; मत्ती 7:11; 15:19; इफ़ि. 2:1-3; 4:17-19; तीतुस 3:3.

7:6 मूसा के नियम ने हमें अपने वश में' रखा था। इस पद में पौलुस उन नियमों की आधीनता और कृपा और परमेश्वर के आत्मा की आज़ादी में सेवा का विरोध दिखाता है (2 कुरि. 3:6,17 भी देखें)। अध्याय 8 में पौलुस सेवा को परमेश्वर की आत्मा के द्वारा किए जाने पर ज़ोर देता है। वह इसे एक नया मार्ग इसलिए कहता है, क्योंकि जी उठने के बाद परमेश्वर ने अपनी आत्मा को एक नए रूप में दिया है (यूहन्ना 7:38; 14:16-17; प्रे.काम 1:4; 2:4)।

7:7 यह प्रश्न इसलिए उठता है क्योंकि पौलुस के अनुसार नियमशास्त्र ने बुरी इच्छाओं को उत्पन्न किया (पद 5)। यदि यह ऐसा करता है, तो अपने आप में क्या यह बुरी नहीं हुई। नहीं, नियमशास्त्र अपने आप में पवित्र, खरा और भला है (पद 12) किन्तु स्वभाव से लोग अपवित्र, अधर्मी और बुरे हैं (3:9-19)। नियमशास्त्र यह प्रगट भी करता है। नियमों-आज्ञाओं पर दोष नहीं लगाया जा सकता, केवल इसलिए कि लोग इन के विरोध में जाते हैं, यह उनकी कमज़ोरी है। इस में और आगे के पदों में पौलुस यह दिखाता है कि यह सब कुछ उसके जीवन में सच्चाई कैसे बनती है।

उसके स्वयं के सम्बन्ध में विचारों को नाश करने वाली आज्ञा, अभिलाषा के विरोध में थी (निर्ग. 20:17)। सच पूछें, तो अभिलाषा न रखने की आज्ञा ने शायद उसकी अभिलाषाओं को उभारा और उन्हें अधिक तेज किया। मनुष्य का मन बुरी इच्छाओं से भरा हुआ है और परमेश्वर की आज्ञाएँ उसके लिए बिल्कुल नहीं' कहती हैं। किन्तु इस से ये अभिलाषाएँ और अधिक प्रबल और तेज हो जाती हैं। परमेश्वर के नियम शास्त्र के विरोध में विद्रोह "पुराने स्वभाव" का एक हिस्सा है (8:7)।

7:8 जब तक वह अच्छी तरह से यह नहीं समझा सका, कि नियम उसे अभिलाषा नहीं रखने के लिए कह रहे हैं पौलुस ने अपने आप में बुराई (बुरे स्वभाव) या उसके बचे हुए असर को नहीं पहचाना। यह तो ऐसा था मानो, गुनाह अक्रियाशील हो।

7:9 पौलुस पुरानी वाचा में उत्पन्न हुआ था। जब तक उसने मसीह पर भरोसा नहीं रखा तब तक वह नियमों के प्रति उत्तरदायी था। यहाँ इसका अर्थ है, कि एक समय था जब वह सोचता था कि वह आत्मिक रीति से जीवित है, क्योंकि उसने नियम का आत्मिक अर्थ नहीं समझा और यह भी कि भीतरी अभिलाषाओं को यह गलत कैसे ठहराती है। जब उसने अच्छी तरह से यह समझ लिया कि आज्ञा यह है कि बुरी अभिलाषा न की जाए, उसने बुराई की पहचान की। यह भी कि वह बुराई में मरा हुआ था, आत्मिक रीति से जीवित नहीं। "मैं मर गया" उस अनुभव की ओर इशारा है, जो मौत के समान था।

से जागृत हो गया और मैं मर गया। 10जिस आज्ञा से अपेक्षा यह थी कि वह जीवन लाएगी वही मौत लेकर आयी। 11इसलिए कि बुराई (पाप) ने आज्ञा की मदद से फ़ायदा उठाकर मुझे धोखा दिया और मुझे आज्ञा से मार डाला। 12इसलिए परमेश्वरीय आज्ञाएँ पवित्र अच्छी और खरी हैं।

13जो अच्छा है वह क्या मेरे लिए मौत बन सकता है? बिल्कुल नहीं। परन्तु इसलिए कि पाप बुरा ही दिख सके जो कुछ अच्छा था उसने मुझ में मौत पैदा की, ताकि आज्ञा के द्वारा पाप अधिकाई से बुरा दिख सके?

14हम जानते हैं कि नियमशास्त्र आत्मिक है, किन्तु मैं आत्मिक नहीं हूँ, और पाप के हाथ गुलाम के रूप में बिका हुआ हूँ। 15मुझे समझ नहीं आता कि क्या करता

7:10 परमेश्वर द्वारा नियम दिए जाने का एक लक्ष्य था कि उनके लोग अच्छा, ईमानदारी और नैतिकता का जीवन जीएँ। पौलुस के लिये यह मौत थी। उसने नियमशास्त्र के द्वारा बुराई को पहचाना और यह भी कि बुराई का परिणाम मौत है।

7:11 गुनाह के धोखा देने के स्वभाव को देखें। इब्रा. 3:13 से तुलना करें। इस ने पौलुस को नियमों-आज्ञाओं द्वारा जीवन की प्रतिज्ञा दी, किन्तु इस में मात्र मौत ही आयी।

7:12 पद 7

7:13 नियमशास्त्र में कोई खोट नहीं है। मनुष्य की समस्या उसमें पाया जाने वाला अपराधी स्वभाव है। गुनाह क्या है इसे दिखाने के लिए सृजनहार परमेश्वर नियमशास्त्र का उपयोग करते हैं। दूषित मानव स्वभाव नियमों की बात नहीं मानना चाहता न ही वह ऐसा कर सकता है। परमेश्वर की पवित्र आज्ञाओं का तोड़ा जाना बुराई की संपूर्ण भयंकरता को दिखाता है।

7:14 पद 7-13 में पौलुस अपने अनुभव की बात करते समय बीते समय की बात करता है। 14-25 उसने इसे वर्तमान काल में बदल डाला। यह बदलाव महत्व रखता है। ऐसा लगता है कि मसीह में नए जन्म के बाद वह स्वयं में क्या था, पौलुस वह सब बताता है। वह "मैं" "मुझे" "मेरे" और "स्वयं" आदि शब्दों का उपयोग बारह पदों में चालीस बार करता है। वह अन्त में एक बार ही यीशु के सम्बन्ध में कहता है। वह इन में परमेश्वर के आत्मा के विषय बिल्कुल नहीं कहता है। वर्तमान काल में सब कुछ कहकर वह 25 पद में मसीह के द्वारा परमेश्वर को धन्यवाद देता है। उसकी बात का इस प्रकार से वह निचोड़ देता है। यह इस बात का संकेत है कि पिछले पदों में वह उन बातों के विषय कहता है, जो विश्वासी होने के नाते वह अनुभव करता है।

यहाँ 14 पद में जब वह कहता है कि वह शारीरिक और गुनाह के हाथ बिका हुआ है, तो वह यह कहना चाहता है कि स्वभाव से वह क्या है न कि मसीह ने उसे क्या बनाया है। परमेश्वर के आत्मिक नियमशास्त्र ने उसे दिखाया है, कि वह व्यक्तिगत पाप अवस्था में क्या है। केवल एक आत्मिक समझ रखने वाला व्यक्ति ही ऐसी बातें कर सकता है जैसी पौलुस इस पद में करता है। जो लोग मसीह को नहीं जानते हैं, वे मूर्खता के कार्यों या किसी बुरे काम में पकड़े जाने पर अपने आप को कोस सकते हैं। परन्तु जिस प्रकार से पद 14-25 में पौलुस गुनाह के कारण दुखित होता है, हम गुनाह की गहरी कायलता महसूस नहीं कर सकते, जब तक परमेश्वर के आत्मा के द्वारा जागृत नहीं किए जाएँ। इन पदों में दुष्ट स्वभाव के विरोध में बड़ा युद्ध मुक्ति पाए हुए लोगों में पाया जाता है। यह सच है कि अविश्वासी लोग भी अपने जीवन में पाए जाने वाले कुछ बुरे गुणों से असन्तुष्ट हों या संघर्ष करते रहें। वे किसी भी दुर्गण के गुलाम न रहते हुए अपनी सारी इच्छाओं पर नियंत्रण रखना चाहेंगे। किन्तु यह उनके दुष्ट स्वभाव के किसी एक दायरे के विरोध में दूसरे दायरे का युद्ध करना है। उनका लक्ष्य मसीह या परमेश्वर की प्रशंसा के लिए ज़िन्दा रहना नहीं। किन्तु अपनी बड़ाई के लिए, स्वयं को खुश करने के लिए या गलत तरीके से कुछ प्राप्त करना है। उनका संघर्ष वह नहीं है, जिसके विषय में पौलुस यहाँ कहता है।

7:15-24 जो विश्वासी पौलुस के समान अपने गंदे स्वभाव की ताकत के बारे में समझ रखते हैं, उनके पास यही शिकायत होगी जो उसके पास थी। वे अच्छे बनना चाहते हैं। और अच्छा करना चाहते हैं, लेकिन अपने भीतर कुछ बुरा पाते हैं। उनके पास पवित्र इच्छाएँ है, किन्तु अपने स्वभाव में अपवित्रता पाते हैं, जो पवित्र इच्छाओं के अनुसार कार्य करने के प्रयास में रूकावट डालती हैं।

पौलुस ने यह पाया कि बुराई अपनी गुलामी में रखने के लिए उसके जीवन में एक निर्दयी

हूँ, क्योंकि जो कुछ मैं करना चाहता हूँ वह नहीं कर पाता। लेकिन वही करता हूँ जिससे मुझे नफ़रत है। 16यदि मैं वह करता हूँ जो करना नहीं चाहता, मैं यह मान लेता हूँ कि मूसा द्वारा दिए नियम और आज्ञाएँ अच्छी हैं। 17ऐसी स्थिति में इसका करने वाला मैं नहीं, लेकिन मुझ में बसा हुआ पुराना स्वभाव है।

तानाशाह के समान रेंगता रहा। वह जो कुछ भी बनना चाहता था न बन सका। जो करना चाहता था, न कर सका। जो नहीं करना चाहता था, कर देता था।

7:15 "वही करता हूँ जिससे मुझे नफ़रत है"- हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि पौलुस 1 कुरि. 6:9-10 जैसी सूची के गंदे कामों का दोषी रहा होगा। उसने साफ़ कह दिया था जो लोग वैसे कार्य करते हैं, वे परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं करेंगे। किस बात से उसका संघर्ष था, यह उसने इन पदों में नहीं बताया है, लेकिन वह इच्छा जिसे नियमों ने उभारा और जिससे उसके पुराने स्वभाव के असर की भयंकरता प्रगट होती है - पद 7,8,।

परमेश्वर का स्तर (परमेश्वर के प्रेरित पौलुस का) बाहरी व्यवहार भीतरी विचारों, रवैये एवं इच्छाओं के लिए पवित्रता और खराई में पूर्ण था। (2 कुरि. 7:1; मत्ती 6:4-8)। इस स्तर से नीचे का जीवन पौलुस को पसन्द नहीं था। इसलिए जब वह उस स्तर को बनाए नहीं रखता, वह कहता है, जिससे मुझे घृणा आती, वही करता हूँ।

हमें यह जान लेना चाहिए कि जो संघर्ष पौलुस सहता रहा, उसकी कोशिश यह थी कि उसका विवेक परमेश्वर और मनुष्य के साम्हने शुद्ध ठहरे - प्रे.काम 24:16; 2 कुरि. 1:12. मतलब यह है कि जानते-बूझते वह बुराई में नहीं बना रहा।

7:17 पौलुस इस कड़वे सत्य को जानता था, कि एक दुश्मन उसमें है और यह दुश्मन उस से अधिक बलवान है।

"पुराना मनुष्य"- परमेश्वर की निगाह में दोषी ठहराया, क्रूस पर चढ़ाया और, मारा जा चुका है। यह वह ज़िन्दगी है जो यीशु को कबूल किए जाने से पहले की है।

पौलुस परमेश्वर का एक पवित्र जन था और बुरे व्यवहार के लिए बहाना नहीं बना रहा था - वह हमें सिखाने के लिए परमेश्वर के आत्मा द्वारा सिखा रहा था। जैसा उसने स्वयं सब कुछ सीखा और जैसा परमेश्वर देखते हैं; वैसा ही वह बताता है। उसने अपने पापी स्वभाव का पक्ष नहीं लिया, लेकिन घिनौना समझकर उसे अस्वीकार किया वह उसके प्रभाव और उपस्थिति से पूरी तरह से आज़ाद रहना चाहता था। वह अपने कामों के लिए खुद को ज़िम्मेदार समझता है। दूसरे स्थान पर उसने लिखा है कि हम सभी को मसीह के सिंहासन के सामने खड़े होकर भले-बुरे, सभी कार्यों का हिसाब-किताब देना पड़ेगा (2 कुरि. 5:10)।

"....मैं नहीं, लेकिन मुझ में बसा हुआ पुराना स्वभाव है"- (20 पद भी)। यह देखें कि वह अपने और बुरे स्वभाव के बीच भेद करता है। मसीह में नया बनने से पहले, उसके पास पुराना स्वभाव था, इस से अधिक और कुछ नहीं था (हम सभी के विषय में भी यह सत्य है) "मैं नहीं" का अर्थ है एक बड़ा परिवर्तन, वह परिवर्तन जिसके बारे में 4 पद में है। जब मसीह मरे, परमेश्वर की निगाह में पौलुस और हम सभी मर गए (सज़ा पा चुके (6:3-7; गल. 5:24; कुल. 3:3), उसने इसे परमेश्वर द्वारा किया गया कार्य समझा। उसका और सभी विश्वासियों का बुरे स्वभाव से कोई नाता नही। वह मसीह में जीवित था (कुल. 2:11-12 से तुलना करें)। इसलिए उसने दुष्ट स्वभाव को अपना एक भाग बना रहने से इन्कार किया।

जैसा कि हम 1 यूहन्ना 1:8 और बाईबल में दूसरे स्थानों में देखते हैं, गुनाह या उसका असर उसमें जीवित था। किन्तु अब वह एक विदेशी के समान था, जिससे पौलुस नफ़रत कर रहा था। दुष्ट ताकत कोई दुष्टात्मा नहीं, किन्तु उसका पुराना स्वभाव उसका बचा हुआ अंश उसके भीतर बुरी अभिलाषाएँ, बुरी प्रवृत्ति और बुरे कार्य पैदा करता था किन्तु पौलुस, जो मसीह में नया मनुष्य था, जो नियमों के लिए और मसीह के लिए क्रूसित हो चुका था परमेश्वर के आत्मा के द्वारा नयी रीति से पैदा हो चुका था उन बातों को न करना चाहता था और न ही किया। पुराना मनुष्य जो अपनी नियुक्त मौत के स्थान को अस्वीकार करता था, तबाही वाला था। यह पुराना मनुष्य (मसीह में आने से पहले का जीवन) पौलुस को अपने अधिकार में लाकर अपनी इच्छा पूरी कराने का प्रयास करता था। इसलिए कि यह "मैं" नहीं था, जिसने बुराई की "मैं" (मसीह में नया मनुष्य) बुराई के लिए दोषी न ठहरा (4:8 देखें और समझें)। इसलिए नरक दण्ड उन के लिए नहीं जो मसीह में हैं (8:1)। पुराने बुरे स्वभाव से कुछ भी करने से वे अपनी मुक्ति खो नहीं सकते।

18मैं जानता हूँ कि मुझ में अर्थात् मेरी देह
में कुछ भी अच्छा नहीं है। जिस अच्छे
काम की मैं चाह करता हूँ, वह नहीं कर
पाता हूँ, जो बुरा मैं नहीं करना चाहता हूँ,
वही करता रहता हूँ। 19यदि मैं वह करता
हूँ जो नहीं चाहता, तो उसका करने वाला
मैं नहीं हूँ, 20लेकिन मुझ में बसा हुआ बुरा
स्वभाव है।

21मैं यह प्रवृत्ति (गतिविधि) अपने भीतर
पाता हूँ कि जब मैं भला करना चाहता हूँ,
तो बुराई मुझे धर-दबोचने के लिए तैयार
है। 22मैं अपने भीतर परमेश्वर की बातों
से खुश रहता हूँ, 23किन्तु मेरी देह के अंगों
में दूसरे कामों को देखता हूँ, जो मेरे मन
के विचारों से लड़ाई करके मुझे मेरे अंगों
में कार्य करने वाली बुरी कार्य प्रणाली
का गुलाम बनाती है। 24मैं कैसा असहाय
मनुष्य हूँ, मुझे इस मौत की देह से कौन

7:18 यहाँ परमेश्वर ने पौलुस को मनुष्य के "बुरे स्वभाव" (सार्क्स-पद 5) के बारे में सिखाया। आदम से हम सभी ने इसे प्राप्त किया है। तुलना करें। 1:29-32; 3:9-19; 8:5-8; 13:14; उत्पत्ति 5:3; 8:21; यिर्म. 17:9; मत्ती 7:11; 15:19; गल. 5:16-17; इफ़ि. 2:1-3; 1 तीमु. 1:15. वहाँ नोट्स देखें।

पौलुस का कहना यह है कि इस आदम से प्राप्त स्वभाव में कोई आत्मिक अच्छाई नहीं है। हालाँकि इस में कुछ पायी जाने वाली बातों को लोग अच्छे गुण कहते हैं - किन्तु जो लोग अपने बुरे स्वभाव के गुलाम हैं, यह नहीं बता सकते कि परमेश्वर की दृष्टि में क्या अच्छा है, क्या आत्मिक है (लूका 16:15 से तुलना करें)। यह अहम् है क्या, इसे पौलुस यहाँ बताता है। वह जो कुछ कहता है, वह सब मसीह की शिक्षा से मिलता जुलता है। यीशु ने कहा था अपने "स्वयं" की पूरी तरह से मृत्यु की आवश्यकता है? (मत्ती 10:38; लूका 9:23 - यहाँ "प्रतिदिन" शब्द पर ध्यान दें। इस रवैये को प्रतिदिन नया करते रहना चाहिए, नहीं तो यह हम पर शासन करने लगेगा।

यहाँ पौलुस के भीतर अच्छी इच्छा और बुरे कार्यों के बीच एक अन्तर दिखता है। क्या इस आधार पर सभी विश्वासियों को सच्चाई को मान नहीं लेना चाहिए? यह स्पष्ट है कि अपने बुरे स्वभाव के विरोध संघर्ष में पौलुस ने स्वयं में ऐसा कुछ नहीं पाया जो उसे जीत दिलाए। अपने दुष्ट स्वभाव या उसके प्रभाव को हराने के लिए उसके पास कोई साधन नहीं था।

7:19-20 कुछ दूसरे शब्दों में उसी बात की वह कैसे घोषणा करता है पद 15,17.

7:21 "प्रवृत्ति (गतिविधि)"- जो कुछ वह कहता है वह प्रकृति के नियम के समान ही शक्तिशाली है। उसने यह पाया कि यह कभी-कभी होने वाली बात नहीं है। ऐसी भी नहीं जो धीरे-धीरे कमज़ोर हो रही हो। वह सदा अच्छा ही करना चाहता था (यह विश्वासी का नया स्वभाव है। सदा अच्छा करते समय, उसने यह पाया कि बुराई साथ में है, विरोध कर रही है और उसे अपनी ओर करना चाह रही है।

7:22 यह संभव नहीं कि एक बिना मुक्ति पाया हुआ, अविश्वासी ऐसा कहेगा? बिना उद्धार पाए मनुष्य का हृदय (भीतरी भाग) क्या है, बाईबल बतलाती है। ऐसे व्यक्ति का दिल परमेश्वर के नियमों से प्रसन्न नहीं होता है - उत्पत्ति 8:21; यिर्म. 17:9; मत्ती 15:19. पाप में मरे लोग (इफ़ि. 2:1-3) परमेश्वर के पवित्र निमयशास्त्र के समान किसी भी भली वस्तु में प्रसन्न नहीं होते - यहाँ पौलुस कहता है कि नए जन्म में प्राप्त होने वाले नए स्वभाव में या जो कुछ वह मसीह में था, परमेश्वर की सच्चाई में वह प्रसन्न होता था। यहाँ तक कि परमेश्वर की व्यवस्था में जो पवित्र, खरी और अच्छी है। वह भजनकार के साथ कह सकता था "आपकी व्यवस्था में मुझे मज़ा आता है।" "मैं आपकी व्यवस्था से बहुत प्रेम करता हूँ" भजन 119:77,97.

7:23 "दूसरे कामों"- परमेश्वर की व्यवस्था को छोड़कर दूसरी व्यवस्था की ओर 22 पद में वह संकेत करता है। यह वही है जो पद 21 में है। उसकी कठोर भाषा को देखें। यह गतिविधि उसके विरोध में संघर्ष कर के उसे अपना कैदी बनाना चाहती है। दूसरे शब्दों में अपनी बुद्धि और इच्छा-शक्ति की ताकत से वह पुराने स्वभाव पर जीत नहीं हासिल कर सका। बारम्बार हार के बाद अगले पद में अपनी परेशानी प्रगट करता है।

7:24 अपने भीतर की बुराई के इस ज्ञान और अपने अच्छा बने रहने के इस कश-कश में असफ़लता से उसके हृदय में गहरी कराह उत्पन्न हुयी। यह उस व्यक्ति के मन की कराह है, जो अपने गंदे विचारों का सामना करता है। वह जानता है कि उसको बदलने में वह स्वयं असहाय है।

"मौत की देह"- 6:12 देखें जहाँ वह ऐसी भाषा

आज़ाद करेगा? 25मैं अपने स्वामी यीशु मसीह परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ। मैं अपने मन में तो नियम और आज्ञाओं का गुलाम हूँ किन्तु बुरे स्वभाव में पाप की प्रणाली का गुलाम हूँ।

8 इसलिए जो लोग मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं

"मौत की देह" का उपयोग करता है। तुलना करें 6:6 - "पाप की देह"। यह मौत की देह है, क्योंकि इस में गुनाह रहता है (पद 17; 8:10)। पौलुस इस मौत की देह के विषय लिख रहा है। यह देह पापमय स्वभाव या उसके प्रभाव से बंधी हुयी है। दूसरे शब्दों में "सार्क्स" , पापी स्वभाव/पाप का असर देह में रहता है। पौलुस इस मौत की देह से आज़ादी को भविष्य में ही देखता है। 8:23; 1 कुरि. 15:53-54; फ़िलि. 3:21 से तुलना करें। उसने यह कभी नहीं कहा कि इस जीवन काल में यह मिलेगी। किन्तु वह इस बात से इन्कार भी नहीं कर रहा है, कि इस देह में रहने वाले गुनाह पर विश्वासी जीत हासिल कर सकता है। अगले अध्याय में वह साफ़-साफ़ दिखाता है कि हम जीत हासिल कर सकते हैं। जिस व्यक्ति ने पद 18-21 में लिखा था, उसी ने 8:37 और 2 कुरि. 2:14 भी लिखा था। इन दोनों में से कौन सही है? एक ही समय में दोनों ही सही हैं।

7:25 उसी समय मसीह यीशु के द्वारा मौत के शरीर से आज़ादी के लिए, पौलुस परमेश्वर को धन्यवाद देता है (ऐसा वह मसीह में विश्वासी होने के नाते ही कर सकता था। वह इस बात को मान लेता है कि उसके अपराधी स्वभाव के कारण वह गुलामी महसूस करता है। यदि हम उसके कथन को नज़रअन्दाज करें, तो हम पिछले पदों को समझने और अर्थ लगाने में कठिनाई पाएँगे। (ऐसा न्यू टेस्टामैन्ट के कई भागों के बारे में सत्य है) 13:14; गल. 5:16-17; 1 यूहन्ना 1:8 भी देखें। अब सवाल यह उठता है कि विश्वासियों में पाए जाने वाले गुनाह के स्वभाव की ताकत से क्या कोई आज़ादी है क्या वे परमेश्वर की सेवा, आज़ादी और आनन्द से नहीं कर सकते? क्या भीतर के दुश्मन के ऊपर कोई जीत हासिल नहीं होगी? अध्याय 6 में रास्ता है, अध्याय 8 में वह इसे और अधिक स्पष्ट करता है। अध्याय 7 में वह बताता है कि परमेश्वर द्वारा दिए गए नियमशास्त्र या मार्गदर्शन को पूरा करने की कोशिश से जीत नहीं मिल सकती, न ही अपनी ताकत से गुनाह के साथ मुठभेड़ करने से। गुनाह किसी भी महाबली से भी अधिक बलवान है। वह फिरौन के समान कहता है, मैं स्वामी को नहीं जानता और उनकी प्रजा को जाने भी न दूँगा (निर्ग. 5:2)।

किन्तु पौलुस यह सत्य इसलिए नहीं सिखाता, कि वे निराश हो जाएँ, किन्तु यह कि वे स्वयं जाने और परमेश्वर के तरीके से जीत प्राप्त करें।

8:1 "इसलिए"- शब्द पिछले पदों से जोड़ता है और इस बात की निश्चयता देता है कि 7:14-25 में पौलुस खुद को मसीह यीशु में एक व्यक्ति बताता है। गुनाह के साथ उसका सम्बन्ध बिल्कुल तोड़ दिया गया था। 7:17. उसका भीतरी भाग बदला गया था, इसलिए वह परमेश्वर की बातों में मगन हो रहा था (7:22)। वह मसीह यीशु के द्वारा परमेश्वर को "मौत की देह" - से छूट जाने के लिए धन्यवाद भी दे सका (7:25)। इन बातों से वह दिखाता है कि वह मसीह में है, इसलिए उसके लिए कोई सज़ा नहीं है। ऐसी स्थिति में किसी के लिए भी सज़ा नहीं है।

पाप के साथ एक कश-म-कश की वजह से, विश्वासी अपने आप को दोषी ठहराने की सोच सकते हैं, किन्तु परमेश्वर उन्हें दोषी नहीं ठहराते। 4:7-8 से तुलना करें - जिन अपराधों को परमेश्वर लोगों के विरोध में नहीं देखते, कैसे उनके लिए दोषी ठहरा सकते हैं?

"मसीह यीशु में"- इसका अर्थ है यीशु से जुड़े होना या उसकी आत्मिक देह के सदस्य होना - 6:3; 1 कुरि. 12:12-13. "मृत्यु और नरक दण्ड नहीं" - का अर्थ है धर्मी ठहराया जाना (3:24; 4:7-8; 5:1) यूहन्ना 5:24 भी देखें। जिस प्रकार से मसीह के लिए कोई दण्ड नहीं है, इसी तरह उनके लिए भी नहीं, जो उन से जुड़े हुए हैं। मसीह उनके लिए पहले ही मर चुके हैं और सदा के लिए दोष और गुनाह को हटा दिया है। वे लोग और वह (पौलुस) नए जीवन के लिए जी उठे हैं और दण्ड से परे हैं।

उनके लिए दण्ड की आज्ञा न होने का एक और कारण वह है मसीह में विश्वास की राह गुनाह और मौत के, नियमों - आज्ञाओं से स्वतन्त्रता देती है (पद 2)। मसीह लोगों को उनके अपराधों से बचाते हैं। अपराधीपन पर विजय देते है। वह जिसे धर्मी ठहराते हैं, शुद्ध भी करते हैं। विश्वास द्वारा धर्मी ठहराया जाना एक ऐसा मार्ग (मात्र एक रास्ता) है जिसके द्वारा बुरे स्वभाव, संसार और शैतान पर जीत मिलती है।

है 2क्योंकि मसीह यीशु में जो जीवन है उस जीवन की आत्मा के नियम ने मुझे (यहूदियों को) पाप और मौत के क्रम (मूसा के नियम - अज्ञाओं) से आज़ाद कर दिया है। 3परमेश्वर द्वारा दी गयी आज्ञाएँ और नियम पुराने स्वभाव के कारण, अपने में बलहीन थे, उसे परमेश्वर ने अपने बेटे को पापमय करके बलिदान चढ़ा दिया। और परमेश्वर ने अपराध को पापमय स्वभाव में दोषी ठहराया, 4ताकि नियमों और आज्ञाओं की उचित माँग हम में जो शरीर (पुराने स्वभाव की प्रेरणा) के अनुसार नहीं परन्तु आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए।

5जो लोग बुरे स्वभाव के आधार पर जीवन जीते हैं, वे अपनी लालसाओं पर अपने मन को लगाते हैं, किन्तु जो परमेश्वर के आत्मा के द्वारा चलते हैं, वे परमेश्वर के आत्मा की इच्छाओं पर ध्यान लगाते हैं। 6शरीर के वश में होकर चलने से मौत मिलती

8:2 इस पूरे अध्याय और 7:14-25 में विरोध दिखता है इसका कारण हैः व्यक्ति जो कुछ अपने में है, वह अपनी भयंकर अपराधी अवस्था को सामने देखता है। किन्तु हम जो कुछ "मसीह में" हैं, यह अध्याय बताता है। अध्याय 7 में पाप और मौत के नियमों-आज्ञाओं से भिन्न यहाँ एक भिन्न नियमों-आज्ञाओं को हम पाते हैं। यह एक ऐसा नियम है जो उन नियमों-आज्ञाओं के विरोध में विश्वासियों को ताकत देता है। यह जीवन की "आत्मा का नियम" है - विश्वासियों में पवित्र आत्मा का रहना और वह सब करने में योग्य करना, जो वे पहले अपने आप नहीं कर सकते थे। अध्याय 8 में पौलुस, मसीह और परमेश्वर के आत्मा की ओर लगभग 30 बार इशारा करता है (7:14 पर नोट्स देखें)। यहाँ पौलुस इस अद्‌भुत सच्चाई पर रोशनी डालता है, परमेश्वर ने विश्वासियों की देह में अपनी आत्मा को रहने के लिए भेजा है जीत के लिए, पवित्र आत्मा ही एक बल है (पद 4,13), वह शान्ति और जीवन देता है (पद 6), वह मार्गदर्शन करता है (पद 14)।

वह बताता है कि वे परमेश्वर की सन्तान हैं (पद 15,16), वह उनके भीतर रह कर उनके लिए प्रार्थना करता है (पद 26,27), यूहन्ना 14:16-17 आदि में पवित्र आत्मा पर नोट्स देखिए।

8:3 "नियम पुराने"- मूसा द्वारा दी गयी व्यवस्था की ओर पौलुस का इशारा है। यह लोगों को बचाने और गुनाह एवं गंदगी को जीतने में बलहीन थी (3:19-20; 4:15; 7:5,7,14)।

"पुराने स्वभाव"- (पद 4,5,8,9,12 और 13 भी) - 7:5 पर नोट्स देखें। गुनाहगारों को बचाने का रास्ता देने के लिए परमेश्वर को देह में आना पड़ा (यूहन्ना 3:14-16)। पुत्र यीशु बुरे स्वभाव के साथ अपराधी मनुष्य के रूप में नहीं आए। (2 कुरि. 5:21; इब्रा. 4:15; 7:26; 1 पतर. 2:22)। वह जब इस पृथ्वी पर थे, उनका बाहरी दिखना, अन्य दूसरे लोगों के समान था। वह गुनाहों के लिए "बलिदान" - होने आए थे (ये शब्द यूनानी में नहीं है लेकिन अर्थ यही है)। वह मनुष्य की गुनाह की समस्या का समाधान करने आए। उन्हों ने इसे बुरा कहा और मर गए (3:24-25)।

8:4 इन सभी बातों में परमेश्वर का लक्ष्य यह था कि लोगों को अपराध के दोष, दण्ड और ताकत से छुड़ाएँ। अपने लिए एक पवित्र लोग बनाएँ। ऐसे लोग जो आत्मिक होंगे और यीशु के तथा पत्रियों में दिए मार्गदर्शन में चलेंगे (7:12,14)। इब्रा. 8:10 भी देखें। विश्वासियों से यह अपेक्षा नहीं है कि वे ओल्ड टेस्टामॅन्ट में लिखी सभी बातों को मानें (6:14; 7:4)। उन्हें दिनों, रीति विधियों आदि को नहीं मानना है। हमारे लिए एक खास बात है - "आत्मा के अनुसार" जीवन जीना। यहाँ और पूरे अध्याय में आत्मा का मतलब परमेश्वर का आत्मा है। गल. 5:16-18 भी देखें। आत्मा के अनुसार जीने का अर्थ हैः यह जानना कि वह हम में रहता है (पद 9,15) अपने आपको उसके प्रति सुपुर्द करना 6:13 उसकी बात मानना (पद 14; गल. 5:25) उसके बल और उसके अधिकार पर भरोसा रखना और उसका उपयोग करना (पद 13)।

8:5-8 "लालसाओं"- (7:5; गल. 5:17) यहाँ पौलुस दो प्रकार के लोगों का वर्णन करता है जो इस पृथ्वी पर हैं। एक प्रकार के लोग एक तरह से सोचते हैं, दूसरे क्रान्तिकारी रूप से। अपराधी स्वभाव अविश्वासियों के दिमाग में अपनी अभिलाषाओं को लाता है और लोग उनकी सुनकर उन के पीछे हो लेते हैं। परमेश्वर का आत्मा परमेश्वर की इच्छा को विश्वासियों के मन में लाता है यदि उनके मन उन बातों से भरे हैं जो वह उनके लिए चाहता है, तो वे उन्हीं बातों का पीछा

है, लेकिन जो मन परमेश्वरीय आत्मा द्वारा अनुशासित किया जाता है वहाँ जीवन और शान्ति है। 7क्योंकि शरीर (बुरे या पुराने स्वभाव) पर मन लगाना तो परमेश्वर से दुश्मनी रखना है। यह परमेश्वरीय विधान के प्रति आधीनता न स्वीकार करता है, न कर सकता है। 8जो लोग बुरे स्वभाव के शिकंजे (शारीरिक दशा) में हैं, वे परमेश्वर को खुश नहीं कर सकते।

9यदि परमेश्वरीय आत्मा तुम्हारे अन्दर रहता है तो तुम बुरे स्वभाव की गुलामी में नहीं हो, लेकिन आत्मिक दशा में हो। और यदि ऐसा है तो परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है, यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं है, तो वह मसीह का जन नहीं है। 10यदि मसीह तुम में हैं, तो हालाँकि पाप के कारण तुम्हारी देह मरी हुयी है, फिर भी धार्मिकता के कारण तुम्हारी

करेंगे। एक व्यक्ति कैसे सोचता है, इसका प्रभाव उसकी जीवन शैली पर पड़ता हे (देखें 2 कुरि. 10:5; फ़िलि. 4:8; कुल. 3:16; भजन 1:2)।

बुरे स्वभाव की बातें ऐसी नहीं है जो सदैव लोगों को बुरी दिखें। वे बातें धार्मिक और बुध्दिमता की भी हो सकती हैं। किन्तु वे परमेश्वर की नहीं होती हैं (मत्ती 16:23) वे स्वर्गिक बातें नहीं (कुल. 3:2) किन्तु पृथ्वी की हैं (फ़िलि. 3:19)। किन्तु परमेश्वर की आत्मा के बिना स्वभाविक दिखती हैं।

8:6 "मौत"- पद 6 इसका अर्थ है आत्मिक मौत या परमेश्वर से अलग (यशा. 59:2; इफ़ि. 2:1; 4:18)। मसीह के बाहर प्रत्येक व्यक्ति का स्वभाविक मन उन बातों पर लगा रहता है, जो उसे पसन्द आती हैं। इन बातों का एक सच्चे परमेश्वर से लेना देना नहीं है और ये परमेश्वर के विरोध में हैं (पद 7)। ऐसा व्यक्ति यह सोच सकता है कि वह परमेश्वर के पक्ष में है और कह सकता है कि वह उन से प्रेम करता है। किन्तु यह गलतफ़हमी है। अपराधी मनुष्य का मन अपने आप नहीं बदलेगा।

यदि एक व्यक्ति को परमेश्वर की बात माननी है, तो उसमें बदलाव होना ज़रूरी है। उसे नया जीवन देकर सोच-विचार बदलना है। इसके बिना कोई परमेश्वर को खुश नहीं कर सकता। वह धार्मिक, नैतिक, शिक्षित होने के साथ परमेश्वर के नियमों का पालन करने में सरगर्म हो सकता है। बिना परमेश्वर के आत्मा सब कुछ पाप और मौत होगी, और परमेश्वर को स्वीकार भी नहीं, तुलना करें यूहन्ना 3:3-8. इसलिए कि एक व्यक्ति का बुरा स्वभाव धर्म और नैतिकता से ढका है, अवश्य नहीं कि वह परमेश्वर को ग्रहण योग्य हो। परमेश्वर को बाहरी बातों की परवाह नहीं है किन्तु भीतर की (इब्रा. 4:12-13)। वह जानते हैं कि धार्मिक विचार और अपराधी मनुष्य की भावनाएँ दुष्टता से कलंकित है, जैसे कि हर दूसरी बात दुष्टता से कलंकित है। तुलना करें यशा. 1:11-17; नीति. 14:12.

8:9 "में"- पद 5-8 में जिन दो प्रकार के व्यक्तियों के बारे में पौलुस कहता है, वे दो दायरों में रहते हैं। जो लोग बिना परमेश्वर की आत्मा के हैं, वे गंदे स्वभाव के हैं। वे इसी के अनुसार जीते हैं। वे परमेश्वर के आत्मा के हैं। वह उन में रहता और कार्य करता है और वे उसमें।

इस पद में परमेश्वर की आत्मा को मसीह का आत्मा कहा गया है। दूसरे पद फ़िलि. 2:6 और लूका 2:11 को देखें। बिना मसीह की आत्मा के बगैर कोई भी मसीह या पिता परमेश्वर का नहीं है, कोई निर्दोष या धर्मी नहीं ठहराया जाता है। ऐसे लोग मसीही कहला सकते हैं और स्वयं को मसीही समझ सकते हैं किन्तु वे मसीह के लोग नहीं हैं। मसीह का आत्मा कैसे मिलता है? मसीह में विश्वास के द्वारा। जब लोग विश्वास लाते हैं परमेश्वर पुरस्कार के रूप में देते हैं (5:5)।

8:10 पौलुस पद 9 में कहता है कि परमेश्वर विश्वासियों में रहते हैं। यहाँ वह कहता है कि मसीह खुद उन में रहते हैं (यूहन्ना 17:23; 2 कुरि. 13:5; कुल. 1:27; प्रका. 3:20)। अपनी आत्मा के रूप में वह उन में हैं। ये पद परमेश्वर पुत्र और आत्मा की एकता को दिखाते हैं (इसका यह अर्थ नहीं कि मसीह, पवित्र आत्मा और पिता एक ही व्यक्ति हैं। मत्ती 3:16; यूहन्ना 17:1; 2 यूहन्ना 3 आदि)। यह ध्यान दें कि विश्वासी की देह मरी है। 6:12; 7:24 से तुलना करें जिस प्रकार प्रत्येक के जीवन में, मसीह के लोगों में भी नष्ट होते जाने की प्रक्रिया जारी है। यदि मसीह हमारे जीते जी न आएँ तो हम मरेंगे ही। इसका कारण गुनाह ही है। जीवन की आत्मा (पद 2) विश्वासियों में है। यीशु के कारण ही उनकी आत्माएँ जीवित हैं।

आत्मा जीवित है। 11परन्तु यदि परमेश्वर का आत्मा जिन्होंने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, तुम्हारे भीतर है, तो जिन्होंने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, उस आत्मा के द्वारा जो तुम्हारे भीतर है, तुम्हारी मरणशील देह को भी जिलायेंगे।

12इसलिए भाइयो-बहनो, हम बुरी इच्छा या बुरे स्वभाव (शरीर) के कर्ज़दार नहीं, कि हम उसकी बात मान कर चलें। 13क्योंकि यदि तुम उस पुराने स्वभाव के अनुसार जीओगे तो मरोगे, किन्तु यदि पवित्र आत्मा के द्वारा देह के गंदे कामों को मारोगे, तो जीवित रहोगे। 14इसलिए कि जो लोग परमेश्वर की आत्मा के द्वारा जीवन बिताते हैं, वे ही उनके बेटे-बेटियाँ हैं। 15इसलिए कि तुम ने ऐसा आत्मा नहीं

8:11 यहाँ दो प्रकार के सत्य हैं - मरे हुओं में से यीशु का जी उठना (1:4; मत्ती 28:6), विश्वासियों का भविष्य में जी उठना (पद 23; यूहन्ना 6:39; 1 कुरि. 15:52; 1 थिस्स. 4:16)। मसीह के सुसमाचार में देह विश्वासी की आत्मा के लिए मात्र नाशमान घर नहीं है, जिसे मौत के समय रद्द कर दिया जाऐगा। हमारी देह ऐसे हथियार के रूप में महत्वपूर्ण है जिससे हमारी आत्माएँ अपने आप को प्रगट करती हैं। यीशु की देह के समान उन्हें उठाया जाएगा और आदर मिलेगा। (फ़िलि. 3:21)।

8:12-13 परमेश्वर द्वारा प्रगट किए गए इस महान सत्य के प्रति विश्वासियों का रूख क्या होना चाहिए? परमेश्वर की अद्भुत दया के प्रकाश में उनकी ज़िम्मेदारी क्या है? इसके विषय में पौलुस ने 6:11-13,19 में कुछ कहा है। उन्हें चाहिए कि वे अपने को प्रसन्न न करें, अपने बुरे स्वभाव का विरोध करें और परमेश्वर के आत्मा के बल का इस्तेमाल कर के देह के गलत कार्यो को न अपनाएँ (कुल. 3:5-10 देखें। मत्ती 5:29-30; गल. 5:24 से तुलना करें। यह निरन्तर किए जाने की ज़रूरत है। इसका अर्थ है प्रत्येक गलत कार्य को परमेश्वर की आत्मा से मारना (हमारे जीवन में पाप या उसके प्रभाव को मारने की ताकत) प्रभु की है, हमारी नहीं। हमें उनके साथ सहयोग करना है। उनकी दी हुई ताकत का इस्तेमाल करना है (फ़िलि. 2:12-13)। अपने जीवन में विश्वासियों को गंदे कामों और इच्छाओं को जीवन में नहीं रहने देना चाहिए, जिस तरह हम विषैले साँपों को अपने घर में नहीं रहने देते।

सच्चा विश्वासी अपने जीवन में दुष्टता को छोड़कर उस से संघर्ष करता है और आत्मा की सामर्थ का उनके विरोध में इस्तेमाल करता है। जब वह मसीह के पास आता है, तभी यह फ़ैसला लेता है। यह तुरन्त और अचानक का निर्णय है। कभी-कभी यह धीमा और कष्टदायक होता है। कुछ हमेशा पूरी तरह से सफ़ल होते हैं। यदि कोई व्यक्ति मसीह का कहलाता है, किन्तु गलत कामों को अस्वीकार नहीं करता, वह दिखाता है कि उसमें जीवन का आत्मा काम नहीं कर रहा है (1 यूहन्ना 3:6,9 से तुलना करें)। निरन्तर देह के मुताबिक जीना इस बात का सबूत है कि आत्मा नहीं है। ऐसा जीवन मृत्यु है और वह मृत्यु की ओर ले जाता है। (पद 6; 6:16,23)

8:14 यह शब्द दिखाता है कि परमेश्वर की सन्तान होने का अर्थ क्या है। परमेश्वर की सन्तान वे हैं जो उनकी आत्मा से उत्पन्न हुए हैं (यूहन्ना 1:12-13)। इस से अधिक वे परमेश्वर के आत्मा की अगुवाई का पालन करते हैं (यूहन्ना 10:27)। परमेश्वर का आत्मा उन्हें अगुवाई देता है कि वे "गंदे कामों को मारें"। परमेश्वर का आत्मा सदैव उन्हें स्वार्थ और बुराई से दूर ले जाएगा। एक व्यक्ति जिसका यह अनुभव नहीं है, मन बदलाव और विश्वास के अनुभव को नहीं जानता और बच भी नहीं गया (1 यूहन्ना 2:4-6; 3:3,7-10; यूहन्ना 14:23-24) पौलुस विश्वासियों को परमेश्वर के "बेटे-बेटियाँ" कहता है। 6:16-22 में वह उन्हें गुलाम कहता है यहाँ कोई विरोध नहीं है। "गुलामी" के विषय में उसका अर्थ जबरदस्ती के बन्धन से नहीं है। इसका अर्थ खुशी और इच्छा से परमेश्वर की सेवा है। स्वयं उनके गुलाम बनने के द्वारा विश्वासी अपने आप को परमेश्वर के बेटे-बेटी सिद्ध करते हैं। यदि वे परमेश्वर के गुलाम बनने के लिए तैयार नहीं है तो वे परमेश्वर की सन्तान होने के लायक नहीं हैं। यह दिखाता है कि सच में वे परमेश्वर के सन्तान नहीं हैं।

8:15 विश्वासी स्वयं परमेश्वर के गुलाम बनते हैं बिना इच्छा डर के गुलाम नहीं (इब्रा. 2:14-15 से तुलना करे)। उनके भीतर परमेश्वर के आत्मा की वजह से वे स्वयं परमेश्वर को अपना पिता जानकर - पिता कहते हैं।

पाया है, जो तुम्हें डर का गुलाम बनाता है, लेकिन तुम ने लेपालकपन का आत्मा पाया है, इसलिए हम उन्हें पिता कहकर पुकारते हैं। 16परमेश्वर का आत्मा हमारी खुद की आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर के बेटे बेटियाँ (सन्तान) हैं। 17यदि हम उनकी औलाद (बेटे-बेटियाँ) हैं, तो हम वारिस हैं अर्थात् मसीह के साथ वारिस और परमेश्वर पिता के वारिस। यदि ऐसा है तो, हम मसीह के दुःखों में भागी होते हैं और तभी हम उनके सम्मान और आदर में भी शामिल हो सकेंगे।

18मुझे लगता है, कि हमारा इन दिनों का दुःख उस सम्मान के सामने जो हम पर प्रगट किया जाएगा, तुलना करने लायक नहीं है। 19सृष्टि बड़ी उत्सुकता से परमेश्वर के पुत्रों (संतान के) प्रगट होने का इन्तज़ार कर रही है। 20क्योंकि सृष्टि अपनी इच्छा

"लेपालकपन"- 23 पद देखें।

अरामी भाषा में पिता के लिए "अब्बा" शब्द है (मरकुस 14:36; गल. 4:6)।

8:16 परमेश्वर के आत्मा और विश्वासियों की आत्मा के अन्तर को देखें। वे दोनों एक ही नहीं है। यूहन्ना 14:16-17.

विश्वासियों के भीतर में जब वे परमेश्वर के आत्मा का मार्गदर्शन पाकर देह के कार्यों का इंकार करते हैं (पद 13,14) उनकी आत्माओं और परमेश्वर की आत्मा के बीच खुशी की सहमति होती है। परमेश्वर का आत्मा उन्हें निश्चयता देता है कि वे परमेश्वर की सन्तान हैं (1 यूहन्ना 3:24; 4:13 से तुलना करें)। पौलुस यह नहीं बताता, कि मन में परमेश्वर का आत्मा किस तरह से गवाही देता है। किन्तु यह निश्चित है कि यह भीतरी व्यक्तिगत अनुभव है। हम निश्चित हो सकते हैं कि हमारी भीतरी साक्षी और बाईबल की बाहरी साक्षी आपस में सहमत हैं। जिस बात को वचन में बता दिया गया है, उसके विरोध में परमेश्वर का आत्मा नहीं कहेगा। आत्मा परमेश्वर के वचन को व्यक्तिगत और विश्वासियों के हृदय में वास्तविक बनाता है। जिस निश्चयता और ज्ञान को विश्वासी पा सकते हैं उसके विषय में देखें - 5:5; 1 यूहन्ना 5:10,20; 1 कुरि. 2:9-12; यूहन्ना 16:13-15. यदि विश्वासी दुष्टता में बना रहता है तो वह आत्मा को दुखाने और उसकी आवाज़ को शान्त करने के खतरे में है। (इफ़ि. 4:30)।

8:17 "वारिस"- यीशु सभी वस्तुओं के वारिसदार हैं (इब्रा. 1:2) उनके संगी वारिस होने का मतलब है, सब वस्तुओं को हासिल करना। देखें 4:13; 1 कुरि. 3:21-23; इफ़ि. 1:14; कुल. 1:12; प्रका. 21:7; मत्ती 5:5.

"दुःखों में भागी"- (दुखों के बाद सम्मान ही परमेश्वर का तरीका था, अपने पुत्र की अगुवाई करने का (लूका 24:26)। आज भी वह अपने बच्चों के मार्गदर्शन के लिए इस तरीके का इस्तेमाल करते हैं। यूहन्ना 16:33; प्रे.काम 14:22; 1 पतर. 4:1,12) मसीह के दुखों को सहना उन कठिनाईयों, दुखों, क्लेशों को सहना नहीं हैं, जो सभी लोग सहते हैं, चाहे वे मसीह के विश्वासी हैं या नहीं। इसका अर्थ यह है - इसलिए कि हम उनके हैं और ऐसे संसार में हैं जो मसीह से नफ़रत करता है तुच्छ जानता है। ऐसे सभी लोग सताव सहेंगे (2 तीमु. 3:12) यूहन्ना 15:18-21 यदि हम यीशु के साथ सताए जाने के लिए तैयार नहीं हैं, हमें यह सोचने का हक नहीं है कि हम उनकी इज़्ज़त और मीरास के हिस्सेदार होंगे। जब हम दुख से गुज़रें, यह प्रश्न न करें, कि ऐसा क्यों। इसके विपरीत यदि दुख नहीं आते हैं तो पूछें - क्यों क्लेश नहीं हैं।

"सम्मान और आदर"-5:2; 9:23; यूहन्ना 17:22,24; कुल. 1:27; 3:4; 1 थिस्स. 2:12; इब्रा. 2:10; 1 पतर. 4:13-14; 5:10.

8:18 पौलुस ने बहुत दुख उठाए (2 कुरि. 11:23-29) - परन्तु उसने अनन्त आदर के साम्हने उन सब को हल्का-फुल्का समझा - 2 कुरि. 4:17. उसे निश्चय था कि वह उस सम्मान को पाएगा, जो उसे धीरज एवं आनन्द से दुख उठाने में सहायक होगा। (5:3)।

8:19 "परमेश्वर के पुत्रों (संतान के) प्रगट होने"- पद 23; कुल. 3:4; 1 पतर. 1:5; 1 यूहन्ना 3:1-2.

8:20-23 पहले व्यक्ति के अपराध से सारा विश्व समस्या में पड़ गया - उत्पत्ति 3:14-19. जो कुछ परमेश्वर ने आरम्भ में बनाया वह सब अच्छा था (उत्पत्ति 1:31)। अनाज्ञाकारिता के कारण मृत्यु और बर्बादी इस अच्छी सृष्टि में आयी। यह सृष्टि जो अभी गुलामी में कराह रही है, आज़ादी पा जाएगी और आने वाली महिमा के समय में प्रवेश करेगी। यशा. 11:6-9; 25:6-8; 35:1-10; 49:8-13. इस समय सृष्टि वैसी नहीं हैं, जैसी होनी चाहिए थी। यीशु के आने के बाद जैसी होगी, वैसी भी नहीं है। जैसे पाप के कारण होने वाले परिणामों को सृष्टि भुगत रही है, वैसे ही मसीह द्वारा पाप से छुड़ाए जाने के परिणामों की हिस्सेदार भी बनेगी।

से बर्बादी के लिए आधीन नहीं की गयी थी, बल्कि उनकी इच्छा से जिन्होंने इसे आधीन कर दिया था। 21वह भी इस आशा से कि सृष्टि गुलामी और सड़ाहट से छुड़ायी जाकर परमेश्वर की सन्तान की अद्‌भुत आज़ादी में लायी जाए।

22हम जानते हैं कि अब तक पूरी सृष्टि मानो प्रसव की सी पीड़ा के समान कराह रही है। 23मात्र सृष्टि ही नहीं, हम स्वयं जिनके पास पवित्र आत्मा का पहला फल है, हम भी अपने में कराह रहे हैं और गोद लिये जाने (हमारी देह के छुटकारे) का इन्तज़ार कर रहे हैं। 24इसी आशा के लिए हम ने मुक्ति भी पायी है। परन्तु यदि अपेक्षित वस्तु दिखने लग जाए तो वह आशा नहीं, क्योंकि जिसे व्यक्ति देखता है उसकी आशा क्यों करता रहेगा? 25लेकिन यदि हम देखने वाली बात के लिए आशा रखते हैं, तो हम उसके लिए धीरज से आशा रखते हैं।

26इसी प्रकार से पवित्र आत्मा हमारी कमज़ोरियों में सहायता करता है, क्योंकि हम नहीं जानते कि हमें क्या और कैसे माँगना चाहिए। किन्तु परमेश्वर का आत्मा स्वयं हमारे लिए ऐसी आहें भरकर प्रार्थना करता है, जिसे शब्दों में नहीं कहा जा सकता। 27जो दिलों को परखते हैं, जानते हैं कि पवित्र आत्मा क्या चाहता है, क्योंकि वह अलग किए हुए लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छा के अनुसार प्रार्थना करता है।

28हम जानते हैं कि जिन्हें परमेश्वर के

8:23 देखें 7:24; 2 कुरि. 5:4. अपनी मुक्ति के अन्तिम पड़ाव के लिये विश्वासी लालायित होते और करहाते हैं - यानि कि उनका जी उठना और सम्मानित किया जाना (महिमा) पद 30. यहाँ इसे उनकी देह का "छुड़ाया जाना" कहा गया है। देखें 1 कुरि. 15:51-54; फ़िलि. 3:21. देखें यूहन्ना 5:28-29 भी।

"गोद लिये जाने"- इसका मतलब है कि विश्वासी आत्मा, प्राण और शरीर में मसीह के समान हमेशा के लिये बदल दिये जायेंगे। एक छुड़ाई और बदली गई सृष्टि में परमेश्वर की सन्तान होने का हक हासिल करेंगे।

8:24-25 "आशा"- 5:2 जैसे पौलुस और दूसरे लेखक बाईबल में आशा की बात करते हैं, उसका यूनानी में अर्थ, अँग्रेज़ी के आशा शब्द से कहीं बढ़कर है। इसका अर्थ है, कि जो कुछ परमेश्वर ने दिखाया है वह अवश्य ही होगा। यह विश्वास का दूसरा दायरा है। तीतुस 1:2; 1 पतर. 1:21 आदि भी देखें।

8:26 यह अध्याय विश्वासियों के आत्मिक जीवन और अन्तिम मुक्ति के बारे में अद्‌भुत प्रकाशन से भरा है। इस अध्याय के बीच में तीन तरह का कराहना है - देखें पद 22 और 23. सृष्टि, विश्वासी और परमेश्वर का आत्मा, सभी एक साथ कराह रहे हैं। हम विश्वासियों में परमेश्वर का आत्मा क्यों कराहता है? वह हमारी भलाई चाहता है। वह हमारी बुद्धि और पवित्रता में तरक्की और यीशु की समानता में रूचि रखता है। वह भरसक प्रयत्न करता है कि हम पाप के दलदल और शैतान के प्रभाव से बचें। वह हमें मज़बूत बनाने और पिता की फलदायक सन्तान बनाने के लिए कोशिश करता है। पौलुस की आत्मा प्रेरित प्रार्थनाओं से तुलना करें कुल. 1:9-12.

"क्या"- इसलिए कि विश्वासी स्वयं में पूरी तरह कमज़ोर हैं (7:14-25), आत्मा की मदद और मध्यस्थी बहुत आवश्यक हैं। परमेश्वर से कैसे और क्या बातचीत करनी चाहिए, वे नहीं जानते। हमारी कमज़ोरियों को मज़बूती में बदलने के लिए परमेश्वर का आत्मा हम में काम करता है। (2 कुरि. 12:9-10) उसके द्वारा ही हम अपनी कमज़ोरी में मज़बूत होते हैं।

8:27 विश्वासियों के पास दो बुद्धिमान मध्यस्थ हैं (पद 34)। उनके पास एक सब से अधिक ताकतवर है, जो इन दो मध्यस्थों की सुनते हैं। इसलिए कि वे दोनों परमेश्वर की इच्छा में बिनती करते हैं, पिता सदैव पुत्र और आत्मा की प्रार्थना सुनते हैं (1 यूहन्ना 5:14-15 से तुलना करे)। विश्वासियों की कमज़ोरी में संसार बुरे स्वभाव और शैतान पर जीत के लिए त्रिएक परमेश्वर लगे हुए हैं।

8:28 यहाँ वह पद है जिसे लोग दूसरो को बताते हैं, लेकिन बहुत कम लोग ही अपने जीवन में अमल करते हैं। जो लोग इन शब्दों पर विश्वास कर के लागू करते हैं, वे एक गर्म थकान भरी भूमि में बड़ी चट्टान की ठंडी छाँव के समान हैं। असंभवता में भी, यह पद सही है (पद 35-39 के कुछ अनुभव विश्वासियों के बन सकते हैं) वे लोग खुश हैं जो अपने जीवन की उन सभी

उद्देश्य को पूरा करने के लिए बुलाया गया है, और जो उन से प्यार करते हैं, उनके लिए सब कुछ भले के लिए होता है। 29इसलिए कि जिनको परमेश्वर ने पहले से जान लिया था, उनके बारे में यह इरादा भी कर लिया कि वे, उनके बेटे यीशु की तरह हों ताकि यीशु तमाम संगी विश्वासियों में सर्वश्रेष्ठ (पहिलौठा) ठहरें। 30इसके साथ ही जिन्हें पहले से ठहराया उन्हें बुलाया भी और जिन्हें बुलाया, उन्हें निर्दोष (सिद्ध) घोषित किया और जिन्हें धर्मी घोषित किया उन्हें, आदर और

घटनाओं को जो उन्हें परेशान कर देती हैं, इस सत्य को लागू कर सकते हैं।

यह देखें कि पौलुस कहता क्या है - "हम जानते हैं" - यह नहीं कि हमें आशा की किरण दिखती है या हमारा अनुमान है, कि ऐसा होगा। हम इस पर भरोसा कर सकते हैं क्योंकि परमेश्वर ने इसे प्रगट किया है और बाईबल में कई स्थानों पर इस सच्चाई को दिखा दिया है (उदा. के लिए देखें उत्पत्ति 50:20 जो उस से प्रेम करते हैं - "और" "बुलाए गए हैं" ऐसी दो बातें हैं जो सच्चे विश्वासियों की ओर संकेत है। वे सभी परमेश्वर से प्रेम रखते हैं। उन सभी को उन्हों ने अपने काम के पूरे किए जाने के लिए बुलाया है (पद 30,1:5-6; 1 कुरि. 16:22; 1 यूहन्ना 4:8,16) इस पद के विषय में दो विचार हैं पहला यह कि सन्दर्भ मध्यस्थी में पवित्र आत्मा की सेवकाई है। इसलिए "सब कुछ" मतलब पवित्र आत्मा क्या और कैसे प्रार्थना करता है।

दूसरी ओर लोग अर्थ यह लगाते हैं कि जिस किसी परिस्थिति में से होकर विश्वासी जाते हैं, उन सभी को परमेश्वर उनकी भलाई (यानि कि मसीह के समान बनने) के लिए इस्तेमाल करते हैं। हमारे विचार से संदर्भ के अर्थ को लेना अधिक सही होगा।

8:29 28 पद में परमेश्वर का उद्देश्य जिसे बताया गया है - वह है विश्वासियों को मसीह के समान बनाना (इब्रा. 2:10-11; 1 यूहन्ना 3:1-2)। इस से बढ़कर ऊँचा उद्देश्य या बड़ा लक्ष्य नहीं हो सकता परमेश्वर के इस उद्देश्य के पूरा होने के लिए पौलुस पाँच कदम की बात करता है। दो संसार के आरम्भ में पहले के थे, दो मसीह में विश्वासी के जीवन के आरम्भ के और एक कदम अभी शेष है। ये सभी चरण दूसरे सभी से जुड़े हुए हैं और जैसा परमेश्वर उन्हें बना सकते हैं, वैसा निश्चित है।

"जान लिया था""- विश्वासियों को मसीह के समान बनाने की परमेश्वरीय योजना, विश्वासियों के बारे में परमेश्वर के पूर्व ज्ञान पर टिकी हुई थी। 1 पतर. 1:2 भी देखें। पौलुस इस पूर्व ज्ञान का न ही वर्णन करता है, न ही यह कि पहले से ठहराए जाने का इस से क्या सम्बन्ध है। इस पत्र के अन्त के नोट्स को देखें।

8:30 "पहले से ठहराया"- यह बाईबल में छः बार पाया जाता है (यहाँ पद 30; प्रे.काम 4:28; 1 कुरि. 2:7; इफ़ि. 1:5,11. इसका किस्मत या कर्म से कोई सम्बन्ध नहीं। इसका अर्थ है, उन सब बातों का ज्ञान होना, जो कुछ किया जाना है। वह निश्चित किया जो कुछ किया जाना ज़रूरी है। सर्वशक्तिमान जो, भी चाहेंगे वह होगा प्रे.काम 4:28 के अलावा जो एक घटना को बताता है, नए नियम के विश्वासियों के विषय ही पहले से ठहराए जाने के विषय बताता है। लेकिन यह नहीं कहा गया है कि अनन्त नाश के लिए परमेश्वर ने किसी को ठहराया है। विश्वासियों को यह शिक्षा बड़ी शान्ति और आशा दे सकती है। इस से निराश नहीं होना चाहिए कि पता नहीं परमेश्वर ने उन्हें उद्धार के लिए ठहराया है या नहीं। यूहन्ना 6:37,44 में नोट्स देखें। जो चाहे वह मसीह के पास आ सकता है (प्रका. 22:17)। जो आकर मसीह पर भरोसा रखता है, यह स्वयं इस बात का एक सबूत है कि परमेश्वर ने उस व्यक्ति को चुना है।

"बुलाया"- पद 28; 1:6 इसका अर्थ है मसीह के पास बुलाया जाना ताकि वे आकर उन पर विश्वास करें। परमेश्वर की बुलाहट के बारे में अध्ययन करने के लिए इन पदों का अध्ययन करें - 11:29; गल. 1:6; 2 थिस्स. 2:14; 1 कुरि. 1:9,24; गल. 5:13; कुल. 3:15; 1 तीमु. 6:12; 1 पतर. 2:9,20,21; 3:9) यहूदा 1; 2 तीमु. 1:9; इब्रा. 3:1. विश्वासियों को यह जानना चाहिए कि परमेश्वर ने उन्हें बुलाया हैं - 2 पतर. 1:10-11. विश्वासी यह जान सकते हैं कि परमेश्वर ने उन्हें चुन लिया है, बुलाया है और धर्मी ठहराया। उन्हें यह जान लेना चाहिए।

"निर्दोष घोषित"- जिन्हें परमेश्वर बुलाते हैं, वे सभी उनके पास आते हैं और यीशु पर विश्वास करते हैं। परमेश्वर उन्हें तुरन्त माफ़ करते हैं और पूर्ण तरीके से निर्दोष देखते हैं। देखें - 1:16-17; 3:21-28; 4:5-6-8; 5:1; 10:10.

सम्मान भी दिया।

31इन बातों के सम्बन्ध में हम क्या
कहें? यदि परमेश्वर हमारे संग हैं, तो
हमारा दुश्मन कौन है? 32जिन्होंने अपने
बेटे तक को बचाकर नहीं रखा, लेकिन
उन्हें हम सभी के लिए दे दिया, वह यीशु
के साथ हमें मुफ़्त में सब कुछ क्यों नहीं
देंगे? 33परमेश्वर के चुने हुए लोगों के
विरोध में कौन आरोप साबित करेगा?
परमेश्वर स्वयं उन लोगों को दोष मुक्त
और सिद्ध साबित कर चुके हैं। 34कौन
उन्हें दोषी ठहराएगा? मसीह ही हैं जो मर
गए थे और इस से बढ़कर यह कि वह
जिलाए गए और अभी सर्वोच्च अधिकार
के साथ परमेश्वर के साथ हैं, और वह
हमारे लिए मध्यस्थ हैं। 35मसीह के प्यार

"आदर और सम्मान"- पद 17,18,23 - जिस तरह से दूसरे कदम पुराने समय के हैं, परमेश्वर के अपने लोगों की मुक्ति में यह आखिरी कदम भी पुराने समय का है। दूसरे शब्दों में जैसे पहले से जानना, ठहराया जाना निश्चित है, यह भी उतना ही निश्चित है (तुलना करें 4:17)। जो ठहराए गए, वे बुलाए गए, धर्मी (आरोप मुक्त) ठहराए गए और उन्हें आदर-सम्मान भी मिला हालाँकि विश्वासियों का आदर - सम्मान पाना, मसीह के दोबारा आने पर होगा। इसलिए कि मसीह को आदर सम्मान मिल चुका है और वे उस से जुड़े हुए हैं, वे "उसमें" - हैं इसलिए वे वास्तव में आदर - सम्मान पा चुके हैं - देखें यूहन्ना 17:22; इफ़ि. 2:6; कुल. 3:3-4. जिन्हें परमेश्वर ने विश्वास करने के लिए बुलाया। यह सब उन सभी की अन्तिम मुक्ति के विषय में है, जिन्हें परमेश्वर ने अपने बेटे पर भरोसा करने के लिए बुलाया है। स्वयं यीशु ने इस बात को यूहन्ना 6:37-40; 10:27-29 में बताया है।

8:31 हम क्या कहें? अपने लोगों के लिए परमेश्वर जो कुछ योजना बनाते है या हासिल करते हैं उसके सम्बन्ध में हमारे सभी शब्द विश्वास, स्तुति और निश्चयता के हों।

हम में से कोई भी शक न करे। हम जो यह विश्वास करते हैं, परमेश्वर हमारे पक्ष में हैं, हमारे भीतर और हमारे साथ हैं। हमारे लिए परमेश्वर की योजना को कोई भी नाश नहीं कर सकता (पद 37; इब्रा. 13:6; यूहन्ना 10:29; रोमि. 5:20.)

8:32 परमेश्वर को "देना" पसन्द है क्योंकि वह प्रेम हैं (1 यूहन्ना 4:8; 2 पतर. 1:3; 2 कुरि. 9:15; प्रे.काम 14:17; मत्ती 5:45; 7:10; भजन 145:9)। वह सारी दया के परमेश्वर हैं (1 पतर. 5:10)। उनका सिहांसन दया का सिंहासन है (इब्रा. 4:16)। विशेष रूप से उनकी दया, उनके लोगों के ऊपर है (रोमि. 5:21)। उनकी सारी कमज़ोरियों और दुष्टता पर 'दया' जीत हासिल करती है। परमेश्वर ने सब से बड़ा 'ईनाम' अपना बेटा दिया है। उद्धार के अन्तिम पड़ाव में जो कुछ करना बाकी है, क्या उसे करने में वे कुछ कसर छोड़ेंगे?

8:33 इसलिए कि परमेश्वर विश्वासियों को निर्दोष (धर्मी या सिद्ध) समझते हैं, वह उनके विरोध में आरोप नहीं सुनना चाहेंगे। जो उन से जुड़ चुके हैं, उनके विरोध में वह किसी आरोप को ग्रहण नहीं करेंगे। 4:6-8 देखें और टिप्पणी भी। परमेश्वर उनके अपराधों को उनके विरोध में नहीं गिनते। क्या इस से उन्हें दुष्टता करने की छूट मिल जाती है? बिल्कुल नहीं 6:1,15; 8:4,12-14.

8:34 कौन किसी एक विश्वासी को दोषी ठहरा सकता है कि परमेश्वर उसे स्वीकार करे? कोई नहीं। शैतान या दूसरे लोग भी नहीं, न ही स्वयं विश्वासी। उनके अपराधों को सदाकाल के लिए समाप्त करने के लिए मसीह एक कुर्बानी के रूप में मर चुके हैं (इब्रा. 10:10,14)। यही नहीं, पूरे अधिकार के साथ यीशु पिता के साथ हैं। दोष या आरोप लगाने के समय वह उसे बचाते हैं। उनका जीवन और मध्यस्थ होना उन्हें अभी और सदा के लिए सुरक्षित रखते हैं (5:9-10; इब्रा. 7:25; 1 यूहन्ना 2:1)।

8:35-39 यहाँ मसीह के प्यार का अर्थ है विश्वासियों के लिए उनका प्रेम न कि उनका मसीह के लिए। क्या दुष्टता के कारण मसीह का विश्वासियों के लिए प्रेम समाप्त हो जाता है? उनका प्रेम कभी समाप्त नहीं होता। यह सदा का है (यिर्म. 31:3)। इस पृथ्वी पर उनके आने से पहले यह शुरू हुआ और सदा तक रहेगा। पहले ही से वह उनके पाप और गंदगी को जानते थे और उन्हों ने उनको अपने प्रेम का लक्ष्य बनाया। मसीह का प्रेम ज्ञान से परे है (इफ़ि. 3:19) (यह सब रूकावटों को लाँघकर अन्त में लोगों को उनकी प्रिय उपस्थिति में लाता है (प्रेष्ठ. 8:6-7 से तुलना करें)।

यहाँ पौलुस समस्याओं और खतरों की बात

से हमें कौन अलग करेगा? क्या क्लेश, सताव, अकाल, कपड़ों की कमी, समस्या या हिंसा, 36जैसा कि लिखा है, "तुम्हारे कारण हम पूरे दिन मारे जाते हैं, हमें काटी जाने वाली भेड़ें समझा जाता है।"

37नहीं, इन सभी में जिस प्रभु ने हमसे प्रेम किया, उन में हम जयवन्त (जीत पाए हुए लोगों) से भी बढ़कर हैं। 38इसलिए मुझे यह निश्चय है कि न मौत, न जीवन, न स्वर्गदूत, न शासक, न शक्तियाँ, न वर्तमान और न आने वाले समय की बातें, 39न ऊँचाई, न गहराई, न और कोई भी सृजी वस्तु हमें परमेश्वर के उस प्यार से अलग कर सकती है, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह में हैं।

9 मैं मसीह में सच कह रहा हूँ, मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ, मेरा विवेक भी पवित्र

क्यों करता है? इसलिए कि सभी के जीवन में यह आम बात है (यूहन्ना 16:33; प्रे.काम 14:22 आदि)। विश्वासियों पर जीत हासिल करने के लिए शैतान उन्हें इस्तेमाल करता है। वह उनके भीतर यह विचार डाल सकता है कि यीशु उन से प्रेम करते हैं या नहीं। ऐसे स्थिति में वे बुराई में गिरकर कुछ समय के लिए सन्देह में पड़े रह सकते हैं। क्या ऐसा होने पर मसीह उन्हें छोड़ देंगे? क्या उनका प्रेम समाप्त हो जाएगा? नहीं, कभी नहीं, जीवन के सभी मुश्किल अनुभवों के बाद वे सुरक्षित पहुँचेंगे।

8:36 भजन 44:22.

8:37 इस अध्याय के संदर्भ में हम कह सकते हैं कि प्रत्येक विश्वासी को मसीह "बहुतायत की जीत" देते हैं। यह अनुभव इक्के-दुक्के लोगों के लिए नहीं है। शब्द "हम" में रोम के सभी विश्वासी आते हैं। (आज के सभी विश्वासी भी)। ऐसा अनुभव किसका हो सकता है। उसका, जो मात्र जीतता नहीं है, किन्तु वह जिसके लिए हार कभी मुमकिन ही नहीं।

पौलुस कहता है "हम" न कि "शायद हम" या "संभव" है। पाप, शैतान, संसार और 'शरीर' (पुराना बुरा स्वभाव) विश्वासियों को कुछ समय के लिए घायल परेशान, चिन्तित और पीड़ित कर सकता है 2 कुरि. 4:8-9. किन्तु ये सभी उनके ऊपर अन्तिम जीत हासिल नहीं कर सकते।

उन लोगों को जीतना मुमकिन नहीं जो लोग जीत से भी आगे हैं। जिस परमेश्वर ने उन्हें विश्वास दिया है वह अन्त तक उन्हें विश्वास में बनाए रखेंगे। जो उन्हें मसीह तक लाएँ है वह उन्हें मसीह में रखेंगे और उन्हें अन्तिम अनन्त जीत देंगे।

8:38-39 ज़ोर डालकर पौलुस कैसे कह सकता था, कि विश्वासी यीशु मसीह की देख-रेख में हैं। जीवन और उसके साथ जुड़े प्रलोभन, उन्हें प्रभु से अलग नहीं कर सकते। भविष्य, मौत और कोई बुरी या अच्छी ताकत भी नहीं।

कोई यह कहेगा, कि यहाँ पाप के बारे में नहीं लिखा है। जहाँ तक विश्वासी के गुनाहों का सवाल है पद 33,34 और 4:8 में परमेश्वर उनके बारे में क्या कहते हैं। अनुग्रह शासन करता है (5:21) इसलिए कि पौलुस ऊपरी सत्य से कायल था, हमें भी होना चाहिए और खुश भी।

मसीह का सुसमाचार क्या है, पौलुस बताता है, यह भी कि मुक्ति के लिए वह सामर्थ कैसे है। वह मनुष्य की भयंकर स्थिति से जो परमेश्वर के दण्ड के आधीन है, यह दिखाता है कि कैसे क्षमा पाए, धर्मी ठहराए, शुद्ध किए गए, सम्मानित किए गए और प्रेम किए गए लोग अनन्त सुरक्षा के स्थान पर पहुँचते हैं। हम देख सकते हैं कि वह शर्मिन्दगी क्यों महसूस नहीं करता (1:16)। मसीह का संदेश अद्भुत अतुलनीय, ताकतवर और वर्णन से बाहर है। यह मनुष्य की आवश्यकता और परमेश्वर के सम्मान के लायक है। हमें चाहिए कि विश्वास करें, सीखें, आनन्दित हों, इस में रहें, और जीवन भर लोगों को बताते रहें।

9:1-3 परमेश्वर द्वारा दिए गए उद्धार के विषय में अपना काम वह समाप्त करता है। 9,10,11 में वह बताता है कि इस्राएल देश ने मसीह और उसके संदेश को तुच्छ क्यों जाना। यह भी कि इस्राएल का भविष्य क्या है।

"विवेक"- प्रे.काम 23:1; 24:16; 1 कुरि. 4:4; 8:7; 2 कुरि. 1:12; 1 तीमु. 5:19; 3:9. पौलुस बहुत ज़ोरदार शब्दों में कहता है, क्योंकि बहुत से यहूदी उसे शत्रु समझते थे। (प्रे.काम 21:21,28; 24:5)। सच्चाई तो यह है कि वह उन से प्रेम करता था। इतना कि उनकी मुक्ति के लिए स्वयं नाश होने के लिए तैयार था (यदि यह संभव था)। निर्ग. 32:32 और गल. 3:13 से तुलना करें। इस्राएल के छुड़ाने वाले मसीह उसके जीवन में कार्यशील थे।

आत्मा में गवाही दे रहा है 2कि मेरे दिल पर एक भारी बोझ और बना रहने वाला दुःख है। 3अच्छा होता कि जो लोग मेरी बिरादरी के यानि कि इस्राएली हैं, मैं उनके कारण मसीह के द्वारा सज़ा लायक ठहरता। 4लेपालकपन का हक और महिमा, वाचा, नियमों-आज्ञाओं का दिया जाना, परमेश्वर की सेवा और वायदे उन्हीं की हैं, 5पूर्वज उन्हीं के हैं, जहाँ तक देह का सवाल है मसीह यहूदियों में से आए थे, जो सब के ऊपर हैं, परमेश्वर हैं और सदा-सदा के लिए बड़ाई के लायक हैं। ऐसा ही हो।

6ऐसा नहीं कि परमेश्वर का कहा पूरा नहीं हुआ। क्योंकि जो इस्राएल के वंशज हैं वे सभी इस्राएली नहीं हैं। 7वे सभी अब्राहम की सन्तान भी नहीं हैं हालाँकि वे अब्राहम के वंश के हैं, किन्तु लिखा है "इसहाक के नाम पर तुम्हारा वंश कहलाएगा"। 8इसका मतलब यह है कि जो लोग मात्र दैहिक रीति से यहूदी वंश में जन्मे हैं, वे परमेश्वर की सन्तान नहीं, किन्तु वास्तव में प्रतिज्ञा की सन्तान ही वास्तविक सन्तान कहलाएगी। 9प्रतिज्ञा यह थी, "इस समय मैं आऊँगा और सारा का एक बेटा होगा",

10यही नहीं, जब रिबका भी इसहाक से

9:4-5 यहाँ वह 3:1 में पूरी तरह से उत्तर देता है। देश के रूप में इस्राएल को कुछ लाभ थे। मसीह को अस्वीकार करने से वे समाप्त नहीं हो गए। इन पदों में पौलुस जिस भाषा का उपयोग करता है, इशारा यह है कि ये बातें इस्राएल देश की हैं।

"लेपालकपन"- अर्थ है परमेश्वर ने इस्राएल को अपने लोग होने के लिए चुना है (व्यव. 7:6; 14:1-2)। दिखने वाली परमेश्वर की उसकी उपासना के स्थान पर और भविष्य में आने वाली महिमा की प्रतिज्ञा, पृथ्वी पर रहने वालों में से उन्हीं के लिए ही थीं। निर्ग. 40:34-35; 1 राजा 8:11; यहेज. 43:2-5; 44:4)। परमेश्वर ने उसके साथ वाचा बाँधी थी। उत्पत्ति 15:18; निर्ग. 24:8; 2 शमू. 7:16; 23:5; यिर्म. 31:31-33; 32:40)। केवल उन्हीं को परमेश्वर ने नियम दिए थे (निर्ग. 20:1-2) व्यव. 4:8. केवल उन्हीं लोगों के पास परमेश्वर द्वारा दिया गया उपासना का तरीका था (निर्ग. 25—40; 1 राजा 6 अध्याय)। पूरी बाईबल में भविष्य में बड़ी आशीषों की प्रतिज्ञा है। पूर्वज उन्हीं के हैं - जिन्हें परमेश्वर ने अगुवे बनने के लिए चुना था (11:28; उत्पत्ति 12:1-3; निर्ग. 3:6)। यीशु एक यहूदी, अब्राहम और दाऊद के वंश के थे।

9:5 "मसीह-जो सब के ऊपर हैं...सदा के लिए बड़ाई के लायक हैं"- यह स्पष्ट है, कि यीशु परमेश्वर हैं। देखें फ़िलि. 2:6 और लूका 2:11.

9:6 अनेक आशीषों के बावजूद यहूदियों ने मसीह और उनके संदेश को कबूल नहीं किया। परमेश्वर का राज्य उन से छीना गया और दूसरों को दिया गया (यूहन्ना 1:11; मत्ती 21:42-43)। क्या इसका मतलब यह हुआ कि परमेश्वर का वचन पूरा नहीं हुआ और वायदा टूट गया है। पौलुस कहता है, "नहीं"। वह दो तरह के यहूदियों का वर्णन करता है जो इस्त्राएल में से निकले थे और वे जिन्हें परमेश्वर ने उन में से चुना और अपने लिए बुलाया। दूसरे प्रकार के लोग सच्चे यहूदी हैं। देखें 2:28-29; मत्ती 3:9; यूहन्ना 8:39,41.

9:7-9 उत्पत्ति 21:12 । अब्राहम के पास दूसरे और बच्चे थे (उत्पत्ति 16:15; 25:1-2)। परमेश्वर ने अब्राहम का वारिस और आत्मिक वंश होने के लिए इसहाक को चुना था। वह "प्रतिज्ञा" की सन्तान था - 4:18-21; उत्पत्ति 15:4; 17:15-16; 18:10; 21:1-3. दूसरे शब्दों में जो वाचा परमेश्वर ने अब्राहम से बाँधी और प्रतिज्ञाएँ दीं, उसमें स्वाभाविक तरीके से उसके पैदा होने वाले उसके वंश के सभी लोग नहीं थे, लेकिन केवल वही जिन्हें परमेश्वर ने चुना था।

9:10-13 यही सत्य इसहाक के वंश के बारे में सत्य है। परमेश्वर ने केवल याकूब को इसहाक का वारिसदार होने के लिए चुना। अब्राहम की लाइन में वायदों को हासिल करने और लोगों का अगुवा होने के लिए भी। याकूब और एसाव के द्वारा बाद में किए जाने वाले कार्य से याकूब का स्वीकार किया जाना, एसाव का तुच्छ जाना जुड़ा नहीं था। अपनी समझ से परमेश्वर ने एक को चुना, दूसरे को नहीं। परमेश्वर ने यह नहीं कहा, कि "बड़ा नरक जाएगा और छोटा स्वर्ग जाएगा", किन्तु बड़ा छोटे की सेवा करेगा। 9-11 अध्याय में विषय एक व्यक्ति की मुक्ति नहीं है, लेकिन लोगों और राष्ट्रों के साथ परमेश्वर का तरीका।

गर्भवती हुई, 11 वे बच्चे जो पैदा नहीं हुए थे
न ही उन्हों ने भला-बुरा किया था, ताकि
परमेश्वर का वह उद्देश्य बना रहे, जो कामों
पर नहीं, लेकिन उनके चुनाव पर निर्भर है,
और परमेश्वर जो स्वयं बुलाते हैं, 12 उससे
कहा गया था, "बड़ा छोटे की सेवा करेगा"
13 जैसा लिखा है, मैंने याकूब को अपनाया
लेकिन एसाव को नही अपनाया।

14 इसलिए हम क्या कहें? क्या परमेश्वर
अन्यायी हैं? बिल्कुल नहीं। 15 इसलिए कि
वह मूसा से कहते हैं "जिस किसी पर मैं
दया करना चाहूँ, मैं करूँगा।

16 और जिस किसी पर करूणा दिखाना
चाहूँ मैं दिखाऊँगा"। इसलिए परमेश्वर
की भलाइयों को कोशिश करने या
मनोकामना से हासिल नहीं किया जा
सकता। 17 पवित्रशास्त्र (बाईबिल) के
अनुसार परमेश्वर ने मिस्र के राजा फिरौन

9:12 उत्पत्ति 25:23 ।

9:13 मला. 1:2-3 परमेश्वर की नफ़रत के बारे में भजन 5:5; मला. 1:3; लूका 14:26 पर टिप्पणी देखें। याकूब के लिए जो प्रेम परमेश्वर के पास था, उसे उन्हों ने इतिहास में दिखाया। एसाव के वंश का इतिहास दिखाता है वही प्रेम उसके वंश लिए परमेश्वर के पास नहीं था। इतिहास में पद 12 के पूरे होने की पुष्टि के लिए पौलुस मलाकी की बात को दोहराता है।

9:14-24 इस युग में इस्राएल देश का तिरस्कृत किया जाना बिल्कुल उचित है। परमेश्वर के न्याय का सवाल उठना ही था (पद 14)। उत्तर यह है कि परमेश्वर सार्वभौमिक हैं, और वही करते हैं जो चाहते हैं। सभी बलवई हैं (3:9,23)। परमेश्वर, किसी को भी अस्वीकार कर सकते हैं। किसी को यह अधिकार नहीं है कि परमेश्वर से कुछ कहे या अन्याय का दोष लगाए (20,21)। परमेश्वर, परमेश्वर हैं। सृष्टि पर वह महान राजा हैं (भजन 47:1-3; यशा. 40:22-23; दानि. 4:34-35; मला. 1:14)। वह अपनी इच्छा से कुछ भी कर सकते हैं।

कुछ लोगों को चुनने और कुछ को नहीं चुनने से कर्म, पुर्नजन्म या पिछले जन्म का कोई सम्बन्ध नहीं है (इन में कोई वास्तविकता नहीं है। देखें अय्यूब 11:12; यूहन्ना 9:3 के नोट्स)।

यह एक तानाशाह के सनकीपन सा व्यवहार नहीं है। परमेश्वर सार्वभौमिक हैं और हर बात में जो चाहे करते हैं। वह प्रेम भी हैं (1 यूहन्ना 4:9)। वह अपने स्वभाव के अनुसार कार्य करते हैं। जब समय सही है, वह दया दिखाते हैं (10:12; 11:32; निर्ग. 34:6-7; मीका 7:18)। जब मनुष्यों के न बदलने के फ़ैसले और पाप में बने रहने की इच्छा होती है, परमेश्वर के न्यायी होने के कारण लोगों को दण्डित किया जाना ज़रूरी होता है, ऐसी अवस्था में उनका प्रेमी हृदय दुःखी होता है। यिर्म. 48:30-39; लूका 19:41 पर नोट्स देखें)।

हमें यह जानना ज़रूरी है कि रोमियों के इन पदों को अलग-अलग नहीं देखा जाना चाहिए। परमेश्वर का अधिकार, पूर्वज्ञान और पहले से ठहराए जाने का रहस्य कुछ भी क्यों न हो, एक बात पक्की है, बाईबल में उनके बारे में बताए गए स्वभाव के खिलाफ़ वह नहीं करते हैं। परमेश्वर कुछ बुरा नहीं करते हैं। उनका सारा कार्य पूर्ण न्याय और प्रेम पर आधारित है। हमारे मन उस मज़बूत चट्टान पर टिके रह सकते हैं।

9:14 उत्पत्ति 18:25; आदि।

9:15 निर्ग. 33:19 ।

9:16 परमेश्वर जानते हैं कि किस पर दया दिखाएँ, किसको दण्ड दें। उनकी कृपा मुफ़्त है। यह उन पर निर्भर है किस पर कृपा दिखाएँ।

क्योंकि मनुष्य इसे चाहते हैं, वे परमेश्वर पर ज़ोर नहीं डाल सकते। हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि परमेश्वर सख्त मन के हैं और दया नहीं दिखाना चाहते (11:32; यशा. 55:7)। परमेश्वर के पास ऐसी कठोर इच्छा नहीं है जो उनके दयालु प्रेमी इच्छा के विरोध में है। जब वह चाहते हैं, दया दिखाते है, जब ज़रूरत है, दण्ड देते हैं (10:20-21; उत्पत्ति 6:7; यिर्म. 48:30-39; यहेज. 18:30-32; लूका 19:41-44)। हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि परमेश्वर की सार्वभौमिकता उनके प्यार के विरोध में नहीं जाती है, न ही वह किसी के प्रति कोई बेइन्साफ़ी का कार्य करने के लिए प्रेरित करती है।

9:17 निर्ग. 9:16; 7:17 बुरे मनुष्यों के प्रति परमेश्वर ऐसा कर सकते हैं, जिससे उनका इस दुनिया सम्मान और ज्ञान बढ़ता है। यह संसार के लिए एक बड़े फ़ायदे और कृपा प्राप्त करने की बात है।

से कहा, "मैंने तुम्हें इसलिए खड़ा किया है, ताकि अपनी ताकत को तुम्हारे बीच दिखाऊँ और मेरे नाम की घोषणा सारी दुनिया में की जाए।" 18इसलिए जिन लोगों पर वह चाहें, अपनी दया दिखाएँगे और जिनको कठोर करना चाहेंगे, उन्हें कर देंगे।

19तब तुम मुझ से कहोगे कि परमेश्वर फिर गलती क्यों ढूँढते हैं? किसने उनकी इच्छा का विरोध किया है?" 20हे मनुष्य, तुम कौन हो, कि परमेश्वर से जवाब की माँग करते हो? क्या कोई वस्तु अपने बनाने वाले से पूछ सकती है, "तुम ने मुझे ऐसा क्यों बनाया?" 21क्या कुम्हार को यह छूट नहीं कि वह मिट्टी के एक ही लोदें से एक बर्तन विशेष उपयोग के लिए और दूसरा साधारण उपयोग के लिए बनाए?

22परमेश्वर, ने जो अपने गुस्से और ताकत को दिखाने के लिए तैयार थे सज़ा

9:18 निर्ग. 4:21 में फिरौन के मन कठोर करने पर नोट्स देखें। फिरौन चाहता था कि परमेश्वर कृपालु हों और देश पर से मुसीबतों को हटा लें, लेकिन अपने कुकर्म को छोड़कर परमेश्वर की सेवा उसने नहीं करनी चाही। पहले से अधिक पाप और मन की कठोरता में उसे छोड़ने के द्वारा परमेश्वर ने उसे दण्डित किया। 1:21-26,28 से तुलना करें। यह निश्चित है कि जो लोग दण्ड के लायक नहीं हैं, उन्हें परमेश्वर कठोर नहीं करेंगे। जैसा परमेश्वर सर्वोत्तम समझते हैं, वैसा करते हैं।

9:19-21 पौलुस को मालूम था कि अपनी दुष्ट अवस्था और कठोर मन के लिए मनुष्य परमेश्वर पर दोष लगाएगा, जब कि वे स्वयं उसके लिए ज़िम्मेदार हैं, तुलना करें उत्पत्ति 3:12-13. पौलुस यह भी जानता था कि मनुष्य के पास ऐसा कुछ अधिक नहीं कि परमेश्वर को कुछ कहे। एक बर्तन को भी कोई अधिकार नहीं होता है कि कुम्हार से कुछ कहे। तुलना करें यशा. 29:16; 45:9; 64:8; यिर्म. 18:4-6.

उत्पत्ति में सृष्टि के वर्णन से हम सीखते हैं कि परमेश्वर ने कोई बुरा बर्तन नहीं बनाया (उत्पत्ति 1:31)। एक अच्छा, बुद्धिमान और प्रेमी कुम्हार बदसूरत बर्तन नहीं बनाता। यदि कोई बर्तन खराब है तो ऐसा इसलिए है क्योंकि शैतान की कुछ भूमिका है। परमेश्वर के सामने मनुष्य का स्थान भूमि (मिट्टी) है। अपनी गलती और अयोग्यता का एहसास होना ज़रूरी है, यह मानना कि परमेश्वर, परमेश्वर हैं और हमें जो होना चाहिए, वही बना सकते हैं। अपने सम्बन्ध में परमेश्वर के विरोध में बोलने के बजाए, उन पर दोष लगाने के विपरीत, हमे स्वयं को उनके सुपुर्द कर देना चाहिए। तब वह हमे भले कार्य के लिए इस्तेमाल कर सकेंगे।

9:21 "एक ही लोदें"- सभी लोगों के पास बुरा स्वभाव है 3:9,23; इफ़ि. 2:3)। उन्हों ने अपने आप को बुरी मिट्टी बना लिया है और अच्छे बनने के लायक नहीं है। ऐसा नहीं है कि लोगों में कुछ बुरी मिट्टी है और कुछ अच्छी मिट्टी है। हम सभी एक ही लोंदे यानि कि आदम से निकले हैं और बुरे स्वभाव के हैं (3:19; 5:12; 7:18)।

9:22-24 मनुष्य के साथ काम करने का परमेश्वर के पास अच्छा उद्देश्य है। यह सम्पूर्ण विश्व के लिए लाभदायक था, कि लोग यह जानें कि गुनाह के विरोध में परमेश्वर क्रोधी हैं और वह कुछ भी कर सकते हैं। फिरौन और मिस्रियों के विरोध में (पद 17) और इतिहास में दूसरे और लोगों के विरोध में कार्य करने के लिए उन्हों ने फ़ैसला लिया।

यहाँ पौलुस दो तरह के लोगों में अन्तर करता है "सज़ा के बर्तनों" जिनका नाश होगा और "दया के बर्तनों" में जिन्हें इज़्ज़त के लिए ठहराया गया। इसका अर्थ विश्वासी और अविश्वासी से है जिन्हें परमेश्वर ने बनाया है। विश्वासी को मुक्ति के लिए ठहराया और अविश्वासी को नाश होने के लिए। क्योंकि अविश्वासियों के सम्बन्ध में वह नहीं बताता कि किसने ठहराया, यह मुमकिन नही हैं कि किसी और ने ऐसा किया। उन्हों ने स्वयं अपने आप को दण्ड के लिए तैयार किया (तुलना करें 8:17-18)।

- 1:18-32; 2:4-11; नीति. 1:24-33; यहेज. 18:30-32; मत्ती 23:37; 1 तीमु. 2:3-4 के आधार पर कह सकते हैं कि लोगों ने स्वयं अपने आप को नाश के लिए तैयार किया। मत्ती 13:38-39 आदि देखें। परमेश्वर के क्रोध पर 1:18; गिनती 25:3; व्यव. 4:25; भजन 90:7-11 और यूहन्ना 3:36 पर नोट्स देखें।

के पात्रों को, जिन्हें बर्बाद होना था बड़े धीरज से सहा। 23ताकि दया के पात्रों को जिन्हें अपनी महिमा के लिए पहले से तैयार किया, उन पर अपनी महिमा प्रगट करे। 24इन में हम सभी बुलाए हुए लोग हैं, चाहे वे यहूदियों में से हैं चाहे गैर यहूदियों में से। 25जैसा होशै की पुस्तक में लिखा है, "जो मेरे लोग नहीं थे, मैं उन्हें अपने लोग कहूँगा।" 26ऐसा होगा कि जिस स्थान में उन से कहा गया था, तुम मेरे लोग नहीं हो, वहीं उन्हें परमेश्वर पिता की सन्तान कहा जाएगा।

27इस्राएल के बारे में यशायाह पुकारकर कहता है, "चाहे इस्राएल के वंश की संख्या समुद्र की रेत के समान हो, किन्तु मुट्ठी भर लोग ही बचाए जाएँगे, 28इसलिए कि परमेश्वर पृथ्वी पर अपने कार्य को अच्छी तरह से जल्दी ही पूरा करेंगे।" 29एक दूसरे स्थान पर यशायाह कहता है "कि यदि सेनाओं के प्रभु परमेश्वर की कृपा दृष्टि न हुयी होती, तो सभी यहूदी नाश कर दिए जाते, ठीक उसी तरह जिस तरह से सदोम और अमोरा नामक शहरों के लोग बर्बाद हो गए।"

30फिर क्या कहा जाए, यह कि गैर यहूदी परमेश्वर के सामने खरा या निर्दोष ठहराए जाने की चाहत न रखते हुए भी निर्दोष ठहरे, क्योंकि वह आशीष उन्हों ने विश्वास ही से हासिल कर ली? 31लेकिन निर्दोष ठहराए जाने की आशीष को अपने नियमों के पालन करने से चाहता था, लेकिन न पा सका, 32ऐसा क्यों? यह इसलिए क्योंकि उन्हों ने विश्वास के बजाए नियमों के पालन करने से इसे प्राप्त करना चाहा था। वे ठोकर खाने वाले पत्थर के कारण, ठोकर खा गए। 33जैसा लिखा है, "देखो मैंने यहूदियों के बीच सिय्योन में एक ऐसा पत्थर (चट्टान) अर्थात् यीशु रखा है जिसे वे न चाहेंगे, लेकिन जो कोई उन पर विश्वास करता है वह शर्मिन्दा नहीं होगा।"

10 भाइयो-बहनो, इस्राएल के लिए मेरी लालसा और प्रार्थना यह है

9:24 "गैर यहूदियों"- 1:5,16 यह कि परमेश्वर को पूरा अधिकार है कि इस्राएल राष्ट्र में से कुछ लोगों को चुने और बाकी को छोड़ दें और गैर यहूदियों पर दयालु रहे। पद 25-29 में वह दिखाता है कि यह सब बाईबल के अनुसार है और परमेश्वर की कही बात कभी असफल नहीं होती है (पद 6)

9:25 होशे 2:23 "मेरे लोग" वे जो परमेश्वर के लोग या इस्राएली नहीं थे।

9:26 होशे 1:10 ।

9:27-28 यशा. 10:22-23.

9:29 यशा. 1:9 देश इतना भ्रष्ट हो चुका था कि यदि परमेश्वर ने उन में से कुछ को चुना न होता, पूरा देश बर्बाद हो गया होता (उत्पत्ति 19:23-25)।

"सेनाओं के प्रभु"- 1 शमू. 1:3 देखें।

9:30-32 यहूदियों के पास परमेश्वर द्वारा दिए गए निर्देश थे जिन्हें पालन कर के वे परमेश्वर खुश करना चाहते थे। किन्तु अपने प्रयास से भला बनने की कोशिश बेकार हो गयी (3:9,19,20)। गैर यहूदियों के पास ऐसा कुछ नहीं था और उन्हें परमेश्वर द्वारा सिद्ध ठहराए जाने से कुछ लेना देना नहीं था। जब उन्हों ने मसीह के संदेश को सुना, विश्वास किया तब क्षमा और सिद्धता "प्राप्त की"। ऐसा विश्वास द्वारा हुआ 3:22,26,28; 5:1)। दूसरी ओर जिस पत्थर (यीशु) को यरूशलेम में परमेश्वर ने रखा, उन्हें यहूदियों ने तुच्छ ठहराया (यूहन्ना 1:11) मत्ती 21:42; प्रे.काम 4:11; 1 पतर. 2:6-8. ध्यान दें पौलुस यह नहीं कहता कि यहूदी असफल इसलिए हुए क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें असफ़लता के लिए ठहराया किन्तु उनकी अपनी गलती के कारण।

9:33 यशा. 8:14; 28:16 "सिय्योन" यरूशलेम है।

10:1 9:1-3 देखें.

कि वे बच जाएँ। 2मैं उनके विषय कह सकता हूँ कि उनके मन में परमेश्वर पिता के लिए जोश है, किन्तु यह सच्चाई पर नहीं टिका हुआ है। 3क्योंकि वे परमेश्वर द्वारा दी गयी धार्मिकता के बारे में अनजान हैं तथा अपने आप को धर्मी साबित करने की स्वयं कोशिश करते हैं, इसलिए उन्हों ने परमेश्वर से मिली सिद्धता (धार्मिकता) के प्रति समर्पण करने से इन्कार कर दिया है। 4इसलिए कि जो कोई विश्वास करता है उसके लिए मसीह, नियमों-आज्ञाओं का अन्त हैं।

5नियमशास्त्र के हिसाब से जो धार्मिकता है, उसका वर्णन मूसा इस तरह से करता हैः "जो व्यक्ति उन बातों का पालन करता है, वह उनके द्वारा जीवित रहेगा"। 6जो धार्मिकता (निर्दोष ठहराया जाना) विश्वास पर आधारित है इस तरह से बात करती हैः "अपने दिलों में न कहो, कौन स्वर्ग में जाएगा? (मसीह को ऊपर से नीचे लाने के लिए)" या 7"अधोलोक में कौन उतरेगा? (मसीह को जिलाने के लिए)"।

8लेकिन यह (नियमशास्त्र) क्या कहता है? यह कि "वचन तुम्हारे पास है, तुम्हारे मुँह और मन में है, (यही वह वचन है जो हम सुनाते हैं)। 9विश्वास यह, कि यदि

10:2-3 यहूदी नास्तिक या लापरवाह पापी नहीं थे (2:17-20)। पौलुस ने उनके जोश को देखा और उसे दया आयी। वह अपना धार्मिक जोश भी जानता था जो आत्मिक समझ और ज्ञान पर आधारित नहीं था। जोश के कारण ही वह गुमराह हो चुका था (प्रे.काम 8:1-3; 9:1-2; 22:3-4; 26:9-11; फ़िलि. 3:6)। लोग भी धार्मिक जोश से भरे थे, लेकिन क्षमा नहीं मिली थी। जोश यह नहीं देखाता कि लोग परमेश्वर को जानते हैं और उन्हें खुश कर रहे हैं।

दूसरे लोगों के समान यहूदी भी यह नहीं जानते थे, कि परमेश्वर उन लोगों को भेंट के रूप में पूरी माफ़ी देते हैं, जो उन पर विश्वास करते हैं। (3:24; 4:4-5,13)। वे सोचते थे कि इसे कमाया जा सकता है। इसलिए मसीह के द्वारा मिलने वाली निर्दोषता के प्रति उनका समर्पण नहीं था। दूसरों के समान वे कार्य करते थे। कामों से मुक्ति पाना चाहते थे।

10:4 "नियमों-आज्ञाओं"- 3:20,31; 4:15; 5:20; 6:14; 7:4,7,12,14; 8:3-4; गल. 3:19,23-25. मसीह ने मूसा की व्यवस्था या नियमशास्त्र से विश्वासी का नाता तोड़ दिया है।

10:5 लैव्य. 18:5.

10:6-8 व्यव. 30:12-14 क्या मूसा के शब्दों को मसीह के संदेश में लागू करना, पौलुस के लिए उचित था? हाँ था। परमेश्वर के आत्मा ने पौलुस को योग्य किया ताकि वह मूसा के शब्दों का आत्मिक अर्थ समझ सके।

10:7 "अधोलोक"- प्रका. 9:1-2,11; 11:7; 17:8; 20:1,3 यहाँ गहराव का अर्थ है मृतक आत्माओं का स्थान।

10:9-10 यह "वचन" है, जिसे पौलुस ने लोगों को दिया (पद 8)। मसीह स्वर्ग से आ चुके हैं और परमेश्वर मसीह को मरे हुओं में से ला चुके हैं (1:3-4; 4:24-25; 8:32,34)। यदि लोग परमेश्वर से क्षमा का इनाम चाहते हैं तो उन्हें दुष्टता और अपनी कोशिश छोड़कर यीशु पर भरोसा रखना है। मुक्ति पाने के लिए यीशु के दैहिक जी उठने पर भरोसा रखना आवश्यक है। देखें 4:24-25; 1 कुरि. 15:1-8. यह सुसमाचार का आवश्यक अंग है। प्रेरितों के काम में यीशु के जी उठने पर ज़ोर डाला गया है। प्रे.काम 1:3; 2:24 आदि। यदि हम इस बात पर भरोसा नहीं करते तो बेटे के बारे में पिता ने जो कुछ लिखवाया, उस पर हमारा विश्वास नहीं है। यीशु पर विश्वास का अर्थ है उनका मृतकों में से जी उठने को मान लेना।

यीशु सर्वोच्च हैं, यह विश्वास आवश्यक है। यूहन्ना 8:24; प्रे.काम 2:36; 1 कुरि. 8:6; 12:3; इफ़ि. 4:5. यीशु तमाम ईश्वरों में से एक नहीं है। वही सच्चे प्रभु हैं। पौलुस का मतलब है कि यीशु ही मात्र पूरे अधिकार वाले हैं। सभी बातों के अधिकारी और देह में याहवे परमेश्वर हैं। पद 13; लूका 2:11; यूहन्ना 8:24,58; और निर्ग. 3:14-15 के नोट्स)।

यीशु को प्रभु मान लेना कोई बड़ा काम नहीं, जिससे परमेश्वर को दया आने पर वह मुक्ति दे देंगे। विश्वास के साथ कुछ और जोड़ने पर मुक्ति नहीं मिलती है। यह सत्य है कि विश्वास वास्तविक है। मन का विश्वास मुँह से बोलने और अंगीकार करने के लिए बाध्य करता है। मत्ती 10:32-33 देखें। जो लोग मसीह का

तुम अपने मुँह से यीशु प्रभु (स्वामी) को
मान लो और मन में यह विश्वास करो कि
परमेश्वर ने उन्हें मरे हुओं में से जिलाया,
तो तुम मुक्ति पाओगे। 10खरा ठहरने के
लिए हृदय (आत्मा) से भरोसा किया जाता
है और मुक्ति के लिए मुँह से अंगीकार
किया जाता है। 11जैसा कि पहले ही से
बाइबल में कहा जा चुका हैः "जो कोई
उन पर विश्वास करता है वह कभी भी
शर्मिन्दा नहीं होगा"। इसलिए कि यहूदी
और गैर यहूदियों में कोई अन्तर नहीं है,
क्योंकि वही स्वामी उन सभी के ऊपर हैं
जो उनको पुकारते हैं। 12जो कोई प्रभु का
नाम लेगा वह बच जाएगा। 13जिन पर
उन लोगों ने विश्वास नहीं किया, वे उन्हें
क्यों पुकारेंगे?

14जिन्होंने विश्वास नहीं किया, वे यीशु
पर विश्वास कैसे करेंगे तथा बिना किसी
संदेश देने वाले के भेजे जाने से, लोग कैसे
संदेश सुनेंगे? जिनके बारे में उन्हों ने सुना
नहीं उन पर वे कैसे विश्वास करेंगे? संदेश
देने वाले व्यक्ति के बगैर वे सुनेंगे कैसे?

अंगीकार करने में डरते हैं, उनके विश्वास पर हमें शक करना चाहिए। बिना अंगीकार का विश्वास बेकार है।

जो विश्वासी हृदय से कहता है "यीशु प्रभु हैं" "यह दिखाता है कि विश्वासी मसीह को अपना स्वामी बना रहा है और उनकी आज्ञा मानेगा (14:9; मत्ती 7:21; यूहन्ना 3:36; प्रे. काम 5:32; इब्रा. 5:9; 1 यूहन्ना 2:3-4)। प्रे. काम 22:10 के नोट्स देखें। एक विश्वासी ऐसी हिम्मत कैसे कर सकता है, कि यीशु को सभी का स्वामी माने किन्तु स्वयं का स्वामी ग्रहण न करें। वह दूसरों से कुछ करने के लिए कह सकता है, कि वे क्या करें लेकिन खुद न करें" जब लोग मसीह के पास आते हैं, तब उन्हें अपने जीवन का अधिकारी बनने और मसीह के स्वामित्व का इन्कार करने के अपराध को छोड़ देना चाहिए।

रोमियों में क्षमा किए जाने के बारे में पौलुस की शिक्षा का अन्त पद 10 में होता है। परमेश्वर के आत्मा की प्रेरणा से उसने निम्नलिखित बातें दिखाई हैं।

परमेश्वर पूरी तरह से खरे हैं।

लोगों के पास उनका अपना खरापन नहीं है (1:18—3:19) वे उस धार्मिकता (सज़ा-मुक्ति) से (पद 2) जो परमेश्वर से मिलती है, अनजान हैं और अपनी अपना धर्मीपन स्थापित करने की कोशिश करते हैं (पद 3) यह बिल्कुल नहीं हो सकता (3:20,28; 8:3)।

परमेश्वर के सामने धर्मी (माफ़ किया हुआ) ठहरने का अर्थ है, मसीह की निर्दोषता और पवित्रता प्राप्त करना (3:22-26)।

मसीह की धार्मिकता, उन पर विश्वास द्वारा प्राप्त होती है 1:16-17; 4:5; 5:1)।

जिन्हें परमेश्वर धर्मी ठहराते हैं, वे खरा जीवन बिताना आरम्भ करते हैं। (6:17-18; 8:4,13,14)।

10:11 यशा. 28:16; रोमि. 1:16; 5:5 से तुलना करें।

10:11 "अन्तर नहीं"- 3:22-23,29,30 केवल एक ही मालिक (प्रभु, स्वामी) हैं, वह हैं यीशु। यहाँ देखें कि उनका चरित्र कैसा है? जो उनके पास आते हैं, वह उनकी भलाई करते हैं। वह चाहते हैं कि सभी आत्मिक बातों में अमीर हों। तुलना करें 5:21; 2 कुरि. 8:9; 1 तीमु. 1:13-14.

10:13 पौलुस योएल 2:32 की ओर संकेत करता है जहाँ प्रभु शब्द इब्रानी का "याहवे" है। यहाँ पौलुस यीशु मसीह के विषय में कह रहा हैं। (पद 9)। प्रभु को पुकारने का अर्थ है याहवे परमेश्वर को पुकारना। यहाँ भी इशारा है कि देह में यीशु वास्तव में याहवे हैं। (पद 9) है। लूका 2:11 में दूसरे पद देखें। यहाँ उनके नाम को पुकारने का मतलब उन पर विश्वास करना है (पद 14) इस पद में देखें कि दया और उद्धार का निमंत्रण सभी के लिए है। 1:16 में मुक्ति पर नोट्स पढ़ें।

10:14 पौलुस यहाँ अपने संदेश को देना समाप्त करता है जो कि लोगों को मुक्ति देकर दण्ड-मुक्त ठहराता है। यह अच्छा संदेश है। यदि लोग इसे सुनते नहीं और विश्वास नहीं करते तो यह कैसा अच्छा संदेश है? इसलिए वह इसके प्रसार और सुवार्तिक भेजे जाने के पक्ष में हैं। प्रे.काम 1:8; यूहन्ना 20:21; लूका 24:46-47; मरकुस 16:15 और मत्ती 28:18-20 देखें।

15और यदि संदेश देने वाले भेजे न जाएँ
तो वे कैसे संदेश देंगे। जैसा कि लिखा है
"जो लोग शान्ति का समाचार देते हैं और
अच्छी बातों का समाचार लाते हैं, उनके
पैर कितने सुन्दर हैं"।

16लेकिन सभी लोगों ने खुशी की खबर
को स्वीकार नहीं किया। जैसा कि यशायाह
कहता है, "प्रभु हमारे सुसमाचार पर किसने
भरोसा किया है?"

17इसलिए विश्वास सुनने से और सुनना
परमेश्वर के वचन से है। 18परन्तु मैं पूछता
हूँ, कि उन्हों ने क्यों नहीं सुना? हाँ बिल्कुल
सुना हैः क्योंकि लिखा है, "प्रभु की वाणी
पूरी पृथ्वी पर और उनके शब्द विश्व के
अन्त तक पहुँचे हैं।"

19किन्तु मैं कहता हूँ क्या इस्राएल को
यह मालूम नहीं है? पहले मूसा कहता है,
"जो लोग एक देश (जाति) नहीं हैं, उनके
द्वारा मैं तुम्हें ईर्ष्यालु बनाऊँगा, एक मूर्ख
देश द्वारा मैं तुम्हें क्रोधित करूँगा।" परन्तु
यशायाह बहुत साहसी है और कहता है,
20"जो मुझे ढूँढ नहीं रहे थे, उन्हों ने भी
मुझे पा लिया जिन्होंने मेरे बारे में पूछा
तक नहीं, उन पर मैं प्रगट किया गया।"

21किन्तु इस्राएल के बारे में वह कहता
है, काफ़ी समय तक मैं अपने हाथ, हुकुम
(आज्ञा) न मानने वाले और बलवा करने
वाले लोगों के सामने फैलाए इन्तज़ार
करता रहा।

11 इसलिए मैं कहता हूँ क्या परमेश्वर
ने अपने लोगों को छोड़ दिया

10:15 यशा. 52:7 खुशी की खबर दूर-दूर ले जाने के कारण पैर जख्मी और गंदे हो सकते हैं? किन्तु परमेश्वर की निगाह में इस पृथ्वी पर वे सब से खूबसूरत हैं।

10:16-21 यहाँ पौलुस दिखाता है कि इस्राएल द्वारा मसीह को कबूल न करना और परमेश्वर का उन्हें न अपनाना उनका अपराध था। वे किसी और को दोष नहीं दे सकते थे।

10:16 यह उनका बड़ा गुनाह था, जिसकी वजह से वे अस्वीकार किए गए। जब मसीह आए, लोगों ने मसीह को नहीं अपनाया (यूहन्ना 1:11 यह उनकी मजहबी किताब के आधार पर था यशा. 53:1.

10:17 पद 14 विश्वास वचन से आता है।

10:18 इसलिए कि यहूदियों ने अच्छा संदेश नहीं सुना था, क्या वे यों ही बच सकते हैं। उन्हों ने सुना था। भजन 19:4 सृष्टि की गवाही के बारे में है। जिस तरह सृष्टि परमेश्वर की साक्षी देती है, यहूदियों को यह संदेश मसीह की मौत और जी उठने से इस पत्र के लिखे जाने तक मिलता रहा। प्रे.काम 1:8; 2:36; 13:14-16; 17:1-2,10; 18:5; 19:8 देखें।

10:19-21 इसलिए कि उन्हों ने समझा नहीं क्या परमेश्वर यहूदियों के पाप को हल्का फुल्का समझेंगे? बिल्कुल नहीं। पौलुस बाईबल से तीन पद दिखाता है, कि वे गैरयहूदियों से (जिन्होंने विश्वास किया था) अधिक जानते थे।

10:19 व्यव. 32:21 यहाँ "मूर्ख" राष्ट्र (गैर यहूदी) की तुलना यहूदियों से की गयी है, जिन्हें कुछ तो समझ थी।

10:20-21 यशा. 65:1-2 गैरयहूदी तो सच्चे परमेश्वर के लिए भूखे थे ही नहीं। यहूदी थे, फिर भी उन्होंने नहीं पाया। इसका कारण था इस्राएल की ज़िद्दी अनाज्ञाकारिता। यहाँ तस्वीर ऐसे परमेश्वर की है जो अपने हाथ पसारे धीरज और दया के साथ खड़े हैं, ताकि बड़े-बड़े काम उन के लिए करें। मत्ती 23:37; न्यायियों 2:10-19; होशे 11:8. क्या हम विश्वास करें कि ऐसे परमेश्वर उनके पैदा होने से पहले उन्हें नरक में डालने का निश्चय कर सकते हैं? केवल इसलिए कि वह सब कुछ कर सकते हैं?

11:1-10 अध्याय 9,10 और 11 एक इकाई बनाते है। यहाँ विषय एक देश के पतन का है। पौलुस 10 अध्याय में दिखाता है कि उनका गिरना उनकी गलती से था न कि परमेश्वर की। 11 अध्याय में वह दिखाता है कि उनके अविश्वास और मन की कठोरता के बावजूद, उनके लिए परमेश्वर के पास एक योजना है, और वह राष्ट्र को अपने पास लाएँगे।

पूरा अध्याय इस प्रश्न का उत्तर भी है जो 1 ले पद में पूछा गया है। पौलुस कहता है "नहीं"। वह जो यहूदी था इस बात का सबूत था कि

है? बिल्कुल नहीं। मैं भी इस्राएली, अब्राहम के वंश और बेन्जामिन के गोत्र का हूँ। 2जिन लोगों को परमेश्वर पहले से जानते थे, उनको परमेश्वर पिता ने नहीं छोड़ा है। एलिय्याह के बारे में वचन क्या कहता है, क्या तुम्हें मालूम है? इस्राएल के विरोध में वह इस तरह से दोहाई देता है, और कहता है, 3"स्वामी, उन्हों ने आपके नबियों को मार डाला है और आपकी वेदियों को तोड़ डाला है। केवल मैं बचा हूँ और वे मुझे जान से मारना चाहते हैं।"

4परमेश्वर का उत्तर क्या था? "मैंने अपने लिए सात हज़ार लोगों को बचाकर रखा है, जिन्होंने अपने घुटने बाआल देवता के सामने नहीं झुकाए हैं।"

5इसलिए इस समय भी दया के चुनाव के आधार पर कुछ लोग बच रहे हैं। 6यदि कृपा से, तो फिर कर्मों को कोई जगह नहीं। नहीं तो कृपा, कृपा नहीं कहलाती, किन्तु यदि यह कामों के अनुसार है तो फिर यह असीमित दया के कारण नहीं। नहीं तो काम फिर कभी काम न रह जाते।

7फिर क्या? इस्राएल को वह नहीं मिला जिसकी खोज में वे थे। किन्तु चुने हुओं ने इसे हासिल किया, दूसरे सभी लोगों के मन सख्त हो गए।। 8जैसा कि लिखा है, इसलिए परमेश्वर ने उन्हें एक सुस्त आत्मा दी है। ऐसी आँखें दी हैं जिनसे उन्हें दिखता नहीं, ऐसे कान, जिनसे वे आज तक सुन नहीं पाते, 9दाऊद कहता है, "उनकी आशीषें उनके लिए एक फन्दा, जाल और ठोकर खाने का पत्थर उनके किए का परिणाम हों।

10उनकी आँखें इतनी अन्धकारमय हो जाएँ, ताकि देख न सकें, उनकी पीठ लगातार झुकी रहें।

11इसलिए मैं कहता हूँ क्या वे इसलिए लड़खड़ाए, कि गिर जाएँ? बिल्कुल नहीं। बल्कि उनकी नाकामयाबी से उन्हें जलन करवाने के लिए मुक्ति गैरयहूदियों तक

परमेश्वर ने यहूदियों को त्याग नहीं दिया। वह यह भी कह सकता था कि प्रथम प्रेरित और यरूशलेम की मण्डली यहूदियों में से थी। रोमी साम्राज्य में अनेकों चर्चों में यहूदी विश्वासी थे, हालांकि पूरा राष्ट्र बलवई था। कुछ ही ने विश्वास किया और आज्ञा मानी। यह स्थिति एलिय्याह के समय की सी थी (मसीह से 850 वर्ष पहले) 1 राजा 19:14-18 देखें।

11:5 कृपा के आधार पर ही पूरे राष्ट्र में से परमेश्वर ने उन्हें चुना, जिन्होंने यीशु पर विश्वास किया। परमेश्वर के चुनाव का उनकी अच्छाई या योग्यता से कोई लेना देना नहीं था - 3:24.

11:6 देखें 4:5

11:7 9:30-32 देखें। इस्राएल में बहुत से "अन्धे" कर दिए गए थे। पहले तो उन्हों ने परमेश्वर द्वारा मिलने वाले ज्ञान को ठुकरा दिया।

इसलिए परमेश्वर ने दण्ड द्वारा ऐसा किया कि वे उस ज्ञान को पा ही न सकें। यशा. 6:9-10.

11:8 व्यव. 29:4; यशा. 29:10 । तुलना करें यशा. 6:9-10 और मत्ती 13:13-15.

11:9 भजन 69:22-23.

11:11 यहाँ से पद 32 में पौलुस इस्राएल के उस बड़े भाग की बात करता है जो सख्त हुआ, ठोकर खाई और गिर गया 9:32-33)। क्या देश का पतन ऐसा हुआ कि वह फिर से नहीं बनाया जा सकता? क्या वह फिर से खड़ा नहीं होगा? क्या परमेश्वर इस्राएल से इतना निराश हो गए हैं कि मात्र चर्च में और उसके साथ ही कार्य कर रहे हैं? पौलुस का उत्तर स्पष्ट है - परमेश्वर ने इस्राएल को त्याग नहीं दिया है। अभी भी परमेश्वर के पास इस्राएल के लिए योजना है (प्रे.काम 1:6-7 से तुलना करें) वह कहता है कि उनकी असफ़लता में भी परमेश्वर की योजना बनी रही। वे कठोर थे। आज्ञा न मानने वाले भी और परमेश्वर के बेटे का इन्कार किया। यह सभी दुनिया के लाभ के लिए हुआ (प्रे.काम 2:22-24)। उनके बुरे कार्यो से सुसमाचार सब के लिए उपलब्ध हो गया। बाद में जब उन्हों ने अच्छे संदेश का तिरस्कार किया, परमेश्वर दूसरे राष्ट्रों की ओर मुड़ गए (तुलना करें 1:16; प्रे. काम 13:46; मत्ती 21:42-43)

पहुँची है। 12अब यदि उनकी नाकामयाबी
का अर्थ है संसार के लिए भरपूरी, और
नुकसान का अर्थ है गैर यहूदियों के लिए
भरपूरी तो, सोचो, कि अन्त में जब वे
परमेश्वरीय मुक्ति के ईनाम को स्वीकार
कर लेंगे जो कितना अच्छा होगा?

13मैं तुम गैरयहूदियों से कह रहा हूँ, कि
तुम्हीं लोगों को खुशी का संदेश देने मैं भेजा
गया हूँ और मैं इस को एक बड़ी बात भी
समझता हूँ। 14किसी तरह से अपनी जाति
बिरादरी के लोगों में जलन उत्पन्न करा
सकूँ और कुछ की मुक्ति करा, सकूँ मेरी
यही इच्छा है। 15यदि उनके इन्कार किए
जाने का अर्थ है दुनिया के लिए मुक्ति, तो
उनके द्वारा मसीह का स्वीकार किया जाना
मौत का जीवन में बदलना होगा? 16पहले
फल (पेड़े) के रूप में जो पहले चढ़ाया
जाता है, यदि वह पवित्र है तो शेष बचा
हुआ भी पवित्र ठहरा। यदि जड़ पवित्र है
तो डालियाँ भी पवित्र ठहरेंगी।

17यदि कुछ डालियाँ तोड़ दी गयी हैं
और तुम जो कि जंगली जैतून के पेड़ में

11:12 पौलुस का तर्क सही था। उनके गुनाह के कारण सुसमाचार की दौलत सारे विश्व को मिल सकी। इसलिए उनकी भरपूरी और अधिक कीमती होगी। पौलुस यह नहीं कहता कि "यदि" वे भरपूरी प्राप्त करेंगे, इसका अर्थ और अधिक दौलत होगा। वह मात्र उनकी भविष्य की भरपूरी के सत्य को बताता है। उनकी भरपूरी का अर्थ होगा कि वे एक राष्ट्र के रूप में परमेश्वर की ओर मुड़ेंगे और परमेश्वर उनके लिए किए गए वायदों को पूरा करेंगे (यशा. 2:1-5; 11:1-9; यिर्म. 23:5-8; यहेज. 37:21-28; जकर्याह 14:9,16,21)।

"भरपूरी"- के बारे में 2:4; 10:12; 2 कुरि. 8:9; इफ़ि. 1:7,18; 2:7; 3:8,16; फ़िलि. 4:19; कुल. 1:27.

11:13 गल. 2:7

11:14 पद 11; 10:1,19. "लोगों" जिसे हम माँस और लोहू कहते हैं।

11:15 पद 12 पौलुस उस समय के बारे मे कहता है जब परमेश्वर पूरे देश को स्वीकार करेंगे। वह "मृत्यु से जीवन" होगा। कुछ लोग समझते हैं कि यह मरे हुओं में जी उठने की ओर इशारा है (यूहन्ना 5:28-29)। दूसरे सोचते हैं कि इस्राएल के बदलाव से अद्‌भुत आत्मिक जीवन और आशीष सारे विश्व के लिए हैं। देखें 8:20-23; प्रे.काम 3:21; मत्ती 19:28)। शायद इसका अर्थ दोनों ही है।

11:16 "पहले फल"- गिनती 15:17-21 यहाँ पहले फल का अर्थ यहूदियों में से कुछ चुने लोग हैं जिन्होंने मसीह को स्वीकार किया था (पद 5) यह देश के पहले लोग - अब्राहम, इसहाक और याकूब ये। पौलुस कहना चाहता है कि अविश्वास की स्थिति में पड़ा राष्ट्र अभी भी पवित्र है या परमेश्वर के अच्छे उद्देश्य के लिए अलग किया गया है। देखें लैव्य. 20:7-8 के नोट्स।

"जड़"- का अर्थ अब्राहम, इसहाक, याकूब या केवल अब्राहम हो सकता है (4:1)। उन में से निकला राष्ट्र परमेश्वर का अलग किया हुआ राष्ट्र था (व्यव. 7:6; 14:2)। पौलुस कहता है ऐसा अभी भी है (पद 29)।

11:17-24 "जैतून के पेड़"- मसीह का इन्कार करने से पहले का इस्राएल राष्ट्र था। वह अब्राहम, इसहाक और याकूब से निकला था। अविश्वास के कारण राष्ट्र की कुछ शाखाएँ तोड़ दी गयी थीं (17,20)। उनके स्थान पर गैर यहूदी मसीही लोग कलम किए गए थे (पद 17,19; मत्ती 21:43)। गैर यहूदी जंगली जैतून के पेड़ के समान थे (पद 24) उनका अब्राहम, इसहाक और याकूब या जैतून के पेड़ से जो उन में से निकला था, कोई सम्बन्ध नहीं था। अब मसीह द्वारा वे अब्राहम के साथ एक रिश्ते में जोड़े गए हैं - पद 24.

पौलुस गैर यहूदी मसीहियों को चेतावनी देता है (पद 13)। उन्हें गलती करने वाले इस्राएल के कारण घमण्ड नहीं करना चाहिए (पद 18) अहंकारी के बजाए दीन बनना चाहिए (20)। यदि परमेश्वर इस्राएली डालियाँ को तोड़कर गैरयहूदी डाली में जोड़ सकते थे, तो वह गैरयहूदी को तोड़ कर इस्राएल में जोड़ सकते हैं।

क्या इस तोड़े जाने का अर्थ यह है कि मुक्ति पाए हुए लोग भी नरक जा सकते हैं? नहीं। यह पौलुस का विषय नहीं हैं। जैतून का पेड़ मसीह की आत्मिक देह नहीं है। बाईबल में और पृथ्वी पर मसीह के दिनों में जैतून का पेड़ इस्राएल राष्ट्र के विश्वासी और अविश्वासी थे। केवल अविश्वासी तोड़े गए थे। राष्ट्र का अधिकांश

हो, डालियों में कलम किए गए और जैतून पेड़ की जड़ और तेल के भागीदार बन गए हो, 18डालियों के बारे में घमंड मत करना। यदि तुम घमंड करते हो तो यह याद रखना, कि तुम जड़ को नहीं सम्भालते हो, लेकिन जड़ तुम्हें सम्भालती है। 19इसलिए तुम कहोगे, "डालियाँ इसलिए तोड़ी गयीं, ताकि मैं कलम किया जाऊँ।" 20तुम्हारा कहना ठीक है, किन्तु वे अविश्वास के कारण अलग किए गए और तुम विश्वास से स्थिर रहते हो। घमण्ड न करो, लेकिन डरो। 21इसलिए कि यदि परमेश्वर ने स्वाभाविक डालियों को नहीं छोड़ा तो तुम्हें भी नहीं छोड़ेंगे।

22क्योंकि परमेश्वर की कठोरता और सिधाई को देखो, जो लोग नाकामयाब हुए उनके साथ कठोरता, किन्तु तुम्हारे साथ सिधाई यदि तुम उनकी करूणा में बने रहो, नहीं तो तुम भी हटा दिए जाओगे। 23और वे यदि अपने अविश्वास में बने नहीं रहेंगे, तो कलम किए जाएँगे। इसलिए परमेश्वर उन्हें फिर से कलम करने के योग्य हैं। 24क्योंकि यदि तुम जंगली जैतून के पेड़ से काटे गए थे, जो स्वभाव से जंगली थे और अपने स्वभाव के खिलाफ़, एक अच्छे जैतून के पेड़ में कलम किए गए, तो परमेश्वर और कितनी आसानी से ये स्वाभाविक डालियों की कलम उनके अपने जैतून के पेड़ में जोड़ेंगे।

25हे भाइयो-बहनो, मैं इसलिए नहीं चाहता कि तुम इस भेद से अनजान रहो, ताकि तुम अपने दृष्टि में बुद्धिमान न बनो। जब तक गैर यहूदियों की भरपूरी का समय न आए, तब तक इस्राएल का अधूरा अन्धापन है। 26इसलिए इस्राएल बचाया जाएगा, जैसा कि लिखा है, छुड़ाने वाले सिय्योन से बाहर आएँगे और गंदे जीवन (अभक्ति) को याकूब से दूर करेंगे। 27मेरा उन से यह न बदलने वाला वचन है, जब मैं उनके गुनाहों को उन से दूर करूँगा।

28खुशी के संदेश के बारे में तुम्हारे कारण वे दुश्मन हैं, लेकिन परमेश्वर के

भाग आज तक उसी हालत में है। इस युग के लिए परमेश्वर ने उन्हें अलग कर रखा है। और पृथ्वी पर अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए गैरयहूदियों को अपने पेड़ में जोड़ दिया है। जैसा यहूदियों ने किया, गैरयहूदी कलीसियाएँ अविश्वास और ज़िद्दीपन में फँस सकती हैं। पौलुस कहता है कि उन्हें सतर्क रहना चाहिए। यदि वे वही, गलती करेंगी, जो इस्त्राएल ने की तो परमेश्वर उनके साथ सख्ती का व्यवहार करेंगे। (पद 21,22) यदि इस्राएल मसीह में विश्वास में लौटेगा, वे वापस जैतून के पेड़ में जोड़ दिए जाएँगे (पद 24) प्रे.काम 1:6 ने नोट्स देखें।

11:25 पौलुस नहीं चाहता था कि गैर यहूदी विश्वासी अज्ञानी रहें या धोखे में पड़ें। वह जानता था कि वे बन सकते थे, यदि अपने आप को वे कायल कर सकें कि परमेश्वर को इस्राएल से कुछ लेना देना नहीं और अब सब वायदे मसीह के चर्च के लिए हैं। इस्राएल के सम्बन्ध में कुछ साफ़-साफ़ कह देने के द्वारा पौलुस इस बात की सफ़ाई देता है। वह इस शिक्षा को "भेद" कहता है जिसे मनुष्य तब तक नहीं जान सकता जब तक परमेश्वर प्रगट न करे)। जब तक गैरयहूदियों की पूरी संख्या भीतर न आ जाए, इस्राएल को अन्धा किया गया है। पौलुस का अर्थ यह है कि हृदय और मन का यह अन्धापन तब दूर किया जाएगा।

11:26-27 "इस्राएल"- ऐसा लगता है, कि पौलुस का अर्थ यहाँ पूरे इस्राएल से है, जब तक सब गैरयहूदियों की पूरी संख्या आ न जाए।

अपनी बात की पुष्टि करने के लिए पौलुस यशा. 59:20-21; 27:9 "सिय्योन" यरूशलेम की ओर इशारा करता है।

"सिय्योन"- का अर्थ है यरूशलेम। "याकूब" का अर्थ है इस्राएल के लोग। वाचा का अर्थ है, वह सहमति (अटूट सम्बन्ध) जिसे परमेश्वर इस्राएल से बांधेंगे - यिर्म. 31:31-34.

11:28 "दुश्मन"- खुशी की खबर की ख़िलाफ़त करने और गैर यहूदियों को मसीह के पास आने से रोकने के लिए इस्राएलियों ने वह सब किया, जो कर सकते थे। (1 थिस्स. 2:14-16)

चुनाव के बारे में पूर्वजों के वास्ते, उन से
प्रेम किया गया है। 29परमेश्वर के वरदान
और बुलाहट वापस नहीं ले लिए जाते हैं।
30जिस तरह तुम परमेश्वर की आज्ञा नहीं
मानते थे, लेकिन उनकी आज्ञा न मानने
पर अभी कृपा प्राप्त की है, 31यहाँ तक
कि अभी तक ये आज्ञाकारी नहीं रहे हैं,
ताकि तुम पर दिखायी गयी कृपा से वे लोग
भी कृपा प्राप्त कर सकें। 32इसलिए कि
परमेश्वर ने उन सभी को अनाज्ञाकारिता
में सीमित कर दिया है, ताकि वह सभी
पर कृपा कर सकें। 33ओह, सृष्टिकर्ता के
ज्ञान और बुध्दि की गहराई, उनके फ़ैसले
और तरीके रहस्यमय हैं। 34"परमेश्वर के
विचार क्या हैं यह किसने जान लिया है,
कौन उनको सलाह दे सकता है? 35या

"उन से...गया"- इस्राएल के अविश्वास और बुरे व्यवहार के बावजूद, परमेश्वर इस्राएल राष्ट्र से प्रेम करते हैं। (ऐसा अब्राहम इसहाक और याकूब के कारण है)।

11:29 मला. 3:6 हालांकि परमेश्वर ने इस युग में इस्त्राएल को अलग कर दिया, किन्तु उनके विषय में अपने मन को बदला नहीं है। अभी भी वह उन्हें अपना राष्ट्र समझते हैं। उनके कुछ वरदान 9:4-5 में दिखते हैं।

11:30-31 गैर यहूदी विश्वासी किसी समय अविश्वास में और बिना मुक्ति के थे। जैसा कि अविश्वासी यहूदी अभी हैं। किन्तु जिस तरह से परमेश्वर ने गैर यहूदियों पर दया दिखायी, वह अविश्वासी देश पर भी दिखाएँगे।

11:32 गल. 3:23-24 से तुलना करें। परमेश्वर ने गैरयहूदियों को उनके दुष्ट मन पर छोड़ दिया है (1:24-32)। यहूदियों के कठोर होने के कारण परमेश्वर ने उन्हें दण्डित किया है। उन्हों ने अपनी अनाज्ञाकारिता में उनके बेटे को क्रूस पर चढ़ाया (11:7-8)। सभी पाप और अनाज्ञाकारिता में बंधे हुए थे। इस तरह उन्हों ने दिखाया कि उनकी दया यहूदी और गैरयहूदी के लिए थी। इस पद में हम देखते हैं कि इस्राएल के साथ परमश्वर की नीति प्यार, दया और एक उद्देश्य की थी-वह यह कि सब पर कृपा करें। वह ऐसे परमेश्वर नहीं जो मनुष्य को कठोर करने और दण्ड देने में रूचि रखते हैं। दया करने में परमेश्वर को आनन्द आता है (मीका 7:18-19; विलाप. 3:31-33; आदि) हमें इस पद का सही अर्थ लगाना चाहिए। बाईबल यह नहीं सिखाती है कि अन्त में सभी लोग मुक्ति पा जाएँगे। जो लोग मसीह को अस्वीकार करते और बिना क्षमा पाए मर जाते हैं, सदा के लिए नाश हो जाते हैं। 2:5-6; 6:23; यूहन्ना 3:36; प्रका. 21:8)। यहाँ "सभी पर कृपा" का अर्थ हो सकता है, चाहे यहूदी या गैर यहूदी। दया दिखाने के सम्बन्ध में परमेश्वर पक्षपात नहीं करते। गैर यहूदियों और यहूदियों की मुक्ति परमेश्वर की योजना में परस्पर जुड़ी हुयी है।

11:33-36 सुसंदेश के अर्थ को और यहूदी एवं गैर यहूदियों के प्रति व्यवहार को पौलुस यहाँ अन्त करता है। वह जानता है कि उसने सब कुछ का वर्णन नहीं किया है। उसकी समझ के परे कुछ रहस्य हैं। परमेश्वर की बुद्धि की गहराई कोई मनुष्य नहीं समझ सकता। इसलिए वह परमेश्वर की महानता स्वीकार कर के, उनकी महिमा करता है।

11:33 हम परमेश्वर की बातों को जितना सीखते और परमेश्वर के प्रगट किए जाने को समझते हैं, उतना ही अधिक हम जानेंगे कि जिस प्रकार से प्रत्येक बात में, उतना ही बुद्धि में वह असीमित रूप से हमसे ऊपर हैं। हमारे साथ और दूसरों के साथ उनके पेश आने के तरीकों की आलोचना करने के बजाए। (जैसा हम करते है) हमें भरोसा रखना और स्तुति करना सीखना है और परमेश्वर की असीमित बुद्धि के प्रति अपने छोटे से दिमाग को दे देना है। तुलना करें अय्यूब 40:3-5; 42:1-6.

11:34 यशा. 40:13 इस का सन्दर्भ देखें (यशा. 40:12-26)। यह हमें परमेश्वर की महानता की तस्वीर दिखाता है। सृष्टि और संसार के संचालन में परमेश्वर को किसी मनुष्य की सलाह की ज़रूरत नहीं पड़ती है।

11:35 अय्यूब 41:11 परमेश्वर मनुष्य के कर्ज़दार नहीं हैं। मुक्ति या किसी अन्य बात में वह ऋणी नहीं हैं। दया और करूणा के आधार पर वह लोगों के साथ बर्ताव करते हैं। इसलिए कि सभी परमेश्वर की बात नहीं मानते हैं, वह सभी के जीवन की ज़रूरतों को मुहैया न कराते हुए उन्हें नरक में भेज सकते हैं।

पहले किसने उनको दिया है, ताकि देने वाले को वापस किया जाए?" 36इसलिए कि सब कुछ उनके लिए, उनकी शक्ति द्वारा और उन से है उनकी बड़ाई हमेशा तक होती रहे। ऐसा ही हो।

12 इसलिए हे भाइयो-बहनो, परमेश्वर की कृपा याद दिलाकर मैं तुम से बिनती करता हूँ, कि तुम अपनी देह को एक जीवित, पवित्र और परमेश्वर को पसन्द बलिदान करके चढ़ाओ, जो तुम्हारी आत्मिक सेवा है। 2इस दुनिया के समान मत बनो, लेकिन तुम्हारे मन के बदले जाने के कारण खुद बदलते जाओ, ताकि तुम परमेश्वर की सही, अच्छी और अपनाने लायक इच्छा की पुष्टि कर सको। 3उस

11:36 "उनके लिए" - परमेश्वर सृष्टिकर्ता हैं।

"उनके लिए"- इस दुनिया में सब वस्तुएँ उन्हीं के लिए हैं। वे स्वयं के लिए नहीं, परमेश्वर के लिए हैं। उनको सम्मान देना हम पौलुस से सीखें। वही योग्य हैं।

"उनकी शक्ति द्वारा"-परमेश्वर संसार को बनाए रखते और शासन करते हैं।

12:1 इस पत्र के सैद्धान्तिक भाग को पौलुस ने समाप्त किया है। उसने दिखाया कि सभी अपराधी हैं और दण्ड के लायक भी। उसने परमेश्वर की कुछ दया और महानता को दिखाया है। यहाँ से पत्र के अन्त तक वह उस प्रतिदिन की व्यवहारिक बातों को दिखाता है, जिन्हें परमेश्वर के दयालु होने के कारण सबको करना चाहिए। 1-11 में जो कुछ लिखा है, उसे पढ़ने के बाद यदि वैसा न करें, जीवन न बदले, तो क्या फ़ायदा? सब से पहले हमें पूरी तरह से स्वयं को दे देना है। पुराने समय में इस्राएल के पुरोहित पशुओं को वध कर के बलिदान चढ़ाते थे अब यीशु के बलिदान के बाद यीशु के लोग पुरोहित हैं (प्रका. 1:6; 1 पतर. 2:5,9; इब्रा. 13:15-16) अवश्य है कि वे अपनी देह को परमेश्वर की सेवा के लिए दें (6:13,19; 1 कुरि. 6:13,19,20)। मात्र शब्दों को नहीं, किन्तु इस तरह की उपासना प्रभु को चाहिए। इस प्रकार का बलिदान "पवित्र" और स्वीकार योग्य है।

12:2 "दुनिया"- मनुष्यों के बारे में और संसार के बारे में बाईबल बहुत कुछ कहती है।

दुनिया परमेश्वर को नहीं जानती (यूहन्ना 1:10)।

लोग आत्मिक अन्धेरे को पसन्द करते हैं (यूहन्ना 3:19)।

मसीह और उनके मानने वालों से नफ़रत (यूहन्ना 7:7; 15:19)।

इसका "शासक" और "ईश्वर" शैतान है (यूहन्ना 12:31; 2 कुरि.4:4) परमेश्वर के आत्मा को हासिल नहीं कर सकता (यूहन्ना 14:17) इसका ज्ञान बेवकूफ़ी है (1 कुरि. 1:20; 3:19) यह अस्थायी है (1 कुरि. 7:31; 2 कुरि. 4:18) बिना ईश्वर और बिना आशा के हैं (इफ़ि. 2:12) इसके साथ दोस्ती, परमेश्वर से दुश्मनी है (याकूब 4:4) यह भ्रष्ट है (1 पतर. 1:4) यह घमण्ड और अभिलाषा से भरी है (1 यूहन्ना 2:15-17) यह दुष्टता में है (1 यूहन्ना 5:19) आश्चर्य नहीं कि पौलुस लोगों को कहता है कि इसके समान न बनें। दुनिया में ऐसी ताकतें हैं, जो लोगों को ढालती हैं और दुष्टता की प्रेरणा देती हैं।

विश्वासियों को मसीह के समान बनना चाहिए। यह परमेश्वर के आत्मा का भीतरी काम है। यह मन के नए बनते जाने से है (इफ़ि. 4:22-23)। हमारे विचार बहुत मायने रखते हैं। हमारे बर्ताव को वे संचालित करते हैं।

एक बदला हुआ जीवन जीने के लिए हमारे विचार आधीन होना और मन परमेश्वर के सत्य से भरा होना ज़रूरी है (8:5-6; 2 कुरि. 10:5; कुल. 3:16; भजन 1:1-3; फ़िलि. 2:5; 4:8; इब्रा. 8:10)। अपने पूरे मन से हमको परमेश्वर से प्यार करना चाहिए (मत्ती 22:37)। इसे नए किए जाने की जरूरत हमें है। जो लोग अपने आप को परमेश्वर के प्रति समर्पित नहीं करते और बदलाव के लिए परमेश्वर के आत्मा से सहयोग नहीं करते, अपने लिए परमेश्वर की इच्छा नहीं जान पाएँगे। यदि हम उस अच्छी योजना को जानना चाहेंगे, तब हमें वह करना चाहिए, जो वह हमसे कहते हैं।

12:3 2 कुरि. 10:12; गल. 6:3 । यहाँ पौलुस उस बदले हुए जीवन के बारे में लिखता है जो मसीहियों को जीना चाहिए। वह पहले उनके दिमाग (मन), विशेषकर विचारों के बारे में कहता है। यह भी देखें कि परमेश्वर किसी व्यक्ति को दूसरों से अधिक विश्वास दे सकते हैं (1 कुरि. 12:9)।

बड़ी कृपा के कारण जो मुझे मिली, मैं तुम
में से प्रत्येक को चेतावनी देता हूँ किसी
भी व्यक्ति को अपने को दूसरे से बढ़कर
नहीं समझना चाहिये। परमेश्वर ने हर एक
को जिस मात्रा से विश्वास दिया है, उसी
आधार पर अपने को समझना चाहिए।
4जिस तरह हम सब की देह में तमाम
अंग हैं और सभी अंगों का काम एक सा
नहीं होता है, 5उसी तरह से संख्या में हम
हालाँकि बहुत हैं, किंतु मसीह की देह में
एक हैं और हम एक दूसरे के लिए एक
दूसरे के सहभागी (अंग) हैं। 6मिलने
वाली असीम कृपा (अनुग्रह) के कारण
हमें अलग-अलग वरदान प्राप्त हैं। यदि
भविष्यद्वाणी का दान है तो विश्वास के
माप के अनुसार व्यक्ति भविष्यद्वाणी करे।
7यदि सेवा करने का है, तो वह सेवा में
लगा रहे। यदि सिखाने का वरदान है, तो
सिखाने में लगा रहे। 8जो प्रोत्साहन देता है
वह लोगों की हिम्मत बढ़ाए, जो भेंट देता
है, दिल खोलकर दे। जो अगुवाई करता है,
वह गंभीरता से करे। जो करूणा दिखाता
है, खुशी से करे।
9प्यार में दिखावा न हो। बुराई से नफ़रत
करो। अच्छाई को पकड़े रहो। 10भाईचारे
के प्यार से एक दूसरे के लिए समर्पित रहो।
जहाँ आदर की बात है, अपने से अधिक
दूसरों को सम्मान दो। 11अपने जोश में
कम न होते जाओ, परन्तु आत्मा में लगन
से यीशु की सेवा करते जाओ। 12आशा में
खुश रहो, सताव में धीरज रखो, प्रार्थना में
बने रहो। 13पवित्र लोगों की ज़रूरतों को
पूरा करो, तथा आवभगत में आगे रहो।
14जो लोग तुम्हें सताते हैं, उन्हें आशीर्वाद
दो; शाप नहीं लेकिन आशीर्वाद दो। 15जो
लोग खुश हैं उनके साथ खुश हो, जो

12:4-8 एक आत्मिक देह बनाने के लिए परमेश्वर की आत्मा से विश्वासियों को एक किया गया है। देखें यूहन्ना 17:21-23; 1 कुरि. 12:12-13; इफ़ि. 4:15-16; 5:23. इस आत्मिक देह में प्रत्येक विश्वासी दूसरे विश्वासियों का एक हिस्सा है (पद 5) परमेश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति को एक या अधिक वरदान (योग्यताएँ) दिए हैं, ताकि वह देह में दूसरों के लिए उपयोगी हो। दूसरों की भलाई एवं परमेश्वर की प्रशंसा के लिए उसका उपयोग होना चाहिए। 1 कुरि. 12:7-11,27-31; इफ़ि. 4:11-13.

12:6 "भविष्यद्वाणी"- गिनती 11:25; 1 कुरि. 12:10,28.

12:9-21 यहाँ विश्वासियों के बदले हुए जीवन की सुन्दर तस्वीर है। इसका अर्थ है विश्वासी भाईयों के प्रति प्यार दिखाना (पद 9,10,13,15,16) मसीह को (पद 11,12) और शत्रुओं को भी प्यार करना (पद 14,19-21)।

12:9 "दिखावा"- कुछ लाभों के लिए दूसरे से प्रेम करने का ढोंग संभव है। विश्वासियों को ऐसा नहीं करना चाहिए।

"नफ़रत"- यदि हम वैसा प्यार करें, जैसा करना चाहिए, तो हर उस बात से नफ़रत करनी चाहिए, जो परमेश्वर को पसन्द नहीं है। भजन 97:10 जैसा यीशु लोगों से प्रेम करते थे, हमें करना चाहिए, लेकिन उस बुराई से जो उन में (लोगों में) या हम में है, नफ़रत करनी चाहिए।

12:10 यूहन्ना 13:34; 15:12,17.

12:11 1 कुरि. 15:58; तीतुस 2:14 यदि हम वैसा प्रेम करें जैसा करना चाहिए, तो हम सेवा के लिए जोशीले होंगे। हम जो कुछ उनके लिए करते हैं, उस से हमारा प्यार दिखेगा, न कि हमारे बोलने से। तुलना करें यूहन्ना 2:17.

12:12 देखें 5:2-5; लूका 18:1; इफ़ि. 6:18; 1 थिस्स. 5:17.

12:13 प्रेम दिखना चाहिए। कभी-कभी यह कीमती होगा - 1 यूहन्ना 3:16-18; मत्ती 25:34-40.

"ज़रूरतों को पूरा करो"- जो कुछ हमारे पास है उसे दूसरों के साथ बाँटना मात्र दूसरों के दिए हुए को ही बाँटना नहीं। 2 कुरि. 9:15 पर देने के विषय पर नोट्स देखें।

"आवभगत"- आजकल बहुत कम ऐसा करते हैं।

12:14 मत्ती 5:43-48; 1 पतर. 2:21-23.

12:15 1 कुरि. 12:25-27; गल. 6:2 विश्वासियों को ठण्डा और कठोर नहीं होना चाहिए लेकिन दूसरों के सुख-दुःख में भाग लेना चाहिए।

रोते हैं, उनके साथ विलाप करो। 16एक दूसरे के साथ समान विचार रखो। अपने को दूसरों से अधिक अच्छा मत समझो, किन्तु छोटे तबके के लोगों के साथ भी मेल-जोल बनाए रखो। ऐसा मत समझो, कि तुम ही बहुत बुद्धिमान हो।

17किसी के बुरा करने पर उससे बदला मत लो। सब लोगों की निगाह में जो उत्तम है, उसी को महत्व दो। 18जहाँ तक हो सके यदि संभव है, प्रत्येक के साथ शान्ति से रहो। 19प्यारे दोस्तो, बदला मत लेना, लेकिन यह काम परमेश्वर को सौंप दो। क्योंकि प्रभु की कही यह बात लिखी है, "बदला लेना मेरा काम है, मैं चुकता करूँगा।" 20इसलिए "यदि तुम्हारा दुश्मन भूखा है, उसे खाना खिलाओ, यदि वह प्यासा है, उसे पीने के लिए कुछ दो। ऐसा करने से तुम उसके सिर पर जलते कोयलों का ढेर रखोगे।"

21बुराई से मत हारो लेकिन भलाई से बुराई को जीत लो।

13 प्रत्येक व्यक्ति को सरकार के बनाए हुए कानून को मानना चाहिए। इसलिए कि सब प्रकार का अधिकार परमेश्वर की ओर से है, जो भी अधिकारीगण हैं, उन्हें परमेश्वर पिता ही ने नियुक्त किया है। 2इसलिए जो कोई अधिकार का विरोध करता है वह परमेश्वर के द्वारा रखे प्रबन्ध का विरोध करता है। जो लोग ऐसा करते हैं, वे सज़ा पाएँगे। 3क्योंकि अधिकारी लोग अच्छे काम करने वालों को दण्ड नहीं देते हैं, लेकिन बुरा करने वालों को। क्या तुम अधिकारी के डर के बगैर जीवन बिताना चाहते हो? तो जो कुछ भला है, वह करो

12:16 प्रे.काम 4:32; इफ़ि. 4:2-3 । घमण्ड और अपने आप को बढ़ाकर दिखाने से एकता और शान्ति भंग होती है। मसीह में सभी ऊँचे और नीचे स्तर पर कार्य करने वाले एक हैं - प्रे.काम 6:1; 1 कुरि. 12:13; गल. 3:28. जाति या समाज में स्थान के कारण घमण्ड से फूट पड़ती है और परमेश्वर की निगाह में घृणित है।

12:17 पद 21 मत्ती 5:38-41 पृथ्वी पर मसीही यीशु को दिखाते हैं। अच्छे व्यवहार से उन्हें आदर और बुरे व्यवहार से अनादर मिलता है। तुलना 2:24; 1 पतर. 2:9.

12:18 इब्रा. 12:14.

12:19 व्यव. 32:35 लोगों, परिवारों और राष्ट्रों में बदले की भावना काफ़ी समस्या उत्पन्न करती है। यीशु के मानने वालों में इसका कोई स्थान नहीं है। मत्ती 5:44; 2 थिस्स. 1:6-9; भजन 94:1; गिनती 31:1-3; नहूम 1:2,7.

12:20 नीति. 25:21-22; लूका 6:27-28; 1 पतर. 2:21-23. जो हमें पीड़ा देते हैं, उन्हें पीड़ा देने का अर्थ है, बुरे कामों की अनुमति देते हैं, और परमेश्वर की सीधी-सादी योजना के विरोध में जाकर बुरा पथ अपना लेते हैं।

13:1-7 परमेश्वर के राज्य में विश्वासियों को लाया जा चुका है। सब से पहले वे राजाओं के राजा यीशु के प्रति ज़िम्मेदार हैं। किन्तु वे अभी भी दुनिया में हैं और किसी न किसी मनुष्य के राज्य में। ये पद बताते हैं कि उनका व्यवहार सरकारी अधिकारियों के लिए कैसा होना चाहिए।

13:1 इसका अर्थ यह नहीं है कि सभी अधिकारी और शासक अच्छे हैं और परमेश्वर की मानते हैं। (इस पत्र के लिखे जाने के समय रोम का शासक नीरो अपने समय का सब से बुरा राजा था)। सरकार की गलतियों, गुनाहों, असफ़लताओं और भ्रष्टाचार के बजाए वे परमेश्वर की ओर से हैं (भजन 75:2-7; दानि. 4:34-35)। कभी-कभी परमेश्वर ऐसा होने देते हैं कि दुष्ट शासक, लोगों को सज़ा देने के लिए अधिकार हासिल करें। किन्तु सरकार के न होने के बजाए एक बुरी सरकार तो ठीक है। टूट जाना - देश की सब से बुरी स्थिति है, क्योंकि तब बुराई को रोकने का कोई साधन नहीं।

यह मसीहियों की ज़िम्मेदारी है कि सरकार की बात मानें, क्योंकि मह परमेश्वर की इच्छा है (पद 2:5,7)। एक स्थिति को छोड़कर यह नियम हर हालत में लागू होता है। यदि एक देश का कानून या एक अधिकारी की आज्ञा बाईबल के खिलाफ़ है, तब विश्वासियों को चाहिए कि वे उसे न मानें। देखिए प्रे.काम 4:18-20; 5:28-29.

और वह तुम्हें शाबाशी देगा। 4इसलिए
कि वह भलाई करने वालों के लिए
परमेश्वर की ओर से तुम्हारा सेवक है।
यदि तुम बुरा करते हो, तो डरो, क्योंकि
उसको सज़ा देने का अधिकार यों ही नहीं
मिला है। वह परमेश्वर पिता का सेवक
है ताकि बुरा करने वालों को सज़ा दे।
5इसलिए अपने विवेक के कारण तुम्हें
अधिकारियों की बात माननी चाहिए, न
कि सज़ा के डर से।

6इसी कारणवश तुम टैक्स चुकाते हो,
क्योंकि वे परमेश्वर के सेवक के रूप में
निरन्तर अपनी ज़िम्मेदारी पूरी करते हैं।
7इसलिए जिसका जो हक है, उसे दो।
जिसे टैक्स देना है उसे टैक्स दो, जिससे
डरना चाहिए, उससे डरो। जिसकी इज़्ज़त
करनी चाहिए उसकी इज़्ज़त करो।

8आपसी प्यार के अलावा और किसी
बात के कर्ज़दार न हो। जो दूसरों से प्रेम
करता है उसने परमेश्वर के नियमशास्त्र
को पूरा कर लिया है। 9आज्ञाएँ, जैसे तुम
व्यभिचार न करना, हत्या न करना, चुराना
नहीं, झूठी साक्षी मत देना, लालच नहीं
करना और दूसरी अन्य आज्ञाएँ जो हैं, उन
सब का निचोड़ इस में है, "तुम लोगों से
उतना प्रेम करो, जितना अपने आप से करते
हो" 10प्रेम किसी का नुकसान नहीं करता।
इसलिए जिसने प्रेम किया उसने परमेश्वर
पिता के सारे नियमों का पालन किया।

11इसके अलावा तुम जानते हो कि
यह समय कठिनाईयों का समय है और
तुम्हें वास्तविकता को जानना है। हमारी
मुक्ति हमारे विश्वास में आने के समय की
तुलना में अब और अधिक नज़दीक आ
गई है। 12रात बीत गयी है, दिन निकलने
पर है। इसलिए हम अन्धेरे में किए जाने
वाले कामों को छोड़ दें और रोशनी के
हथियार पहन लें। 13आओ हम ऐसा जीवन
जीएँ जैसा दिन के प्रकाश का होता है।
लीला क्रीड़ा, नशा, गलत यौन सम्बंध,
अनियन्त्रित काम वासना, झगड़ा और
ईर्ष्या वाला जीवन नहीं। 14बल्कि यीशु

13:4 "तुम्हारा सेवक"- इसका अर्थ यह नहीं कि शासक जानबूझकर परमेश्वर की सेवा करते है (हालाँकि कुछ ऐसा कर सकते है)। इस पृथ्वी पर शासन करने के लिए वे परमेश्वर के हाथ में मात्र हथियार हैं।

13:6-7 मत्ती 22:21; 1 पतर. 2:17 यदि एक विश्वासी, टैक्स आदि देने में बेईमान है वह परमेश्वर के प्रति अपराध करता है।

13:8 कर्ज़ से बचना चाहिए। लापरवाह लोग इस में फँसते हैं। यह बड़ी पीड़ा और कष्ट ला सकता है। जो लोगों के पास है, उसमें सन्तुष्ट रहना चाहिए (फ़िलि. 4:12; 1 तीमु. 6:6-8; इब्रा. 13:5)। यह भरोसा रखना है कि पिता उनकी ज़रूरतों को पूरा करेंगे (मत्ती 6:33; फ़िलि. 4:19)। जो लोग ऋण अदा कर सकने की स्थिति में होने के बावजूद नहीं देते, वे चोर हैं। जो उनका नहीं है, उसे लेकर वह इस्तेमाल करते हैं। विश्वासी एक बात के कर्ज़दार हैं, जिसे उनको अदा करना चाहिए - एक दूसरे से प्यार करने की ज़िम्मेदारी (12:9-10; यूहन्ना 13:34)।

13:9 निर्ग. 20; लैव्य. 19:18.

13:11-14 आत्मिक रूप में दुनिया एक बुराई से भरी जगह है (यूहन्ना 3:19-20)। विश्वासी ज्योति की सन्तान हैं (मत्ती 5:14; यूहन्ना 12:36; इफ़ि. 5:8)

13:11-12 पौलुस या दूसरा कोई प्रेरित यीशु के दोबारा आने के बारे में नहीं जानते थे। वह उनके आने की प्रतीक्षा में थे और चाहते थे कि विश्वासी भी ऐसा करें। पवित्र आत्मा ने उसका मार्गदर्शन किया कि वह आने वाली सभी पीढ़ियों के लिए उचित भाषा का उपयोग करें। तुलना करें मत्ती 24:36,42,44.

"मुक्ति"- (पद 11) उस उद्धार का पूरा होना, जो विश्वासियों के पास है। तुलना करें 8:23; 1 पतर. 1:9.

13:12 "रोशनी के हथियार"- यह उस सत्य की ओर इशारा है जो दुष्टता और शैतान से सुरक्षा के लिए विश्वासियों के जीवन में लागू किया जाता है। तुलना करें इफ़ि. 6:11-17. इसको पहनने से मतलब है, जैसे मसीह ने मत्ती 4:1-11 में किया।

13:13 1 कुरि. 6:9-11; इफ़ि. 5:3-6; कुल. 3:5-8.

13:14 यीशु मसीह विश्वासियों में हैं (8:9; 2 कुरि. 13:5)।

मसीह को पहन लो और पुराने स्वभाव (शरीर) की अभिलाषाओं को पूरा करने का विचार मत करो।

14 जो विश्वास में नया (शुरूआती विश्वास वाला) है, उसे अपना लो, और मतभेद (शंका) वाले विषयों पर वाद विवाद मत करो। 2एक यह मानता है कि सब कुछ खाया जा सकता है। दूसरा व्यक्ति मात्र साग सब्ज़ी खाता है। 3इसलिए जो सब कुछ खाता है उसे, उस व्यक्ति को नीचा नहीं समझना चाहिए जो सब कुछ नहीं खाता है; उसे दूसरे व्यक्ति की बुराई नहीं करनी चाहिए जो सब कुछ खाता है, क्योंकि परमेश्वर ने उसे भी स्वीकार किया है। 4तुम कौन हो जो परमेश्वर के जन को दोषी ठहराओ? ऐसा व्यक्ति अपने प्रभु के सामने ज़िम्मेदार है। इसलिए कि परमेश्वर पिता उसे स्थिर रखने में सामर्थी हैं।

5एक व्यक्ति सोचता है, कि एक दिन दूसरे से बेहतर है, दूसरा व्यक्ति सोचता है कि हर दिन समान हैं। इस विषय में प्रत्येक व्यक्ति अपने मन में पूरा यकीन रखे। 6जो किसी दिन को खास समझता है, वह यीशु के लिए ऐसा करता है। जो किसी दिन को खास नहीं समझता, वह प्रभु के लिए ऐसा करता है। जो व्यक्ति सब कुछ खाता है वह यीशु के लिए, परमेश्वर को धन्यवाद देकर खाता है। वैसे ही जो व्यक्ति सब कुछ नहीं खाता है वह भी धन्यवाद के साथ ऐसा करता है। 7हम में

"पहन लो"- बाहरी जीवन को दिखाता है। इसका अर्थ है कि जो मसीह भीतर हैं, उनकी समानता में विश्वासियों का जीवन हो। तुलना करें इफ़ि. 4:22-24. अपने जीवन में उसके सत्य को लागू किया जाना चाहिए। विश्वासियों में बुरे स्वभाव के पाए जाने को वह मंजूर करता है। तुलना करें 7:18; 8:13; गल. 5:16-17. बुरे स्वभाव के ऊपर जीत हासिल करने के लिए विचारों का क्या महत्व है, इसे देखें 8:5; 12:2 यहाँ एक सिद्धान्त को सिखाया गया है।

14:1 यहाँ पौलुस सामान्य सिद्धान्त सिखाता है। पद 2-6 में वह ऐसे दो उदाहरण देता है, जिसके बारे में विश्वासी असहमत होते हैं। उसका उद्देश्य यह है, कि उन्हें दिखाए कि कैसे एक दूसरे के मददगार हों न कि आलोचक (मत्ती 7:1-5)। जो लोग मसीह के लिए जीना चाह रहे हैं, उन्हें चाहिए कि दूसरे विश्वासियों को स्वीकार करें (1 कुरि. 5:9-13; 2 थिस्स. 3:6 देखें)।

विश्वासियों को चाहिए कि बुरे व्यवहार को परखें। जो लोग तुलनात्मक रीति से महत्वहीन बातों में दूसरे विचार रखते हैं, उन्हें दोषी न ठहराएँ। ऐसे विषयों पर विश्वासियों से अलग हो जाना बिल्कुल गलत है (12:16; इफ़ि. 4:3)। हालांकि अपने विश्वास की कुछ आधारभूत बातें हैं, जिन्हें बताए जाने के साथ-साथ उन से किनारा करने की ज़रूरत है जो उनको नहीं मानते। किन्तु पौलुस यहाँ इस अध्याय में उन बातों के विषय नहीं कह रहा है।

14:3-4 यहाँ एक खास सिद्धान्त है। विश्वासियों को प्रत्येक से प्यार करना चाहिए। जिन्हें समझ है, यह नहीं सोचना चाहिए कि वे दूसरे से बढ़कर हैं। जिनके व्यक्तिगत सिद्धान्त टूट जाते हैं, उन्हें तोड़ने वालों पर दोष नहीं लगाना चाहिए। सभी मसीह के सेवक हैं। केवल यीशु आरोप लगाने का अधिकार रखते हैं। जिन्हें परमेश्वर ने स्वीकार किया है उन्हें तुच्छ नहीं समझा जाना चाहिए।

14:5-6 कुछ यहूदी - मसीही सोचते थे कि उन्हें सत्य को मानना है, अन्य विशेष दिनों को भी। इन "दिनों" को परमेश्वर ने इस्राएल के लिए नियुक्त किया था। दूसरे विश्वासियों ने समझ लिया कि मसीहियों पर ये लागू नहीं होते। पद 3,4 का सिद्धान्त यहाँ भी लागू होता है।

14:6 "धन्यवाद"- मत्ती 14:19 देखें।

14:7-12 प्रत्येक विश्वासी परमेश्वर का सेवक है और उसे परमेश्वर को जवाब देना है। वह प्रभु का है (पद 7,8 1 कुरि. 6:19-20)। इस पृथ्वी पर जो कुछ ज्ञान उसे मिलता है, उसके अनुसार उसको करना चाहिए और स्वर्ग में उसे जज के सामने खड़ा होना है। (पद 10,12;2 कुरि. 5:10; प्रका. 22:12)। किसी को यह अधिकार नहीं कि विश्वासी के जीवन को वश में करे या दोष लगाए।

से कोई भी अपने लिए न जीवित रहता,
और न ही मरता है। 8इसलिए यदि हम
जीवित हैं, तो यीशु के लिए, यदि मरते हैं,
तो यीशु के लिए। इसलिए चाहे हम जिएँ
या मरें, हम यीशु के हैं

9इसी कारणवश यीशु भी मर गए, जी
उठे और जीवित हैं, ताकि वह मरे और
जीवितों दोनों के स्वामी ठहरें। 10तुम अपने
भाई को क्यों दोषी ठहराते हो, या उसे
नीचा क्यों समझते हो? क्योंकि हम सभी
मसीह के न्याय के सिंहासन के सामने
खड़े होंगे। 11जैसा लिखा है कि, प्रभु का
कहना है, "मैं जीवित हूँ हर एक घुटना मेरे
सामने झुकेगा और प्रत्येक जीभ परमेश्वर
को मान लेगी",

12क्योंकि हम में से हर एक अपना-अपना
हिसाब परमेश्वर को देगा।

13इसलिए आगे से हम किसी दूसरे पर
दोष न लगाएँ। हम ध्यान दें, कि कोई
व्यक्ति अपने भाई के जीवन में ठोकर
का कारण या अड़चन न बने।

14मैं जानता हूँ और यीशु मसीह के द्वारा
निश्चित हूँ, कि कोई भी खाने की चीज
अपने आप में अशुद्ध नहीं है, लेकिन जो
व्यक्ति किसी भोजन वस्तु को अशुद्ध
समझता है, उसके लिए वह अशुद्ध है।
15यदि तुम्हारा भाई तुम्हारे खाने मूर्ति के
सामने चढाया हुआ से दुखित होता है,
तो तुम प्रेम का जीवन नहीं जी रहे हो।
अपने भोजन के कारण उस व्यक्ति को
नाश मत करो, जिसके लिए मसीह मरे
थे। 16तुम्हारी भलाई को बुराई समझ कर
निन्दा न की जाए। 17इसलिए कि परमेश्वर
पिता का राज्य खाना-पीना नहीं, किन्तु
परमेश्वर की निगाह में धर्मी ठहराया जाना,
शान्ति और खुशी है, जो पवित्र आत्मा
में होता है। 18जो इन बातों में मसीह की
सेवा करता है, उसे परमेश्वर स्वीकार
करते हैं और उसे मनुष्यों के द्वारा सही
ठहराया जाता है।

19इसलिए उन बातों को चाहो, जिनसे
भाईचारा पैदा हो और जिनसे हम एक
दूसरे को मज़बूत बना सकें। 20भोजन
से परमेश्वर के काम को बर्बाद न करें।
सब प्रकार की खाने की वस्तुएँ बिल्कुल
शुद्ध हैं, किन्तु जो किसी को दुखित
करके खाता है, उसके लिए वे बुरी हैं।
21अच्छा यह है, कि न मांस खाया जाए
और न शराब पी जाए या ऐसी और कोई
वस्तु जिसके सेवन से तुम्हारे भाई-बहन
को ठोकर लगे, वह नाराज़ हो जाए या
कमज़ोर बने।

14:9 देखें 10:9; प्रे.काम 2:32-36; फ़िलि. 2:8-11.10:9-10,13; मत्ती 22:41-45; लूका 2:11 में "प्रभु" पर नोट्स देखें।

14:11 यशा. 49:18; 45:23.

14:13-21 ये पद एक और विशेष सिद्धान्त देते हैं। हर एक विश्वासी को दूसरों की भलाई के लिए जीना चाहिए न कि अपने को खुश करने के लिए। देखें 15:1-3; 1 कुरि. 10:24,33; 9:19-23; 8:9-12. यह या वह खाना, या कुछ न खाना, साधारण बात है। किन्तु जब इस से किसी को ठोकर लगती है या दुख पहुँचता है, तब यह छोटी सी बात नहीं है। हमें उन बातों को करने की ज़िद्द नहीं करनी चाहिए, जिसका बुरा प्रभाव दूसरों पर पड़ता है। यीशु उन विश्वासियों के लिए भी मरे थे। यदि हमारी किसी आदत से उन के विश्वास को चोट पहुँचती है, क्या हमें उसे त्याग नहीं देना चाहिए।

परमेश्वर के राज्य में यह महत्वपूर्ण नहीं कि क्या खाया - पीया जाए, व्यक्ति क्या चाहता है या सभी विवादस्पद बातों में व्यक्तिगत आज़ादी मिले (पद 1)। मुख्य बात यह है कि परमेश्वर के राज्य की खास बातें जैसे निर्दोषता, मेल या आनन्द (पद 17) जो हम चाहें, वैसा करने से किसी की तरक्की नहीं होगी। 1 कुरि. 8:13 में पौलुस के रवैये को देखें। पालन करने वाले नियम को 1 कुरि. 10:31 में देखें। एक यही समय है जब पौलुस "पिता का राज्य" शब्द इस्तेमाल करता है। मत्ती 4:17 में परमेश्वर के राज्य पर टिप्पणी देखें।

14:15 1 कुरि. 8:11 पर नोट्स।

22तुम्हारा जो विश्वास है उसे अपने
परमेश्वर के सामने बनाए रखो। आशीषित
(धन्य) वह व्यक्ति है, जो अपने आपको
उस बात में दोषी नहीं ठहराता जिसे वह
ठीक समझता है। 23जो व्यक्ति शक
करते हुए खाता है वह दोषी ठहर चुका है,
क्योंकि उसका बर्ताव विश्वास पर नहीं
टिका हुआ है। जो व्यवहार विश्वास से
नहीं है, वह अपराध है।

15 हम जो मज़बूत हैं, हमें कमज़ोर
(संवेदनशील) लोगों को सहारा
देना चाहिए, बजाए इसके कि अपने आप
को खुश करने का अवसर ढूँढते रहें।
2हम में से हर एक जन अपने पड़ोसी की
भलाई सोचे तथा उसकी उन्नति के लिए
कोशिश करे। 3यीशु ने भी अपने आप को
खुश करना नहीं चाहा। जैसा कि लिखा
है, "जो तुम्हारी बेइज़्ज़ती करते हैं, उनकी
बेइज़्ज़ती मुझ पर आ गिरी है।"
4जो बातें पहले लिखी गयी थीं, वे हमारे
सिखाने के लिए थीं ताकि हम धीरज और
वचन से साहस पाकर आशा रखें।
5अब धीरज और प्रोत्साहन के पिता
परमेश्वर, मसीह यीशु के नमूने के समान,
तुम सभी को एक दूसरे के लिए सहानुभूति
दें, 6ताकि तुम सभी एक मन और एक मुँह
से प्रभु यीशु मसीह के पिता को आदर दे
सको। 7इसलिए परमेश्वर के सम्मान के
लिए, जैसा यीशु ने तुम्हें अपनाया है, तुम भी
एक दूसरे को अपना लो। 8अब मैं कहता हूँ
कि यीशु मसीह, परमेश्वर के सत्य के लिए
यहूदियों के लिए सेवक बने, ताकि पूर्वजों
को दी गयी प्रतिज्ञाओं की पुष्टि हो सके,

14:22-23 अपने विवेक को शुद्ध रखना और आत्मग्लानि या अपराध बोध से बचना ज़रूरी है। यदि विवेक की चेतावनी के विरोध में हम कुछ कहते हैं तो अपराध करते और अपने आप को अशुद्ध भी। यदि हमें यह निश्चय नहीं होता है कि जो हम करते हैं वह ठीक नहीं तो वह हमें वह नहीं करना चाहिए। तुलना करें। 1 तीमु. 1:19 विवेक पर नोट्स देखें प्रे.काम 23:1 में।

अध्याय का सारांशः हमें यीशु के लिए जीवित रहना चाहिए और हमारे कामों के बारे में वह क्या कहते हैं, सुनना चाहिए (पद 8,10,12)। इसलिए हमारी कोशिश यह हो कि उन्हें प्रसन्न करें। हमें मसीह में अपने भाई-बहनों के साथ इस पृथ्वी पर रहना है। इसलिए हमारा लक्ष्य यह हो कि उन्हें विश्वास में मज़बूत करें। ऐसा कुछ न करें जिससे उन्हें दुख हो (पद 15,19,21)। हमें अपने दोषी विवेक से भी सतर्क रहना है।

15:1-2 4:1,19-21; 1 कुरि. 12:25; गल. 6:1-2; लूका 9:23 से मिलान करें। यीशु चाहते हैं कि हम अपनी बेजायज़ चाहत को मारें न कि अपने को खुश करने की कोशिश में लगे रहें।

15:3 भजन 69:9; यूहन्ना 8:29 । इसलिए यीशु इस पृथ्वी पर परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करने आए। उन्हें हर तरह की शर्मिंदगी, ठट्ठा और तिरस्कार सहना पड़ा। यदि वह स्वयं को खुश करना चाहते तो इन सब बातों से बच सकते थे। लेकिन जीवन में उनका एक ही उद्देश्य था - वह यह कि चाहे कुछ हो पिता को खुश करें।

15:4 बाईबल में ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जहाँ लोगों ने स्वयं को खुश नहीं किया लेकिन दूसरों के लिए और परमेश्वर के लिए जीवित रहे। हमें उन से सीखना है। बाईबल में सब कुछ हमारे लाभ के लिए है। यदि हम किसी बात को हल्का-फुल्का समझें, तो हम अपने आप को आवश्यक सत्य से अनजान रख रहे हैं। हम उन बातों से भी अनजान रहेंगे, जो हमारी हिम्मत बढ़ाती हैं और दुनिया में सब कुछ सहने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। 2 तीमु. 3:16-17 भी देखें।

15:6 "एक मन"- 12:16; 14:19; इफ़ि. 4:3.

"आदर"- प्रत्येक विश्वासी का यह लक्ष्य होना चाहिए। (1 कुरि. 10:31)।

15:7 देखें 14:1,3.

15:8 "सेवक"- देखें मत्ती 15:24; 20:28; लूका 22:27; फ़िलि. 2:7; यशा. 42:1 बाईबल में यहूदियों की प्रतिज्ञाओं को मसीह ने समाप्त नहीं कर दिया। उन्होने उन सब की पुष्टि की। देखें 9:4-5; 11:26-27. इसका अर्थ है उनके पूरे होने का निश्चित करना अपनी मृत्यु और जी उठने के द्वारा मसीह ने परमेश्वर की सभी प्रतिज्ञाओं के पूरा होने के लिए नींव रखी।

9और यह भी कि गैरयहूदी परमेश्वर की
दया के लिए उन्हीं की प्रशंसा करें। जैसा
कि लिखा है, इस कारणवश गैरयहूदियों
के सामने मैं तुम्हें मान लूँगा ताकि तुम्हारे
नाम के गीत गाऊँ। 10वह फिर कहते हैं, "हे
गैरयहूदियो, परमेश्वर के लोगों (यहूदियों)
के साथ आनन्दित हो। 11फिर से, "सभी
गैरयहूदियो, याहवे की स्तुति करो; सभी
लोग उनकी महिमा करें।" 12पुनः यशायाह
भविष्यद्वक्ता कहता है, "यिशै (दाऊद) का
वंश सदा बना रहेगा। वह गैरयहूदियों के
ऊपर शासन करेंगे, गैरयहूदी उन (यीशु)
पर भरोसा रखेंगे।"

13विश्वास करने के कारण अब आशा
के दाता तुम्हें आनन्द और शान्ति से भर
दें, ताकि तुम पवित्र आत्मा की शक्ति से
आशा में उमड़ते रहो।

14मेरे भाइयो-बहनो, मैं स्वयं तुम्हारे बारे
में बेफिक्र हूँ कि तुम भी भलाई और ज्ञान
से भरे हो और एक दूसरे को सिखाने के
लायक हो। 15फिर भी भाइयो-बहनो कुछ
विषयों पर परमेश्वर पिता की कृपा के
कारण मैंने हिम्मत के साथ यह याद दिलाने
के लिए लिखा है, 16कि मैं गैर यहूदियों
के बीच सु-संदेश देने वाला यीशु मसीह
का सेवक बनूँ, ताकि पवित्र आत्मा द्वारा
शुद्ध किए जाने से गैरयहूदियों का समर्पित
किया जाना ग्रहणयोग्य हो।

17इसलिए परमेश्वर की बातों में खुश
होने के लिए मेरे पास यीशु मसीह में ही
कारण है। 18गैर यहूदियों को आज्ञाकारी
बनाने के लिए मसीह ने जिन बातों को मेरे

15:9 इन सभी समयों में मसीह के साम्हने गैर यहूदी भी थे। पौलुस भजन 18:49 की ओर इशारा करता है। यहाँ गैर यहूदियों के बीच यीशु की स्तुति करने की तस्वीर है।

15:10 व्यव. 32:43 गैरयहूदी, यहूदियों के साथ खुशी से संगति करते थे।

15:11 भजन 117:1

15:12 यशा. 11:10.

15:13 "आशा के दाता"- का अर्थ है, परमेश्वर अपने लोगों में आशा पैदा करते और पूरा करते हैं (5:2-5; 8:23-25)। विश्वासियों के मन में यह पवित्र आत्मा उत्पन्न करता है। सुकून और खुशी परमेश्वर के आत्मा से उत्पन्न होते हैं (गल. 5:22)। वे परमेश्वर के राज्य के स्वभाविक तत्व हैं (14:17)। उनके आज्ञाकारी शिष्यों से ये प्रतिज्ञाएँ की गयी थीं। (यूहन्ना 14:27; 15:11)। परमेश्वर चाहते हैं कि विश्वासी उन से भरे रहें। तभी वे ऐसा बर्ताव करेंगे जैसा उन्हें करना चाहिए। तभी वे पिता की प्रशंसा करते हुए उनके सम्मान के लिए जीवित रहेंगे। ऐसी बातें जो उनके सुकून और आनन्द को नष्ट कर के आशा को ठण्डा करती हैं, उन्हें अस्वीकार करनी चाहिए।

15:14 भलाई करना परमेश्वर की आत्मा का एक और फल है (गल. 5:22)। सभी विश्वासियों के पास सिखाने की योग्यता होनी चाहिए। (इब्रा. 5:11-14; 1 थिस्स. 5:14)

15:15 देखें 1:8. 2 पतर. 1:2; 3:1; यहूदा 5; 2 तीमु. 2:14 से तुलना करें। यह बहुत आसान है कि आत्मिक सत्य को लोग भूल जाएँ। हमें निरन्तर याद दिलाए जाने की ज़रूरत है।

15:16 प्रे.काम 22:21; गल. 2:7; इफ़ि. 3:8 । पौलुस का बड़ा काम था - सर्वश्रेष्ठ संदेश पहुँचाना (1:1)।

"समर्पित किया जाना"- यह पुरोहितों का कार्य था। अन्य विश्वासियों की तुलना में वह पुरोहित था - वह यह नहीं कह रहा है (सभी विश्वासी पुरोहित हैं- 1 पतर. 2:5,9; प्रका. 1:6; 5:10; 20:6; इब्रा. 10:19-22)। गैर यहूदियों के लिए पौलुस ने कोई बलिदान नहीं चढ़ाया था। गैरयहूदी स्वयं अपने आप में "चढ़ावा" - थे। जिन लोगों ने सु-संदेश पर विश्वास किया, वे स्वयं चढ़ावा बन गए थे, क्योंकि पवित्र आत्मा द्वारा धोए गए थे (12:1 देखें)। इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर के लोगों के बीच वे अलग किए गए थे। पवित्र किए जाने पर यूहन्ना 17:17-19 में नोट्स देखें।

15:17-18 पौलुस अपने ऊपर घमण्ड नहीं करता था। उसकी सेवा मसीह के लिए थी और उसी में वह खुश था। उसने कभी ऐसा नहीं सोचा कि अपनी योग्यता से वह कुछ कर पा रहा है। अपने बारे में उसने दूसरी तरह की भाषा का उपयोग किया - 7:18; इफ़ि. 3:8; 1 तीमु. 1:15.

द्वारा नहीं किया है, उन में से किसी बात को कहने के लिए मैं हिम्मत न करूँगा। 19ताकि जो वचन और कार्य की शक्ति अद्‌भुत कामों और चिन्हों में दिखायी दी, मैंने बिना किसी सीमा के मसीह के सुसमाचार को यरूशलेम और उसके बाहर के जिलों में परिश्रम से इल्लुरिकुम तक सुनाया। 20मैंने अपना लक्ष्य यह बनाया है कि जहाँ-जहाँ मसीह का नाम नहीं पहुँचा है, वहाँ सुसमाचार पहुँचाऊँ, ताकि मैं किसी दूसरे व्यक्ति की नींव पर इमारत न बनाऊँ। 21किन्तु ऐसा लिखा है, "जिनके बारे में कहा नहीं गया, वे देखेंगे, जिन्होंने सुना नहीं, वे समझेंगे"।

22इस कारणवश भी मैं तुम्हारे पास नहीं आ सका। 23लेकिन अब इन सभी क्षेत्रों में सुसमाचार पहुँचाए जाने और बहुत वर्षों से मिलने की इच्छा के कारण मैं स्पेन आऊँगा, और मिलूँगा। 24मेरी आशा है कि मैं कुछ दिन तुम्हारे साथ समय बिताऊँ और फिर तुम मुझे आगे पहुँचा दो।

25अभी मैं यरूशलेम के पवित्र लोगों की सेवा के लिए वहाँ जा रहा हूँ। 26क्योंकि मकिदुनिया और अखाया के लोगों को यह अच्छा लगा था, कि वे यरूशलेम के पवित्र लोगों के बीच गरीबों के लिए कुछ इकट्ठा करें। 27सच पूछो, तो यह उन्हें अच्छा लगा और वे यरूशलेम के लोगों के कर्ज़दार भी हैं। क्योंकि यदि गैरयहूदियों को उन से आत्मिक फ़ायदा मिला है, तो उनकी ज़िम्मेदारी यह है कि धन से उनकी मदद करें। 28इसलिए जब मैं यह कार्य पूरा कर लूँगा और उन्हें यह मदद मिल जाएगी तो तुम्हारे पास से होता हुआ स्पेन जाऊँगा। 29मुझे निश्चय है कि जब मैं तुम्हारे पास आऊँ, तो मसीह के सुसमाचार की आशीष की भरपूरी में आऊँ।

15:19 प्रे.काम 14:8-9; 16:18,25,26; 19:11-12; 2 कुरि. 12:11-12 । यरूशलेम से इल्लेक्रियम (यूनान और मकिदुनिया का उत्तरी पश्चिमी भाग) एक बड़ा क्षेत्र था इस में सीरिया, मध्य एवं पश्चिमी तुर्किस्तान, यूनान और मकिदुनिया आते हैं।

15:20-21 इसी सिद्धान्त ने पौलुस की सेवा में मार्गदर्शन किया। यह भाग यशा. 52:15 से है। सामान्यतः पौलुस यात्रा कर के अपनी पीढ़ी तक संदेश पहुँचाना चाहता था। वह हम सब के लिए एक आदर्श है। तुलना करें मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15; लूका 24:46-47; प्रे.काम 1:8.

15:22-23 1:10-13 देखें। नए क्षेत्र में जाने से पहले वह वहाँ का कार्य पूरा करना चाहता था।

15:24 इटली के पश्चिम में समुद्र के पार स्पेन देश है। यहाँ और पद 28 में ये दो स्थान हैं, जहाँ स्थानों का नाम लिया गया है। पौलुस इस समय लगभग 60 वर्ष का था। ऐसे में भी वह नये अवसरों की तलाश में था। यहाँ वह जिस सहायता की बात करता है वह आर्थिक नहीं थी। अपने काम के लिए और अपने लिए धन माँगना उसका तरीका नहीं था। वह एक या अधिक भाइयों को कुछ दूर तक पहुँचाने के तरीके की बात कर रहा था। देखिए प्रे. काम 15:3; 20:38; 21:5; 1 कुरि. 16:6,11; 2 कुरि. 1:16.

15:25-27 2 कुरि. 8:1-5 यह सिद्धान्त अभी भी लागू है। यह उन सभी का कर्तव्य है कि जो आत्मिक लाभ उठाते हैं, वे सिखाने वालों की आर्थिक मदद करें। देखे 1 कुरि. 9:7-14.

15:27 "फ़ायदा"- यह आर्थिक सहारे की ओर इशारा है। न ही बाईबल न इतिहास यह बताता है कि पौलुस कभी स्पेन गया।

15:29 पौलुस वहाँ रोमी सरकार के कैदी के रूप में रोम नहीं आया। (प्रे.काम 28:16)। यहाँ उसका विश्वास पूरा हुआ। मसीह की भरपूरी की आशीषों का अर्थ उसके लिए यह नहीं था कि आराम, विलासिता वस्तुओं की अधिकता या भरा हुआ बटुआ सदैव हो। इसका अर्थ वह शान्ति और खुशी और वह ताकत थी, जिसके साथ वह प्रभु का संदेश पहुँचाया करता था। उसे बाहरी परिस्थितियों की परवाह नहीं थी। देखें फ़िलि. 4:11-13; 2 कुरि. 12:9-10. वह हम सब के लिए नमूना है।

30मैं यीशु मसीह के नाम से और पवित्र
आत्मा के प्रेम के कारण तुम से बिनती
करता हूँ, कि परमेश्वर से मेरे लिए प्रार्थना
करने में लगे रहो, 31ताकि मैं यहूदिया नगर
में अविश्वासियों के हाथों से छुड़ाया जाऊँ
और यरूशलेम के लिए मेरी सेवा पवित्र
लोग स्वीकार कर सकें। 32परमेश्वर की
इच्छा द्वारा मैं बड़ी खुशी के साथ तुम्हारे
पास आ सकूँ, और तुम भी उत्साहित हो
जाओ।

33अब शान्ति के पिता तुम सब के साथ
रहें। ऐसा ही हो।

16 किंख्रिया की मण्डली में फ़ीबे
नामक एक बहन है जो तारीफ़
के योग्य है। 2जैसा कि पवित्र लोगों को
करना चाहिए, इस बहन को अपनाओ और
उसकी जो भी ज़रूरत हो, उसे सहयोग दो।
इसलिए कि वह मेरे और दूसरों के लिए
मददगार ठहरी है।

3मेरे मददगार प्रिसिल्ला और अक्विला
को सलाम कहो। 4और मेरी खातिर उन्हों
ने अपनी जान जोखिम में डाली। केवल मैं
उन्हीं के प्रति नहीं, लेकिन सभी गैर यहूदी
कलीसियाओं का आभारी हूँ।

5इसी तरह जो चर्च उनके घर में आराधना
करता है, उसे मेरा आशीर्वाद। मेरे प्रिय
इपैनितुस को सलाम जो एशिया में मसीह
के पास आने वालों में पहला है।

6मरियम जिसने हमारे लिए बहुत परिश्रम
किया उसे सलाम

7अन्द्रुनीकुस और यूनियास जो मेरे

15:30 उसके लिए विश्वासियों की प्रार्थना की ज़रूरत को वह जानता था- 2 कुरि. 1:11; इफ़ि. 6:19-20; फ़िलि. 1:19; 1 थिस्स. 5:25; 2 थिस्स. 3:1; फिले. 22. "पवित्र आत्मा के प्रेम" का अर्थ शायद पवित्र आत्मा का वह प्यार है जो विश्वासियों के लिए है। यह उसके व्यक्तित्व की ओर इशारा है (यूहन्ना 14:16-17 के नोट्स देखें)।

"प्रार्थना करने"- 1 कुरि. 9:25-26; इफ़ि. 6:12; कुल. 1:29. प्रत्येक वह जन जो मसीह की सेवा करने के साथ शुद्ध जीवन बिताना चाहेगा, संघर्ष का सामना करेगा।

15:31-32 प्रे.काम 21:27 प्रेरित के अन्त तक हम देखते हैं कि वह यहूदियों में अविश्वासियों से कैसे छुड़ाया गया और खुशी के साथ रोम पहुँचा। क्या यहाँ रोम के इन विश्वासियों की प्रार्थना का कुछ महत्व था? याकूब 5:16 से तुलना करे।

15:33 "शान्ति के पिता"- 16:20; फ़िलि. 4:9; 1 थिस्स. 5:23; इब्रा. 13:20. रोमि. 15:13 से मिलाएँ परमेश्वर शान्ति के कर्ता और देने वाले हैं।

16:1-16बाईबल का प्रत्येक भाग परमेश्वर की आत्मा द्वारा दिया गया है। हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। इन पदों में हम पौलुस का प्रेम और फ़िक्र (यीशु का प्रेम भी) जो रोम के मसीहियों के लिए था, देखते हैं। जिन बातों को यीशु और उसने उन लोगों में देखा, उनकी सराहना की। यह हमारे जीवन और हमारी सेवा के लिए एक नमूना है। हम यह भी याद रख सकते हैं कि हमारे बारे में एक बड़ा और पूरा ब्यौरा स्वर्ग में है (इब्रा. 12:23; मला. 3:16; प्रका. 20:12; दानि. 7:10; लूका 10:20; फ़िलि. 4:3)।

16:1 "बहन"- यह आत्मिक सम्बन्ध की ओर संकेत है न कि शारीरिक रिश्ते की तरफ़।

16:2 "मददगार"- कलीसिया में फ़ीबे की कुछ ज़िम्मेदारी थी। कुरिन्थ से सात मील दूर किंख्रिया एक बन्दरगाह था। यह संभव है कि वह पौलुस के पत्र को लेकर रोम गयी थी।

16:3 प्रे.काम 18:2,18,26; 1 कुरि. 16:19; 2 तीमु. 4:19.

16:4 5:7; 1 यूहन्ना 3:16 देखें। उन्हों ने केवल वचन सिखाया ही नहीं, उसे कर भी दिखाया। उन दिनों प्रायः संगति और शिक्षा घरों में हुआ करती थी।

16:6 जैसा आज है, उन दिनों मरियम एक आम नाम था। इस मरियम के बारे में हम कुछ नहीं जानते हैं।

16:7 पौलुस अनेक बार जेल में डाला गया था (2 कुरि. 11:23)। यह नहीं मालूम वह किस समय की बात कर रहा है।

रिश्तेदार और संगी कैदी हैं, जो प्रेरितों में जाने माने हैं, और मुझ से पहले मसीह में थे, उन्हें शान्ति मिले।

8 अम्पलियातुस जो यीशु में मेरा प्यारा है उसे सलाम

9 सहायक उरबानुस और इस्तखुस जो मसीह में मेरे प्रिय हैं मेरा सलाम

10 मसीह में प्रिय अपिल्लेस और अरिस्तबुलुस के कुटुम्ब को सलाम।

11 मेरे रिश्तेदार हेरोदियन को सलाम। नरकिस्सुस का कुटुम्ब जो यीशु में है उन्हें सलाम।

12 त्रूफ़ैना, त्रिफ़ोसा जो यीशु के लिए मेहनत करते हैं उन्हें सलाम। परसिस जिसने यीशु के लिए कठोर मेहनत की है उसे सलाम कहना। मसीह में चुने हुए,

13 रूफ़ुस और मरियम और मेरी और उसकी माँ को सलाम।

14 असुंक्रितुस, फ़िलगौन, हिरमेस, पत्रुबास, हिर्मास और जो भाई उनके साथ हैं, उन्हें आशीर्वाद

15 फ़िलुलुगुस, जूलिया, नेर्युस और उसकी बहन, उलुम्पास और जो पवित्र लोग उनके साथ हैं, उन्हें सलाम

16 आदर के साथ एक दूसरे को अपना प्यार दिखाओ। यीशु मसीह के सभी चर्च तुम्हें आशीर्वाद देते हैं।

17 हे भाइयो-बहनो, मैं तुम से बिनती करता हूँ कि जो लोग तुम्हारे बीच दी गयी शिक्षा के विपरीत फूट और सेवा में रूकावट डालते हैं, उन्हें पहचानो और उन से दूर रहो। 18 इसलिए कि ऐसे लोग हमारे मसीह यीशु की सेवा नहीं करते हैं, लेकिन अपने पेट की। वे अपनी चापलूसी और मीठी बातों से सीधे लोगों को धोखा देते हैं। 19 क्योंकि तुम्हारे आज्ञा मानने के

"प्रेरित"- इसका अर्थ एक सेवा के लिए भेजा जाने वाला व्यक्ति। परमेश्वर के ये दो सेवक मुख्य बारह प्रेरितों में से नहीं थे, किन्तु मुख्य प्रेरित थे।

16:10 "प्रिय"- यह किसी भी विश्वासी या सेवक के लिए चाहने योग्य शब्द हैं। तुलना करें 1 कुरि. 9:27; 2 तीमु. 2:15.

16:12 कुछ विश्वासियों ने परिश्रम किया और कुछ ने बहुत किया (पद 6)। जैसी स्थिति थी, उसका बखान पौलुस ने किया परमेश्वर के सामने खड़े होने के समय भी यह सही होगा। जो हमारे में सत्य नहीं, वह उसके विषय कुछ नहीं कहेंगे और जो नहीं किया, उसका बदला भी नहीं देंगे। 2:6; 1 कुरि. 3:12-15. लूका 19:12-26 देखे।

16:13 "माँ"- मरकुस 10:29-30.

16:16 उन दिनों आदर देने और अभिवादन करने का तरीका गाल पर चुम्बन देना था (लूका 7:45)।

16:17 अपने अनेक पत्रों में पौलुस ने विश्वासियों को झूठे शिक्षकों के सम्बन्ध में चेतावनी दी थी (2 कुरि. 11:13-15; गल. 1:6-8; कुल. 2:8,18; 1 तीमु. 4:1-3; 2 तीमु. 3:1-8; 4:2-4)। देखें मत्ती 7:15-16; 24:4-5,24; प्रे.काम 20:29-31; 2 पतर. 2:1-2; 1 यूहन्ना 2:18-19; यहूदा 4. लोगों को बचाने और मजबूत करने का तरीका है परमेश्वर का सत्य। शैतान झूठे शिक्षकों के द्वारा गलत सिद्धान्तों को मण्डलियों में लाता है। झूठे शिक्षकों को हम उनकी शिक्षाओं के परिणाम से पहचान सकते हैं (मत्ती 7:20)। एक परिणाम है, "फूट"। दूसरा यह कि सत्य को अपनाने के रास्ते में रूकावट उत्पन्न होना। ये रूकावटें परमेश्वर के प्रगट किए गए सत्य के विरोध में होती हैं। जब कोई व्यक्ति चर्च में झूठी शिक्षा लाना चाहता है, तब विश्वासियों को एक काम करना हैं वह है "उन से दूर रहना"। उसे स्वीकार नहीं करना चाहिए। सहभागिता नहीं रखनी चाहिए और सिखाने की अनुमति नहीं देनी चाहिए।

16:18 यदि वे परमेश्वर की सही शिक्षा के विरोध में सिखा रहे हैं, तो यह सच है कि वे मसीह के सच्चे सेवक नहीं हो सकते हैं वे अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए कर रहे हैं (वे शैतान की ओर से हैं -2 कुरि. 11:14-15; फ़िलि. 3:18-19; यहूदा 13,14)। वे भीतर से दुष्टात्मा के समान हैं बाहर से मीठी-मीठी बातें करते हैं।

16:19 1:8; 6:17; 15:14 देखिए.

बारे में सभी जानते हैं। इसलिए मैं तुम्हारे विषय में खुश हूँ किन्तु मैं चाहता हूँ कि तुम भलाई के बारे में बुद्धिमान बनो और बुराई के विषय में भोले बनो।

20 और शान्ति के कर्ता परमेश्वर बहुत जल्दी ही शैतान को तुम्हारे पैरों तले कुचलवा देंगे। हमारे स्वामी यीशु मसीह की असीम कृपा तुम्हारे ऊपर होती रहे। ऐसा ही हो।

21 मेरा सहकर्मी तिमोथी और रिश्तेदार लूकियस, जेसन और सोसिपेटर तुम्हारी कुशलता की कामना करते हैं।

22 मैं टर्टियस जिसने यह पत्र लिखा है, तुम्हें सलाम कहता हूँ।

23 मेरी और पूरे चर्च की पहुनाई करने वाला गयुस तुम्हें सलाम कहते हैं। शहर का प्रबन्धक इरास्तुस और भाई क्वारतुस सलाम कह रहे हैं।

24 हमारे स्वामी मसीह यीशु की असीमित कृपा तुम्हारे साथ हो।

25 मेरे खुशी के संदेश के अनुसार मसीह का संदेश जो तुम्हें स्थिर कर सकता है, उस भेद के खुलने के द्वारा जो युगों से छुपा हुआ था, 26 परन्तु अब हमेशा-हमेशा के परमेश्वर के आदेश से भविष्यद्वक्ताओं के लेख द्वारा विश्वास की आज्ञाकारिता के लिए पूरी तरह सामने आया है। 27 केवल सर्वशक्तिमान परमेश्वर जो बुद्धिमान हैं, यीशु मसीह के द्वारा सदा काल तक सारी बड़ाई और सारा आदर पाएँ। ऐसा ही हो।

16:20 "शान्ति के कर्ता परमेश्वर"- 15:33; 1 इति. 21:1; मत्ती 4:1-10; यूहन्ना 8:44; यहाँ शैतान के बारे में इसलिए आया है क्योंकि वह उनको प्रेरणा देने वाला है। पद 17,18

16:22 जो कुछ पौलुस कहता गया, तिरतियुस लिखता गया।

16:23 "गयुस"- 1 कुरि. 1:14.

16:25 "मेरे खुशी के सन्देश का अर्थ यह नहीं कि पौलुस ने उसे आरम्भ किया। इसका अर्थ उस सुसमाचार से है, जो उसने दिया और सिखाया और जो इस पत्र का बड़ा विषय है।" "छिपा हुआ" - यह परमेश्वर का वह सत्य है, जिसे वह उन लोगों पर प्रगट करते हैं, जो उसे जानना चाहते हैं। किसी और माध्यम से वे उसे नहीं जान सकते। यीशु मसीह से पहले सुसमाचार की सच्चाई के विभिन्न दायरे पूरी तरह से बताए नहीं गए थे (इफ़ि. 3:5)।

16:26 "भविष्यद्वक्ताओं के लेख"- शायद इसका अर्थ उन पुस्तकों से है जो प्रेरितों ने लिखीं थीं। वे ओल्ड टेस्टामैन्ट के नबियों के समान थे किन्तु प्रेरितों के पास अधिक सत्य था। तुलना कीजिए 1 कुरि. 2:6-13. या पौलुस का संकेत ओल्ड टेस्टामैन्ट की पुस्तकों की ओर था। (जिनमें भविष्यद्वाणियाँ और सुसमाचार के बारे में था) जिन्हें प्रेरितों ने स्पष्ट कर दिया था। तुलना करें 3:21; लूका 24:25-27,45-47; 1 पतर. 1:10-12. दोनों ही में परमेश्वर का उद्देश्य एक ही था। वह यह चाहते हैं कि सभी राष्ट्र विश्वास करें और आज्ञा मानें - 1:5; 11:32; 15:9-12.

16:27 एक सच्चे परमेश्वर ही पूरी तरह बुद्धिमान हैं। क्या जाना जा सकता है, वह जानते हैं। यह भी कि मनुष्य को क्या बताया जाए, क्या नहीं। वही सम्मान के योग्य हैं। (11:33-36; प्रका. 4:1; यशा. 48:11)। मसीह के द्वारा सारा आदर उन्हें ही मिलना चाहिए - 1 पतर. 4:11; यहूदा 25.